संदीप कुमार शर्मा

रेखांकित भारतीय इतिहा

सिविल सेवा एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी

रेखांकित भारतीय इतिहास

संदीप कुमार शर्मा

बी.ए.ऑनर्स(इतिहास),

एम.ए. इतिहास(प्राचीन भारत), पीएच.डी.

प्रवीण प्रकाशन

नई दिल्ली 110 030

मेरी पूज्य
माताश्री श्रीमती प्रेमलता शर्मा
एवं
पिताश्री श्री विष्णुदत्त शर्मा
जिन्होंने
मुझे रचा
और
मेरे श्रद्धेय गुरुवर
डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा
जिन्होंने
प्रकाशनार्थ गढ़ा
उन्हें
सादर समर्पित
उनके श्री चरणों में
सादर अर्पित

अध्याय

धर्म और समाज	...	15
साहित्य	..	82
संस्थापक	...	99
उत्खनन	...	106
वंशावली एवं इतिहास	..	116
युद्ध	...	141
नगर	..	148
परिभाषाएं	...	179
शब्दावली	...	185
सुरक्षा संबंधी शब्दावली	...	192

परिशिष्ट

सदर्भ	— संस्कृत	.	192
सदर्भ	— हिन्दी	...	210
सदर्भ	— अंग्रेजी	...	212

आमुख

शब्द ब्रह्म है और ब्रह्म द्वारा सृष्टि है। सृष्टि का निरन्तर विकास जड़ से चेतन की ओर है। अपने जन्म के प्रथम दिन से ही प्रलय के दिन तक मानव ब्रह्म को जानने और उसका साक्षात्कार करने में निरन्तर लगा रहता है। उसका यह सतत प्रयास धर्म, दर्शन, साहित्य, इतिहास और विज्ञान को जन्म देता है। प्रगति के चरण जितना आगे बढते हैं उतना ही उसका विगत उससे दूर हो जाता है। अपने इस परिश्रमयुक्त कल, आविष्कार और अनुसंधान को कोष रूप में सुरक्षित रखने के लिए मानव ने शब्द की रचना की, भाषा बनाई, लिपि का आविष्कार किया और उन सब को लिपिबद्ध कर दिया। भारत का यह ज्ञान-कोष देवभाषा संस्कृत में उपलब्ध है, जो प्रारंभ में ब्राह्मी लिपि मे था और अब देवनागरी लिपि में है।

हमारा देश धर्म-प्रधान रहा है और है। साहित्य हो या दर्शन, विज्ञान हो या इतिहास, नीति हो या विधि सभी पर धर्म का प्रभाव परिलक्षित होता है। हमने कभी इतिहास को अलग से लिखने की आवश्यकता न समझी और न परम्परा डाली। हेरीडोटस ने यूनान का और लेविस ने रोम का इतिहास जिस प्रकार लिखा उस तरह से भारत का इतिहास नहीं लिखा गया। परिणामत: यह कहा जाने लगा कि प्राचीन भारत का कोई इतिहास नहीं है। इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता है परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हमारा कोई प्राचीन इतिहास नहीं है। वेद, उपनिषद, पुराण, धार्मिक एव लौकिक साहित्य के विशाल भण्डार को विवेक से खोजने पर इतिहास की बहुमूल्य सामग्री उपलब्ध हो सकती है। पहले हमें इसकी आवश्यकता भी नहीं थी। परन्तु मुस्लिम आक्रान्ताओ ने जब भारत पर अपना अधिकार कर लिया, विश्वविद्यालयों को फूंक डाला, पुस्तकालय नष्ट हो गए, मंदिरों और महत्त्वपूर्ण स्थानों से अभिलेख समाप्त हो गए तो लगा, हमारा इतिहास मिट रहा है। यह सत्य है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति और इतिहास पूर्णतया नष्ट तो नहीं हुआ परन्तु वह लुप्त अवश्य हो गया और उसे खोजना सरल नहीं रहा। धीरे-धीरे उनकी ओर से ध्यान हट गया। समय के साथ लिपि में परिवर्तन हुआ। प्राचीन लिपि का पढ़ना भी लोग भूल गए। फिरोज़ तुगलक और अकबर के प्रयास करने पर भी टोपरी से दिल्ली लाए गये अशोक स्तंभ पर लिखे अभिलेख पढ़े नहीं जा सके।

मुस्लिम और मुगलों की तरह अंग्रेज भी विदेशी थे, परन्तु उनमे भारतीय इतिहास तथा संस्कृति को जानने की जिज्ञासा थी अत: उन्होंने अंग्रेजी के साथ संस्कृत का भी

अध्ययन किया। विलियम जोन्स ने शकुन्तला नाटक का अध्ययन किया, अंग्रेजी मे अनुवाद किया और विश्व को बताया कि संस्कृत साहित्य उच्चकोटि का है। अत. प्राचीन भारत के इतिहास और संस्कृति को लिखने के लिए वे आगे आए।

1784 ई. मे सर विलियम जोन्स ने इतिहास, शिल्प और साहित्य की खोज के लिए 'एशियाटिक सोसाइटी बंगाल' नाम की संस्था बनाई। 1823 ई. में उसी उद्देश्य से लंदन में 'रायल-एशियाटिक सोसाइटी' स्थापित की गई। 1861 ई. में 'कनिंघम' के प्रयास से लार्ड केनिंग ने आरकिलोजिकल सर्वे' (पुरातत्व सर्वेक्षण) नामक विभाग बनाया। इस विभाग द्वारा प्राचीन भारत के इतिहास को जानने की सामग्री तैयार की गई। अशोक, गुप्त काल और अन्य राजाओं के अभिलेख पढे गए और छापे। 1888 ई मे 'सर्वे ऑफ इण्डिया' ने 'एपिग्राफिआ इण्डिया' त्रैमासिक पत्रिका निकालना प्रारम्भ किया। लार्ड कर्जन ने इस विभाग में 'डाइरेक्टर जनरल ऑफ ऑर्किओलाजी' के पद का सृजन किया एवं प्राचीन भारतीय इतिहास को खोजने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। अंग्रेजो की देखा-देखी भारतीय राजाओं ने भी अपने-अपने राज्यों में इस प्रकार के संस्थान खोले।

इस प्रकार सभी के प्रयास से प्राचीन भारतीय इतिहास की बहुत-सी सामग्री उपलब्ध हुई जिससे छठी शताब्दी से लेकर पृथ्वीराज चौहान तक के इतिहास की जानकारी मिल सकी। ब्राह्मी लिपि से निकली अनेक लिपियों तथा दक्षिण भारत की लिपियों को पढ़ा जा सका।

अंग्रेजों और उनके बाद भारतीय विद्वानों का यह कार्य महत्त्वपूर्ण होने के साथ-साथ प्रशंसनीय भी है। परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि प्राचीन भारतीय इतिहास को लिखने का कार्य पूर्ण हो चुका है। अभी शोध तथा अनुसंधान का बहुत कार्य शेष है। प्रथम, इसलिए कि बहुत-कुछ अभी मिल सकता है जो इतिहास को बदल दे, और द्वितीय, इसलिए कि विदेशियों द्वारा लिखित इतिहास में भारत की प्रतिष्ठा को दर्शाते समय पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाया गया है, अत: इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता है।

1937 ई. में भारतीय इतिहास परिषद की स्थापना का मुख्य उद्देश्य यही था कि भारत के इतिहास को 20 जिल्दों में लिखा जाए। योजना को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने प्रस्तावित किया था तथा सर जदुनाथ सरकार को इसका प्रधान सम्पादक बनाया गया था। इस दिशा में कुछ कार्य भी हुआ था परन्तु वह पूरा नहीं हो सका। वर्तमान समय मे इतिहास को नए सिरे से पुन: लिखे जाने की आवश्यकता और भी बढ़ गई है, विशेष रूप से भारत में धर्मनिरपेक्षता की त्रुटिपूर्ण परिभाषा, प्रयोग, प्रचार और प्रसार के संदर्भ मे।

प्रस्तुत 'रेखांकित भारतीय इतिहास' पुनर्लेखन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। प्रथम अवश्य है, परन्तु है उद्देश्यपूर्ण और लाभप्रद। जिस उद्देश्य को दृष्टिगत करते हुए यह पुस्तक लिखी गई है, लेखक उसमें पूर्णतया सफल है। मुझे विश्वास है कि पाठको का तो यह हित-साधन करेगी ही साथ ही ———— के लिए बौद्धिक विकास और

। ज्ञान बढ़ाने में भी उपयोगी सिद्ध होगी तथा इतिहासविद् एवं विद्वानों के लिए
ा कार्य करेगी।

इस अच्छे, सुन्दर और ज्ञानवर्द्धक कार्य के लिए संदीप कुमार शर्मा को बधाई।
। इस विश्वास के साथ कि उनकी कलम अब रुकेगी नहीं।

– डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग
जे.वी. जैन कॉलिज
सहारनपुर (उ.प्र.)

प्रेरणा के स्रोत

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' के कर्म से प्रारम्भ होकर गुरु की चरणधूलि से 'लेखन तिलक' की परिणति है, 'रेखांकित भारतीय इतिहास' क्योंकि 'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पांय, बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो मिलाय।'

पृथ्वी निर्माण की जहां अन्तिम प्रक्रिया पूर्ण होती है वहीं से प्रारम्भ होता है भारतीय संस्कृति और सभ्यता का इतिहास। भारत के इस प्राचीनतम इतिहास को किसी एक पुस्तक में एकत्र करना अत्यन्त ही कठिनतम कार्य है। इस कार्य के लिए खण्डीय महाग्रथ भी कम पड़ जायेंगे। लाखों पृष्ठों की सभ्यता, जिसने विश्व को मानवता से लेकर अन्तरिक्षीय संस्कृति के सबक सिखलाये हैं, वह आज अपने राष्ट्र में अपरिचित-सी लगने लगी है। इसका कारण है कि भारतीय इतिहास के लेखन का अघोषित दायित्व उन विदेशी इतिहासकारों के कर-कमलों मे चला गया था जो न भारतीय सभ्यता को आत्मसात् कर सके और न भारतीय संस्कृति को। अल्पज्ञान और पूर्वाग्रहों से ग्रसित होने के कारण उन्होंने भारतीय इतिहास को रद्दी की टोकरी की भांति समझकर उसके अवांछनीय तथ्यों को अधिक उजागर किया तथा अपनी सभ्यता और संस्कृति को श्रेष्ठ घोषित करने के उद्देश्य से भारतीय इतिहास को उपेक्षित कलम से लिखा। सबसे बडा दुर्भाग्य यह है कि हमारे अपने इतिहासविद् भी विदेशी इतिहासकारों द्वारा रचित भारतीय इतिहास को सत्य की परिधि में बांधने में गर्व अनुभव करते हैं। आज भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता है ताकि भारतीय इतिहास के प्रकाश को प्रकाशित किया जा सके।

प्रस्तुत पुस्तक पुनर्लेखन का कोई दावा नहीं करती लेकिन प्रयास का आभास कराती है क्योंकि यह पुस्तक भारतीय नागरिक एवं सैन्य सेवा प्रतियोगिता परीक्षाओ मे सम्मिलित होने वालों तथा भारतीय इतिहास में रुचि रखने वालों के लिए भारतीय इतिहास विषयक सूचनाओ को पूर्ण करने के उद्देश्य से लिखी गई है।

स्वर्ग-नरक और आत्मा-परमात्मा जैसी नैसर्गिक अवधारणाओं को प्रतिपादित करने वाले देश भारत में ही चारों ऋतुओं का अवतरण होता है। ऋतुओं के नैसर्गिक-सौन्दर्य की छाप हमारी संस्कृति पर स्पष्ट है। हमारी सांस्कृतिक धरोहर जहां एक ओर धार्मिक बन्धन मे बंधी है वहीं दूसरी ओर वह वैज्ञानिक तथ्यों का एक पुंज है। दुर्भाग्यवश अर्वाचीन अतरिक्षीय युग की प्रबल मान्यताओं के तले हमारी सास्कृतिक विरासत दम तोड

रही है। विसंगतियां प्रत्येक इतिहास में हैं लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि प्रत्येक की मात्र विसंगतियों को ही किसी संस्कृति का पूर्ण इतिहास मान लिया जाये।अत: प्रथम अध्याय में उन विसंगतियों को स्थान नहीं दिया गया है जहां प्रश्नचिह्न है।

'कर्म' को प्रधान मानते हुए प्रेरणा का स्रोत बनीं मेरी भाभीश्री श्रीमती मीनाक्षी शर्मा। माताश्री एवं पिताश्री का आशीर्वाद लेखन का स्रोत बना और प्रेरणा एवं स्रोत के मध्य के अन्तर को ईश्वर तुल्य जीजाश्री, बहनो एव भ्राताश्री के बहुमूल्य सहयोग ने पाट दिया।

सृजनात्मक परिकल्पना को मेरे गुरुश्री ने सुगंधित गुलदस्ता बनाया। अत मैं अपने गुरुश्री विद्याविशारद (डॉ.) कृष्ण कुमार शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, जे.वी. जैन महाविद्यालय, सहारनपुर; अपनी माताश्री श्रीमती प्रेमलता शर्मा, पिताश्री श्री विष्णुदत्त शर्मा, स्वतंत्रता सेनानी व वरिष्ठ अधिवक्ता एवं संस्थापक अध्यक्ष–उत्तर प्रदेश कर अधिवक्ता कल्याण संघ; जीजाश्री श्री कृष्ण कुमार शर्मा, पूर्व सम्पादक 'परिवेश', साहित्यकार, नयी दिल्ली; बहनश्री डॉ. चित्रा शर्मा, प्रसिद्ध महिला होम्योपैथिक चिकित्सक, गाजियाबाद; भाईश्री प्रदीप कुमार शर्मा, अवकाशप्राप्त भारतीय वायुसेना एव कानूनविद्; श्री ज्ञानेन्द्र प्रसाद शर्मा, प्रवक्ता–इतिहास; डी.ए.वी. महाविद्यालय, बुलंदशहर एव प्रेरणावाहिनी भाभीश्री का विशेष आभारी हूं जिन्होंने मेरे इस प्रयास को सपरिश्रम एव सुधारात्मक परिवेश में विशेष सहयोग प्रदान किया। इसके अतिरिक्त मैं उन सभी विभूतियों का आभारी हूं जिन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से मेरे प्रयास मे सहयोग दिया।

प्रवीण प्रकाशन के स्वामीश्री श्रीकृष्ण गुप्ता जी के प्रति मैं विशेष अनुग्रहीत हू जिनके सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं था।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक इतिहास के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। परामर्श सदैव सादर आमंत्रित हैं।

— संदीप कुमार शर्मा

प्रेम विला'
421 टीचर्स कॉलोनी
बुलदशहर–203 001 (उत्तर प्रदेश)

अध्याय एक
धर्म और समाज

1 'धर्म' शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में 56 बार हुआ है।

2 ऋग्वेद में 'धर्म' धार्मिक क्रिया संस्कारों के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

3 अथर्ववेद में 'धर्म' धार्मिक क्रिया संस्कारों से अर्जित गुण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

4 ऐतरेय ब्राह्मण में 'धर्म' सकल धार्मिक कर्तव्यों के अर्थ में मिलता है।

5 छान्दोग्योपनिषद में 'धर्म' की 3 शाखाएं मिलती हैं–

1 यज्ञ, अध्ययन एवं दान (गृहस्थ धर्म)

2. तपस्या (तापस धर्म), और

3. ब्राह्मचारित्व (आचार्य के गृह में अन्त तक)

6 मेधातिथि के अनुसार 'धर्म' के पांच रूप हैं–

1. वर्ण धर्म,

2. आश्रम धर्म,

3. वर्णाश्रम धर्म,

4. नैमित्तिक धर्म (प्रायश्चित), और

5. गुणधर्म (अभिषिक राजा के संरक्षण संबंधी कर्तव्य)

7 वैशेषिक धर्म सूत्र के अनुसार–धर्म वह है जिससे आनन्द एवं निःश्रेयस की सिद्धि हो।

8 पूर्वमीमांसा सूत्र के अनुसार–वेदविहित प्रेरक (धर्म का संबंध) उन क्रिया संस्कारों से है जिनसे आनन्द मिलता है और जो वेदों द्वारा प्रेरित एवं प्रशंसित है।

9 हारीत ने धर्म को श्रतिप्रमाणक माना है, यथा–

"अथातो धर्म व्याख्यास्यामः।
श्रतिप्रमाणको धर्मः।
श्रतिश्च द्विविधा, वैद्विकी तान्त्रिकी च।"

10 गौतम ने धर्मशास्त्र को इत्येके कहकर उद्धृत किया है।

11 तैत्तिरीयोपनिषद में छात्रों का धर्म है–"सत्यं वद धर्मचर"।

12 भगवद्गीता में–"सर्वधर्म निधनं श्रेयः" में भी धर्म का उपर्युक्त अर्थ है।

13. पुराण 18 हैं, यथा–

1. ब्रह्म पुराण
2. पद्म पुराण
3. विष्णु पुराण
4. वायु पुराण
5. भागवत् पुराण
6. नारदीय पुराण
7. मार्कण्डेय पुराण
8. आग्नेय पुराण
9. भविष्य पुराण
10. ब्रह्मवैवर्त पुराण
11. लिंग पुराण
12. वराह पुराण
13. स्कन्द पुराण
14. वामन पुराण
15. कूर्म पुराण
16. गरुड़ पुराण
17. मत्स्य पुराण, और
18 ब्रह्माण्ड पुराण

14. पुराणों में धर्म संबंधी निम्नलिखित बातों का उल्लेख हुआ है–

1. आचार
2. आह्निक
3. अशौच
4. आश्रम धर्म
5. भक्ष्याभक्ष्य
6. ब्राह्मण (वर्ण धर्म के अन्तर्गत)
7. दान (प्रतिष्ठा एवं उत्सर्ग के अन्तर्गत)
8. द्रव्याशुद्धि
9. गोत्र एवं प्रवर
10. कलिस्वरूप
11. कलिवर्ज्य
12. कर्मविपाक
13. नरक
14. नीति

15 पातक
16 प्रतिष्ठा
17. प्रायश्चित
18. राजधर्म
19. संस्कार
20. शान्ति
21. श्राद्ध
22 स्त्रीधर्म
23. तीर्थ
24. तिथि (व्रतों के अन्तर्गत)
25. उत्सर्ग (जनकल्याण के लिए)
26. वर्णधर्म
27. विवाह (संस्कार के अन्तर्गत)
28. व्रत
29. व्यवहार; और
30. युगधर्म (कलि स्वरूप के अन्तर्गत)

15 18 महापुराणों के अतिरिक्त 18 उपपुराण भी हैं।

16 पद्म पुराण ने 18 पुराणों को तीन भागों में विभक्त किया है, यथा–
1. सात्विक
2. राजस, और
3. तामस

17 छान्दोग्योपनिषद मे 'इतिहास-पुराण' को पांचवां वेद कहा गया है।

18 दस्यु के प्रकार–
1. अव्रत – देवताओं के नियम-व्यवहारों को न मानने वाले
2. अक्रतु – यज्ञ न करने वाले
3. मृधवाच – जिनकी बोली स्पष्ट व मधुर न हो
4. अपनास – गूंगे एवं चपटी नाक वाले

19 ऋग्वेद में 'ब्रह्म' शब्द का अर्थ है–प्रार्थना या स्तुति।

20 अथर्ववेद में 'ब्रह्म' शब्द का अर्थ है–ब्राह्मण।

21 ऋग्वेद में इन्द्र की उपाधि है–पांचजन्य।

22 ऋग्वेद में अग्नि की उपाधि है–पांचजन्य- पुरोहित-

23 ऋग्वेद के पुरुष सूक्त मे ही वैश्य एव शूद्र शब्द का प्रयोग है अन्यत्र कहीं नह

26 ऋग्वेद में 10 मण्डल और 1029 सूक्त हैं।
27 ऋग्वेद में उत्तरपूर्वी पंजाब के क्षेत्रों का वर्णन है।
28 ऋग्वेद की पवित्र नदी सरस्वती है।
29 ऋग्वेद में सरस्वती के अतिरिक्त सिन्धु, गोमल आदि नदियों का उल्ले
30 ऋग्वेद के दसवें मण्डल में गंगा नदी का नाम एक बार आया है।
31 ऋग्वेद में हिमालय का वर्णन है।
32 ऋग्वेद में विंध्याचल पर्वतशृंखला का वर्णन नहीं है।
33 ऋग्वेद में रुद्धजल और जलचक्रों का उल्लेख मिलता है।
34 ऋग्वेद में गाय के लिए 'अघ्न्या' शब्द का उल्लेख है।
35 ऋग्वेद में पशुओं को दागे जाने का उल्लेख है।
36 ऋग्वेद में राजा के निर्वाचन की सूचनाएं मिलती हैं।
37 ऋग्वेद में कुछ राजनीतिक इतिहास है।
38 ऋग्वेद के अनुसार भरतवंशी सरस्वती नदी और यमुना के किनारे
39 ऋग्वेद में चेदी, गांधार, कीटक(मगधों का प्राचीन नाम) नामक गणो क
40 ऋग्वेद मे 250 से अधिक ऋचायें इन्द्र से संबंधित हैं।
41 ऋग्वेद में 120 ऋचायें सोम के विषय में हैं।
42 ऋग्वेद में 33 देवताओं का उल्लेख है।
43 ऋग्वेद में केवल 6 ऋचायें विष्णु से संबंधित हैं।
44 ऋग्वेद में 1208 ऋचायें विश्वोत्पत्ति सहित विवाह विषयक हैं।
45 ऋग्वेद में रुद्र को गौण महत्त्व प्रदान किया गया है।
46 ऋग्वेद में अग्नि को गृहस्थी का रक्षक माना गया है।
47 ऋग्वेद का रचनाकाल–ई.पू. के दूसरे सहस्राब्द के अन्त और पह
प्रारम्भ।
48 वैदिक संहिताओं में विशेष सिंचाई नहरों का उल्लेख है।
49 वैदिक गणों मे युद्ध का मुख्य कारण पशुधन था।
50 वैदिक काल में परिवहन के मुख्य साधन बैलगाड़िया और घोड़े–जुते
51 वैदिक संहिताओं में सौ-सौ डंडों से युक्त समुद्रगामी पोतों का उ
52 उत्तर वैदिक काल में भूमिदान और क्रय के विषय का उल्लेख है।
53 वैदिक काल (11वीं ई.पू.) में लोहा उत्तर भारत में मिलता है।
54 वैदिक ग्रंथ स्पष्ट करते हैं कि स्त्रियों को गण की सभाओं में सम्मि
अधिकार नहीं था।
55 'विदथ' सबसे प्राचीन संगठन है।
56 ब्राह्मण, वैश्य और क्षत्रिय द्विज माने जाते हैं।
57 वैदिक काल में चार वर्ण थे–ब्राह्मण वैश्य क्षत्रिय और शूद्र

58 वैदिक काल में सर्वप्रथम दास-प्रथा प्रारम्भ हुई।

59 दास शब्द 'दस्यु' से व्युत्पन्न है जिसका प्रयोग शत्रु के लिए होता था।

60 वैदिक काल में आर्य शब्द का अर्थ विदेशी या अजनबी था।

61 कालान्तर में आर्य शब्द का अर्थ श्रेष्ठजन हो गया।

62 आर्यों का मूल निवास-स्थान भारत का सप्त-सिंधु प्रदेश है।

63 अथर्ववेद में अनाजजिसने के लिए दासियों के संबंध में रोचक सूचनाए हैं।

64 अग्नि एवं बृहस्पति देवताओं में ब्राह्मण थे।

65 इन्द्र, वरुण और यम देवताओं में क्षत्रिय थे।

66 वसु, रुद्र, विश्वे-देव एवं मारुत विश् थे।

67 पूषा शूद्र थे।

68 प्राचीन ईरानी ग्रंथ अवेस्ता और ऋग्वेद एक-दूसरे के अत्यंत समीप हैं।

69 स्वर्ग के देवता सूर्य, उवस (उषा) तथा वरुण हैं।

70 पार्थिव देवता–अग्नि और सोम।

71 अन्तरिक्ष के देवता हैं–रुद्र, वायु, इन्द्र (सर्वाधिक शक्तिशाली)।

72 हिन्दुओं में प्रमुख देवता विष्णु हैं।

73 ब्रह्मा–विष्णु–महेश (शिव) त्रिदेव बने।

74 अथर्ववेद में जादू-टोनों एवं मन्त्रों का वर्णन है।

75 वेद सबसे प्राचीन हैं।

76 अथर्ववेद सम्भवत: वैदिक गणों ने रचा।

77 वैदिक साहित्य और ऋग्वेद में नाट्य तत्त्व पाये जाते हैं।

78 अथर्ववेद में प्रचुर चिकित्सा संबंधी सामग्री है।

79 अथर्ववेद में शल्वसूत्र का नियम रोचक है।

80 वैदिक काल में–सूर्य, चन्द्रमा, ग्रहों और संपूर्ण तारा मण्डल का ज्ञान था।

81 वर्ष–12 माह में, प्रत्येक माह 30 दिनों में विभक्त था।

82 प्राचीन ग्रन्थ हैं–रामायण एवं महाभारत।

83 रामायण मे 24 हजार श्लोक हैं।

84 महाभारत में एक लाख श्लोक हैं।

85 वैदिक काल में–वेदियों को नापने की विधि ज्यामितीय आकृति की निर्माण विधि, परिकलन की परिष्कृत प्रणालियां स्पष्ट हैं।

86 संहिताओ से स्पष्ट है कि उस समय नेत्र, हृदय, फेफड़े तथा त्वचा रोगों तथा उसके निदान से चिकित्सक परिचित थे।

87 वेद चार हैं–

(क) ऋग्वेद — ऋचा

(ख सामवेद — मत्र

(ग) यजुर्वेद — स्तुति तथा यज्ञविधि संकलन
(घ) अथर्ववेद — मंत्र तथा जादू-टोना सकलन

88. वेदांग 6 हैं—

1. शिक्षा — उच्चारण विज्ञान
2. व्याकरण
3. निरुक्त — व्युत्पत्ति विज्ञान
4. कल्प — अनुष्ठान
5. छन्द — काव्यशास्त्र
6. ज्योतिष

89. वेदों के बाद—

1. ब्राह्मण ग्रंथ — संहिताओं के कर्मकांड
2. अरण्यक — वानप्रस्थो के लिए
3. उपनिषद — धार्मिक दार्शनिक विचार

जातियां
प्रतिलोम विवाह से

90. ब्राह्मण पिता एवं क्षत्रिय माता की सन्तान — सवर्ण, मूर्धावक्सित
91. ब्राह्मण पिता एवं शूद्र माता की सन्तान — पाराशव, निषादी
92. ब्राह्मण पिता एवं वैश्य माता की सन्तान — अम्बष्ठा
93. क्षत्रिय पिता एवं शूद्र माता की सन्तान — उग्र
94. क्षत्रिय पिता एवं वैश्य माता की सन्तान — माहिष्या (कन्या)
95. वैश्य पिता एवं शूद्र माता की सन्तान — करणी (कन्या)
96. शूद्र पिता एवं वैश्य माता की सन्तान — आयोगव
97. शूद्र पिता एवं ब्राह्मण माता की सन्तान — चाण्डाल

गुप्त प्रेम संबंध परिणामस्वरूप

98 अन्ध्र — वैदेहक पिता एवं कार्वावर माता की सन्तान
99. अन्तावसायी — चाण्डाल पुरुष एवं निषाद स्त्री की सन्तान
100. अवरीट — एक विवाहित स्त्री एवं उसी जाति के पुरुष की अवै
(प्रेम संबंध से)
101. अविर — क्षत्रिय पुरुष एव वैश्य स्त्री की सन्तान
102 आपीत ब्राह्मण पुरुष एव दैष्यन्ती की सन्तान

आभीर — ब्राह्मण पुरुष एवं अम्बष्ठा कन्या की सन्तान
आश्विक — क्षत्रिय पुरुष एवं वैश्य नारी की सन्तान
आहिण्डिक — निषाद पुरुष एवं वैदेही नारी की सन्तान
करण — वैश्य पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
उद्बन्धक — सूनिक पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
कटकार — वैश्य पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
कारावर — निषाद पुरुष एवं वैदेही नारी की सन्तान
कारुष — व्रात्य वैश्य पुरुष एवं व्रात्य नारी की सन्तान
कुक्कुट — शूद्र पुरुष एवं निषाद नारी की सन्तान
कुण्ड — जीवित ब्राह्मण की पत्नी तथा किसी अन्य ब्राह्मण के गुप्त ?
से उत्पन्न
कुकुन्द — मागध पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
कुम्भकार — ब्राह्मण पुरुष एवं वैश्य नारी के प्रेम संबंध से उत्पन्न सन्त
कुशीलव — अम्बष्ठ पुरुष एवं वैदेहक नारी की सन्तान
कृत — वैश्य पुरुष एव ब्राह्मण नारी के गुप्त प्रेम से उत्पन्न सन्त
क्षत्ता — शूद्र पुरुष एवं ब्राह्मण नारी के गुप्त प्रेम से उत्पन्न सन्त
खनक — आयोगव पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
गुहक — श्वपच पुरुष एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
गोज — क्षत्रिय पुरुष एवं ब्राह्मण नारी के गुप्त प्रेम की सन्तान
गोलक — ब्राह्मण पुरुष एवं विधवा ब्राह्मणी के गुप्त प्रेम की सन्तान
चाक्रिक — शूद्र पुरुष एवं वैश्य नारी के गुप्त प्रेम की सन्तान
पाण्डुसोपाक — चाण्डाल पुरुष एवं वैदेहक नारी की सन्तान
पिंगल — ब्राह्मण पुरुष एवं आयोगव नारी की सन्तान
भिषक — ब्राह्मण पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
भोज — वैश्य पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
मणिकार — क्षत्रिय पुरुष एवं वैश्य नारी की सन्तान
माणविक — शूद्र पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
मैत्रेयक — वैदेहक पुरुष एवं आयोगव नारी की सन्तान
म्लेच्छ — वैश्य पुरुष एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
रजक — पुल्कस पुरुष एवं वैश्य नारी की सन्तान
रथकार — वैश्य पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
वेलव — शूद्र पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
शूलिक — ब्राह्मण पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
शूलिक — क्षत्रिय पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान

136. श्वपाक — उग्र पुरुष एवं क्षत्ता नारी की सन्तान
137. श्वपच — क्षत्ता पुरुष एवं उग्र नारी की सन्तान
138. सूचिक — वैदेहक पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
139. सैरिन्ध्र — दस्यु पुरुष एवं आयोगव नारी की सन्तान
140. सोपाक — चाण्डाल पुरुष एवं पुक्कस नारी की सन्तान
141. आधासिक या आन्धसिक — वैदेहक पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
142. आवर्तक — भृज्जकण्ड पुरुष एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
143. कटधानक — आर्वतक पुरुष एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
144. कुरुविन्द — कुम्भकार एवं कुक्कुटी नारी की सन्तान
145. होलिक — आयोगव पुरुष एवं धिग्वण नारी की सन्तान
146. दुर्भर — आयोगव पुरुष एवं धिग्वण नारी की सन्तान
147. पौष्टिक — ब्राह्मण पुरुष एवं निषाद नारी की सन्तान
148. प्लव — चाण्डाल पुरुष एवं आन्ध्र नारी की सन्तान
149. बन्धुल — मैत्रेय पुरुष एवं जाधिका नारी की सन्तान
150 भस्मांकुर — च्युतशैव संन्यासी एवं शूद्र/वैश्य नारी की सन्तान
151. मन्थु — वैश्य पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
152 रोमिक — मल्ल पुरुष एवं आवर्तक नारी की सन्तान
153. सिन्दोलक — शूद्र पुरुष एवं मागध नारी की सन्तान

इसके अतिरिक्त अन्य जातियां हैं–

154. अन्त्य
155 अन्त्यज — ये सात हैं, यथा **प्रथम श्रेणी की**–

1. रजक (धोबी)
2. चर्मकार
3. नट
4. बुरुड (बांस का काम करने वाला)
5. कैवर्त (मछली मारने वाला)
6. मेद
7. भिल्ल

द्वितीय श्रेणी की–

1 चाण्डाल

2. श्वपच (कुत्ते का मास खाने वाला)
3. क्षत्ता
4. सूत
5. वैदेहक
6. मागध
7. आयोगव

व्यास स्मृति के अनुसार–
1 चर्मकार
2. भट
3. भिल्ल
4. रचक
5. पुष्कर
6 नट
7. विराट
8. मेद
9. चाण्डाल
10. दाश
11. श्वपच
12. कोलिक

156 अभिसिक्त – ब्राह्मण पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
157. अयस्कार – अज्ञात
158. आवन्त्य – अज्ञात
159. उपक्रुष्ट – अज्ञात
160. ओड्र – अज्ञात
161. करण – वैश्य पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
162. कर्मकार – ब्राह्मण पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
163. कर्मार – ब्राह्मण पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
164. कांस्यकार – अज्ञात
165. काकवच – अज्ञात
166. काम्बोज – अज्ञात
167. कायस्थ – का = काक अर्थात – लालच
य = यम – क्रूरता, और
स्थ = स्थपति – लूट

168. किरात — अज्ञात
169. कुलाल — अज्ञात
170. कैवर्त — निषाद पुरुष एवं आयोगव नारी की सन्तान
171 कोलिक — मध्य प्रदेश की कोलि एवं उत्तर प्रदेश की कोल
172. खश/खस — वैश्य पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
173. गोप — एक शूद्र उपजाति
174. चक्री — शूद्र पुरुष एवं वैश्य नारी की सन्तान
175. चर्मकार — शूद्र पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
176 चीन — शूद्र की स्थिति में उतरा हुआ क्षत्रिय
177. चंचु — ब्राह्मण पुरुष एवं वैदेहक नारी की सन्तान
178. चूचुक — वैश्य पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
179 चैलनिर्णेजक
या निर्णेजक — पुल्कस पुरुष एवं वैश्य नारी की संतान
180. जालोपजीवी — निषाद पुरुष एवं आयोगव नारी की सन्तान
181. झल्ल — वैश्य पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
182. डोम्ब/डोम — क्षत्ता पुरुष एवं उग्र नारी की सन्तान
183. तक्षा/तक्षक — ब्राह्मण पुरुष एवं सूचक नारी की सन्तान
184. तन्तुवाय — दर्जी
185. ताम्बूलिक — आज का तामोली (बिहार एवं उत्तर प्रदेश)
186. ताम्रोपजीवी — आयोगव पुरुष एवं ब्राह्मण स्त्री की सन्तान
187. तुन्नवायु — दर्जी
188. तैलिक — अज्ञात
189. दरद — अज्ञात
190. दाश — निषाद पुरुष एव आयोगव नारी की सन्तान
191. दिवाकीर्त्य — शूद्र पुरुष एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
192. दौष्यन्त — क्षत्रिय पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
193. दविड़ — शूद्र की स्थिति से आया हुआ एक क्षत्रिय
194. धिग्वण — ब्राह्मण पुरुष एवं आयोगव नारी की सन्तान
195. धीवर — वैश्य पुरुष एवं क्षत्रिय नारी
196. ध्वजी — अज्ञात
197 नट — खेलों के लिए प्रसिद्ध एक अछूत जाति
198 नर्तक रजक पुरुष एव वैश्य नारी की सन्तान

200. निच्छिवि
या लिच्छिवि – वैश्य पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
201 निषाद – ब्राह्मण पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
202. पह्लव – शूद्र की स्थिति से आया हुआ क्षत्रिय
203. पारद – महाभारत में परिगणित जाति
204 पुण्ड्र/पौण्ड्रक – महाभारत में परिगणित जाति
205. पुलिन्द – वैश्य पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की अवैध सन्तान
206. पुल्कस/पौल्कस – निषाद पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
207. पुष्कर – एक अन्त्यज जाति
208. पुष्पथ – व्रात्य ब्राह्मण एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
209. बन्दी – वैश्य पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
210. बर्बर – महाभारत की अनार्य जाति
211. बाहा – अज्ञात
212. बुरुड – एक अन्त्यज जाति
213. भट – एक अन्त्यज जाति
214. भिल्ल – एक अन्त्यज जाति
215. भूप – वैश्य पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
216. भूर्ज कण्टक – वात्य ब्राह्मण एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
217. भृज्जकण्ठ – वैश्य पुरुष एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
218. मद्गु – ब्राह्मण पुरुष एवं बन्दी नारी की सन्तान
219. मत्स्य बन्धक – तक्षक पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
220. मल्ल – अज्ञात
221. मागध – वैश्य पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
222. माणविक – शूद्र पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
223. मातंग – शूद्र पुरुष एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
224. मार्गव – निषाद पुरुष एवं आयोगव नारी की सन्तान
225. मालाकार या
मालिक – आज की माली जाति का द्योतक
226. माहिष्य – क्षत्रिय पुरुष एवं वैश्य नारी की सन्तान
227. मूर्धावसिक्त – ब्राह्मण पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
228. मृतप – पाणिनि के महाभाष्य में शूद्र जाति
229. मेद – वैदेहक पुरुष एवं निषाद नारी की सन्तान
230. मैत्र – व्रात्य पुरुष एवं व्रात्य नारी की सन्तान

231. यवन – शूद्र पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
232. तारक या रंगावतारी – नट के समान एक जाति
233. रंजक – शूद्र पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
234. रामक – वैश्य पुरुष एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
235. लुब्धक – अज्ञात
236. लेखक – कायस्थ के समान एक जाति
237 लोहकार – उत्तर प्रदेश एवं बिहार की लोहार जाति
238. वन्दी – वैश्य पुरुष एव क्षत्रिय नारी की सन्तान
239. वराट – एक अन्त्यज जाति
240. वरुड – एक अन्त्यज जाति
241. वाटधान – व्रात्य ब्राह्मण एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
242. विजन्मा – व्रात्य वैश्य एवं व्रात्य नारी की सन्तान
243. वेण – वैदेहक पुरुष एवं अम्बष्ठ नारी की सन्तान
244. वेणुक – सूत पुरुष एव ब्राह्मण नारी की सन्तान
245. वैदेहक – वैश्य पुरुष एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
246. व्याध – एक निम्न जाति
247. व्रात्य – एक वर्णसंकर जाति
248. शक – शूद्रों की श्रेणी से पतित क्षत्रिय
249. शबर – एक अन्त्यज के समान जाति
250. शालिक – वैश्य पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
251. शैख – व्रात्य ब्राह्मण एवं व्रात्य ब्राह्मणी की सन्तान
252. शैलूष – एक निम्न जाति
253. शौण्डिक – एक निम्न जाति
254 सात्वत – एक व्रात्य ब्राह्मण एवं व्रात्य ब्राह्मणी की सन्तान
255. सुधन्ताचार्य – व्रात्य ब्राह्मण एवं व्रात्य ब्राह्मणी की सन्तान
256. सुवर्ण – ब्राह्मण पुरुष एवं क्षत्रिय नारी के वैध विवाह की सन्तान
257. सूचक – वैश्य पुरुष एवं शूद्र नारी की सन्तान
258. सूत – क्षत्रिय पुरुष एवं ब्राह्मण नारी की सन्तान
259. सूनिक – आयोगव पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान
260. सौधन्वन – वैश्य पुरुष एवं शूद्र नारी के वैध विवाह की सन्तान
261. आहितुण्डिक – निषाद पुरुष एवं वैदेहक नारी की सन्तान
262. शालाक्य – मालाकार पुरुष एवं कायस्थ नारी की सन्तान

आदिम जातियां

पुराणों – उत्तरी हिमालय में–सिद्ध, गंधर्व, यक्ष, किन्नर जातियों की सृष्टि बताई गई है।
सृष्टि का राजा कुबेर था।

रामायण – राजा दशरथ की मृत्यु के उपरान्त राजगुरु वशिष्ठ मुनि अपनी पत्नी अरुन्धति के साथ हिमदाव नामक पर्वत पर आकर एक गुफा में तब तक निवास करते रहे जब तक रामचन्द्र वापस अयोध्या नहीं लौटे। केदारखण्ड अध्याय 206/1 से 7 के अनुसार–वहां के रहने वाले किरात लोगों के साथ काला कम्बल पहने हुए, कर्मरहित उन्हीं की तरह आचरण रखते हुए वे (वशिष्ठ) बहुत काल तक रहे। यहां सिद्ध होता है कि रामचन्द्र के समय किरात हिमालय क्षेत्र में रहते थे।

महाभारत – वनपर्व/36–अर्जुन एक शूकर के पीछे धनुषबाण लिए पीछा कर रहे थे उस समय किरात रूप में शिवजी ने अर्जुन से युद्ध किया था।
युद्धस्थल–श्रीनगर से 6 मील नीचे अलकनन्दा नदी के बामकूल पर बदरीनाथ के समीप एक चट्टी है जिसका नाम विल्वकेदार है। (केदारखण्ड में सविस्तार)

रघुवश – कालिदास ने चतुर्थसर्ग में राजा रघु की उत्तरी हिमालय की यात्रा के संबंध में लिखा है कि उत्तरी हिमालय में किरात, काम्बोज, हूण जातियां निवास करती हैं। उनसे राजा रघु का युद्ध हुआ।

कुमार सम्भव – भागीरथी के निकट रहने वाली जातियों को कालिदास ने किरात लिखा है।

महाभारत – वनपर्व/140–पाण्डव गन्दमादन पर्वत पर (बदरिकाश्रम) गए थे, तब मार्ग में हिमालय के निकट राजा सुबाहु की राजधानी में अतिथि रहे। सुबाहु किरात, भील, तंगण जाति के लोगो का राजा था।

वराह संहिता – अध्याय 14 (24-31)–उत्तरी दिशा की जातियों का उल्लेख वराहमिहिर आचार्य ने किया है। किरातादि जातियों का उल्लेख उन्होंने किया है। उत्तर और ईशान दिशा में रहने वाली

जातियां हैं–

कैकय, क्षसातय, यामुन, भोगप्रस्थ, अर्जुनाय, अग्निध्र, आदर्श, अन्तर्दीपिन, त्रिमर्त, तुरगानन, स्वमुख, केराघर, चिप्पिट भ्रासिका, दासरेक, पारधान, रसधान, तक्षशिला, पुवकलावत्, कैलावत्, कण्ठधान,अम्बरखत, भद्रक, मालव, पौरव, कछार, दण्डपिंगलक, माणहल, हूण, कोहल, शीतक, माण्डव्य, भूतपुर, ब्रह्मपुरा, दार्वा, डामर, वनराज, किरात, चीना, कौणिन्द, भल्लपटोल, जटासुर, कुनट, खस, धोस, कुचिकम्प, एक चरण, अनुविद्ध, सवर्णभू, वसुधन, दिविष्ट पौरव, चीर निवासी, त्रिनेत्र, मुजाद्रि, गान्दर्व प्रभृति।

जातियों के व्यवसाय

प्राचीन काल में मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से अपनी पहचान स्थापित करता था। इसलिए उपर्युक्त अनुलोम, प्रतिलोम विवाह एवं प्रेम संबंधों के प्रतिफल को समाज में कर्म से पहचाना गया। विभिन्न जातियों के व्यवसाय निम्नवत् थे :–

270. आन्ध्र – दस्यु
271. अन्त्य – अज्ञात
272. अयस्कार – लोहार
273. आभीर – दस्यु
274. आयोगव – लकडी काटना, कपडा-व्यापारी आदि
275. आश्विक – घोड़ों का व्यापारी
276. आहिण्डिक – चर्मकार
277. उग्र – राजदण्ड देने वाला या जल्लाद
278. उपक्रुष्ट – बढ़ई का काम करने वाला
279. कर्मार – लोहार
280. काकवच – घोड़े को घास लाने वाले
281. कारावर – मशाल पकड़ने वाला, दूसरों के लिए छत्र पकड़ने वाला
282. कुक्कुट – राजा के लिए मुर्गी की लडाई का प्रबंधक
283. कैवर्त – केवट
284. क्षत्ता – रथकार एवं द्वारपाल
285. खनक – खान खोदने वाला या खोदने वाला
286. गोप – ग्वाला

287 चक्री — नमक एवं तेल का व्यवसायी
288 चर्मकार — चमार
289 चाक्रिक — घण्टी बजाने वाला
290. चूंचु — जंगली पशुओं को मारने वाला
291 चूचुक — पान एवं चीनी का व्यवसायी
292 चैलनिर्णेजक — कपड़ा रंगने वाला
293 जालोपजीवी — पशुओं को पकड़ने का व्यवसाय करने वाला
294. तक्षा/तक्षक — बढ़ई
295. तन्तुवायु — जुलाहा
296. तुन्नवायु — दर्जी
297. धिग्बण — मोची
298. धीवर — मछली पकड़ने वाला
299. ध्वजी — शराब बेचने वाला
300. नट — खेल-तमाशा दिखलाने वाले
301. नापित — नाई
302.. पाण्डुसोपाक — बांसों का व्यवसाय करने वाला
303. पुल्कस — शराब बेचने वाला
304. भिषक — ज्योतिष एव फलित ज्योतिष द्वारा आजीविका चलाने वाला
305. मणिकार — मोतियों, सीपियों एवं शंखों का व्यवसायी
306. रजक — धोबी
307. रंजक — रंगसाज
308. रथकार — रथ का निर्माण करने वाला
309. लोहकार — लोहार
310 वरुड — बांस का काम करने वाला
311. वेणु — बांस का काम करने वाला
312. वैदेहक — जानवर चराने वाला और दूध, घी आदि बेचने वाला
313. सुवर्णकार — सुनार
314. सूचिक — जो सुई से कार्य करता है
315. सूत — रथों, घोड़ों एवं हाथियों की रखवाली करने वाला
316 सैरिन्ध्र — राजाओं के अन्त:पुरों से मुक्त नारियों की रखवाली कर आजीविका चलाने वाला
317 सोपाक — दण्डित को फांसी देने का व्यवसाय
318. आधासिक — पका हुआ भोजन बेचने वाला
319. कुन्तलक — नाई

संस्कार

320. संस्कार – गौतम के अनुसार 40 सस्कार–

1. गर्भाधान
2. पुंसवन
3. सीमन्तोन्नयन
4 जातकर्म
5. नामकरण
6. अन्नप्राशन
7. चौल
8. उपनयन
9. वेद के 4 व्रत
14. 7 पाकयज्ञ
22. 7 हविर्यज्ञ
30. 7 सोमयज्ञ
38. स्नान
39. विवाह
40. पंचमहायज्ञ

321 स्वीकृत – 16 संस्कार

1. गर्भाधान
2. पुंसवन
3. सीमन्तोन्नयन
4 विष्णुबलि
5. जातकर्म
6. नामकरण
7. निष्क्रमण
8. अन्नप्राशन
9. चौल
10. उपनयन
11. वेदव्रत चतुष्टय (चार व्रत)
12. समावर्त
13. वाग्दान
14. विवाह
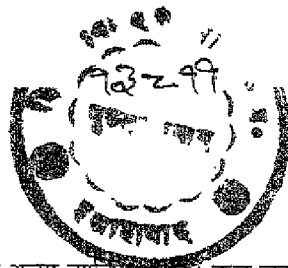
15 गोदान

16. अन्त्येष्टि

322 गर्भाधान — धर्मशास्त्रों में इसका अलग वर्णन नहीं है। कुछ चतुर्थीकर्म को और कुछ ऋतुसंगमन के उपरान्त की क्रिया को गर्भाधान कहते हैं।

323. ऋतुसंगमन — इसे गर्भाधान से अलग माना जाता है। इसे निषेक भी कहते हैं। (मासिक धर्म के उपरान्त वैवाहिक संभोग)

324. पुंसवन — लड़के को जन्म देना इसका शाब्दिक अर्थ है।

325 सीमान्तोन्नयन— इसका शाब्दिक अर्थ है—स्त्री के केशों को ऊपर विभाजित करना। समय—चौथा मास।

326. चूणाकर्म — मुण्डन करवाना, समय—3 साल की अवस्था में

327. उपनयन — शिक्षा हेतु शिक्षक के पास ले जाना

328 वर एवं कन्या एक ही नक्षत्र में उत्पन्न हों तो सर्वोत्तम है।

329. यदि कन्या का नक्षत्र राक्षसगण में पड़े और वर का मनुष्यगण में तो वर की मृत्यु शीघ्र हो जाती है।

330 यदि वर एवं कन्या का नक्षत्र क्रमशः देव और राक्षसगणों में पड़े तो दोनों का झगड़ा होगा।

331 यदि वर एवं कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी पड़े तो किसी की भी मृत्यु शीघ्र संभव है, अत. विवाह नहीं करना चाहिए।

332. स्मृति संग्रह में पुत्रहीन व्यक्ति को अपनी वसीयत निम्न क्रम में देनी चाहिए— विधवा→पुत्रिका→कन्या→माता→पितामह→पिता→अपने भाई→सौतेला भाई→पितृ संतति→पितामहसंतति→प्रपितामहासंतति→अन्यसपिण्ड→सकुल्य→आचार्य→शिष्य→सहच्छात्र→विद्वान पण्डित

333. नारद स्मृति में 'दीनार' शब्द मिलता है।

334. रोम शासकों ने 207 ई.पू. में दीनार सिक्का बनवाया था।

335. एक दीनार = 12 धानक

336. एक धानक = 8 अण्डिकाएं

337 आठ अण्डिकाएं = एक ताम्रपण

338 एक ताम्रपण — एक कर्ण

339 वेदों की ऋचाओं से स्पष्ट होता है कि भ्रातृहीन कन्या को वर मिलना कठिन

342 राम — सूर्यवंशी थे।

343. कौरव एवं पाण्डव — चन्द्रवंशी थे।

344. महाकाव्यों की पुराण कथाएं वैदिक पुराण कथाओं से भिन्न हैं।

345 महाकाव्य पुराण कथाओं में हिन्दुओं (हिन्दू धर्म) का विकास स्पष्ट है।

346. महाकाव्य में पहली बार युद्ध देवता-स्कन्ध का उल्लेख है।

347. महाकाव्य में कृष्ण को विष्णु का अवतार कहा गया है।[1]

348. इष्ट देवता या जीनोथीज्म शब्द का प्रयोग प्रथम बार भारतविद् मैक्समूलर ने किया।

349. वेदान्त उपनिषद ग्रंथों में अन्तिम ग्रंथ है।

350. उपनिषद 108 हैं। इनमें केवल 13 ही अति प्राचीन हैं।

351. उपनिषदों का रचनाकाल सातवीं–चौथी ई.पू. के मध्य है।

352. उपनिषद का सूत्र–'आत्मा ब्रह्म है, ब्रह्म आत्मा है'।

353. उपनिषदों में तीन महर्षियों का उल्लेख है–

(क) शांडिल्य

(ख) याज्ञवल्क्य, और

(ग) उद्दालक

354. गीता महाभारत का एक भाग है।

355. पहले महाभारत में चौबीस हज़ार श्लोक थे। बाद में एक लाख श्लोक हुए।

356. अथर्ववेद में मगध-वेश्याओं के मित्रों को मगधवासी कहा गया है।

357. बौद्ध ग्रंथ के अनुसार बिन्दुसार की 16 पत्नियां और 101 पुत्र थे।

358. ऋग्वेद में पुरुकुटस् को अर्ध-देवता बताया गया है।

359. ब्राह्मणों के प्रकार –

1. देव ब्राह्मण – जो प्रतिदिन स्नान, संध्या, जप, क्षेम, देवपूजन, अतिथि-सत्कार एवं वैश्वदेव करता है।

2. द्विज ब्राह्मण – जो वेदान्त पढ़ता है, अनुरागों, आसक्तियों को त्याग चुका हो। सांख्य एवं योग में निमग्न।

3. मुनि ब्राह्मण – जो वन में रहता, प्रतिदिन श्राद्ध करता है।

4. क्षत्र ब्राह्मण – जो युद्ध करता है।

5. वैश्य ब्राह्मण – जो कृषि, पशुपालन एवं व्यापार करे।

6. शूद्र ब्राह्मण – जो लाख, नमक, कुसुम्भ के समान रंग, दूध, घी, मधु व मांस आदि बेचता हो।

7 निषाद ब्राह्मण जो चोर-डाकू हो

8. पशु ब्राह्मण – जो ब्रह्म के विषय मे कुछ भी न जानने वाला हो और अहंकार करे।

9 म्लेच्छ ब्राह्मण – जो बिना किसी अनुशय के कुओं, तालाबो एव वाटिकाओ पर अवरोध खड़ा करे या उन्हें नष्ट करे।

10. चाण्डाल ब्राह्मण – जो मूर्ख है।

360 अपरार्क के अनुसार ब्राह्मणों के प्रकार–

1. जाति ब्राह्मण – जो केवल ब्राह्मण कुलोत्पन्न हो।
2. ब्राह्मण – जो वेद का कोई अंश पढ़ चुका हो।
3. क्षोत्रियब्राह्मण – जो छ· अंगों के साथ किसी वैदिक शाखा का ज्ञाता हो।
4. अनूचान ब्राह्मण – जो वेद-वेदांगों का ज्ञाता हो।
5. भ्रूण ब्राह्मण – जो यज्ञ करता हो और प्रसाद खाता हो।
6. ऋषिकल्प ब्राह्मण – जो लौकिक एवं वैदिक ज्ञान का ज्ञाता हो।
7. मुनि – जो मिट्टी एवं स्वर्ण में अन्तर न करता हो।
8. ऋषि – जो अविवाहित हो, पवित्र जीवन वाला हो, सत्यवादी हो, वरदान एवं शाप देने योग्य हो।

361. वात्स्यायन के कामसूत्र में वर्णित 64 कलाए निम्न हैं–

1. गायन
2. वादन
3 नर्तन
4. नाट्य
5. आलेख्य (चित्र लिखना)
6. विशेषक (मुखादि पर पत्र लेखन रचना)
7. चौक पूरना (अल्पना)
8. पुष्पशय्या बनाना
9. अंगरागादि लेपन
10. पच्चीकारी
11. शयन रचना (काम)
12. उदकवाद्य (जलतरंग बजाना)
13. जलक्रीड़ा (जलाघात)
14 रूप बनाना (मेकअप)
15 माला गूंथना
16. मुकुट बनाना
17. केश बदलना
18 कर्णभूषण बनाना

19. इत्र बनाना
20. आभूषण धारण करना
21. इन्द्रजाल (जादूगरी)
22. असुन्दर को सुन्दर बनाना
23. हस्तलाघव (हाथ की सफाई)
24. पाक कला
25. आपानक (पेय शरबत बनाना)
26. सूचीकर्म (सिलाई)
27. कलाबत्तू का काम
28. पहेली बुझाना
29. अन्त्याक्षरी
30. बुझौबल
31. पुस्तकवाचन
32. नाटक आख्यायिक दर्शन (प्रस्तुति)
33. काव्य समस्या पूर्ति
34. बेंत की बुनाई
35. सूत बनाना
36. बढईगिरी
37. वास्तुकला
38 रत्न परीक्षा
39. धातुकर्म
40. रत्नों की रंग परीक्षा
41 आकारज्ञान
42. उपवनविनोद (बागवानी)
43. मेढेपक्षी उड़ाना
44. पक्षियो की बोली सीखना
45. मालिश करना
46 केश मार्जन कौशल
47. गुप्त भाषा ज्ञान
48. विदेशी कलाओं का ज्ञान
49. देशी भाषाओं का ज्ञान
50. भविष्यवाणी (कथन)
51. कठपुतली नचाना
52. कठपुतली के खेल

53. सुनकर दोहराना
54. आशु काव्य क्रिया
55. भाव को उलटकर कहना
56. छलिक योग (धोखाधड़ी)
57. अभिधान (कोशज्ञान)
58. वस्त्रगोपन (नकाब)
59. द्यूतक्रीड़ा (जुआ)
60. रस्साकशी (आकर्षक क्रीड़ा)
61. बाल क्रीड़ा
62. शिष्टाचार
63. वशीकरण
64. व्यायाम

362. भारतीय इतिहास में प्रथम नगरवधू वैशाली की आम्रपाली 64 कलाओं में प्रवीण थी।

363. कश्मीरी पण्डित क्षेमेन्द्र ने 'कलाविलास' में कुल 382 कलाओं का उल्लेख किया है, यथा–

1. 64 जनोपयोगी कलाएं
2. 64 वेश्या संबंधी कलाएं
3. 64 स्वच्छकारिता संबंधी कलाएं
4. 32 धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष संबंधी कलाएं
5. 32 मात्सर्यशील प्रभावमान संबंधी कलाएं
6. 16 कायस्थ संबंधी
7. 10 भेषज संबंधी
8. 100 सार कलाएं

364. जैन ग्रंथ–'पन्नवणासूत्र' के अनुसार 18 प्राचीन लिपियां हैं, यथा–

1. बंभी
2. जवणालि
3. दोसापुरिया
4. खरोट्ठी
5. पुक्खरसारिया
6. भोगवइया
7. पहाराइया
8. उपअन्तरिक्खिया
9 अक्खरपिट्ठिया

10. तेवणइया
11. गि (गि) राइइया
12 अंक लिवि
13. गणित लिवि
14. गंधत्व लिवि
15. आदस लिवि
16 माहेसरी
17. दामित्नी
18 पोलिंदी

365. बौद्ध ग्रंथ 'ललितविस्तार' के अनुसार 64 प्राचीन लिपियां हैं, यथा--

1. ब्राह्मी
2. खरोष्टी
3. पुष्करसारी
4. अंग लिपि
5. अग लिपि
6. मगध लिपि
7. मागल्य लिपि
8. मनुष्य लिपि
9. अगुलीय लिपि
10. शकारि लिपि
11. ब्रह्मवल्ली लिपि
12. द्रविड़ लिपि
13. कनारि लिपि
14. दक्षिणी लिपि
15. उग्र लिपि
16. सांख्य लिपि
17 अनुलोम लिपि
18. ऊर्ध्वधनु लिपि
19. उदर लिपि
20. खास्य लिपि
21. चीन लिपि
22. हूर्ण लिपि
23 मध्याक्षरा विस्तार लिपि
24. पुष्प लिपि

25. देव लिपि
26. नाग लिपि
27 यक्ष लिपि
28. गन्धर्व लिपि
29. किन्नर लिपि
30 महोरग लिपि
31. असुर लिपि
32. गरुड़ लिपि
33. मृगचक्र लिपि
34. चक्र लिपि
35. वायुमरु लिपि
36. भौमदेव लिपि
37. अन्तरिक्षदेव लिपि
38. उत्तरकुरुद्वीप लिपि
39 अपरगौड़ादि लिपि
40. पूर्णदिह लिपि
41. उत्पेक्षप लिपि
42. निक्षेप लिपि
43. विक्षेप लिपि
44. प्रक्षेप लिपि
45. सागर लिपि
46 वज्र लिपि
47 लेख प्रतिलेख लिपि
48. अनद्रत लिपि
49. शास्त्रवर्त लिपि
50. गणावर्त लिपि
51. उत्प्रेक्षपार्वत लिपि
52. विक्षेपावर्त लिपि
53. पादलिखित लिपि
54 द्विरुन्तरपदसन्धिलिखित लिपि
55. दशोन्तरपदसिन्धुलिखित लिपि
56. अध्याहारिणी लिपि
57. सर्वरुत्संग्रहणी लिपि
58. विधानुलोम लिपि

59 विमिश्रित लिपि
60. ऋषितपस्वप्त लिपि
61 धरणीप्रेक्षणी लिपि
62 सर्वसारसंग्रहणी लिपि
63 सर्वपथ्यनन्द लिपि
64. सर्वभूत रुद्रग्रहणी लिपि

366. ब्राह्मण का उपनयन आठवें वर्ष में होता था।
367. क्षत्रिय का उपनयन ग्यारहवें वर्ष में होता था।
368. वैश्य का उपनयन बारहवें वर्ष में होता था।
369. ब्रह्मचारी ब्राह्मण के लिए पहुआ के सूत का वस्त्र होता था।
370. ब्रह्मचारी क्षत्रिय के लिए सन के सूत के वस्त्र होते थे।
371. ब्रह्मचारी वैश्य के लिए मृगचर्म का वस्त्र होता था।
372. ब्रह्मचारी ब्राह्मण का दण्ड सिर तक होना चाहिए।
373. ब्रह्मचारी क्षत्रिय का दण्ड मस्तक तक होना चाहिए।
374. ब्रह्मचारी वैश्य का दण्ड नाक तक होना चाहिए।
375. ब्रह्मचारी ब्राह्मण के लिए मूंज की मेखला होनी चाहिए।
376. ब्रह्मचारी क्षत्रिय के लिए मूर्वा की मेखला होनी चाहिए।
377. ब्रह्मचारी वैश्य के लिए पहुआ की मेखला होनी चाहिए।
378. गायत्री मंत्र ऋग्वेद की ऋचा है।
379. समिधा निम्नलिखित वृक्षों की होनी चाहिए--

1. पलाश
2. अश्वत्थ
3. न्यग्रोध
4. प्लक्ष
5 वैकंकत
6. उदुम्बर
7. बिल्व
8. चन्दन
9. सरल
10. शाल
11. देवदारू
12. खदिर

380. समिधा अंगूठे से मोटी नहीं होनी चाहिए तथा इसे छीलना
381 शिक्षण कार्य मौखिक होता था।

382 सामान्यत: विद्यार्थी जीवन 12 वर्ष का होता था।

383 चार व्रत–

(क) महानाम्नी व्रत
(ख) महाव्रत
(ग) उपनिषद व्रत
(घ) गोदान व्रत

384 मानव जीवन के लक्ष्य हैं–

(क) धर्म
(ख) अर्थ
(ग) काम
(घ) मोक्ष

385 सगोत्र कन्याओं से विवाह निषिद्ध था।

386. प्रवर कन्याओं से विवाह निषिद्ध था।

387 80,000 ऋषियों ने विवाह नहीं किया।

388 अगस्त्य से लेकर आठ विवाहित ऋषियों से ही वंशपरंपरा बढ़ी।

389. महाभारत के अनुसार चार मौलिक गौत्र–

(क) अंगिरा
(ख) कश्यप
(ग) वसिष्ठ और
(घ) भृगु

390. गण तीन हैं–

(क) देवगण
(ख) मनुष्यगण और
(ग) राक्षसगण

391. तीनों गणों के विभाजन–

देवगण	मनुष्यगण	राक्षसगण
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका
मृगशिरा	रोहिणी	अश्लेषा
पुनर्वसु	आर्दा	मघा
पुण्य	पूर्वा फाल्गुनी	चित्रा
हस्त	उत्तरा फाल्गुनी	विशाखा
स्वाति	पूर्वाषाढा	ज्येष्ठा
अनुराधा	उत्तराषाढ़ा	मूल

श्रवण	पूर्वभाद्रपद	धनिष्ठा
रेवती	उत्तराभाद्रपद	शततारका

392 27 नक्षत्रों को 3 दलों में विभक्त किया गया है। यही तीन दल देवगण और राक्षसगण हैं।

393. विवाह के प्रकार–

1 ब्राह्म विवाह
2. दैव विवाह
3. आर्ष विवाह
4. प्राजापत्य विवाह
5. आसुर विवाह
6. राक्षस विवाह
7. गंधर्व विवाह
8. पैशाच विवाह

394. कालिदास ने रघुवंश में विवाह-संबंधी मुख्य निम्न कृत्य लिखे हैं–

1. मधुपर्क
2. होम
3. अग्नि प्रदक्षिणा
4. पाणिग्रहण
5. लाजाहोम
6. आद्र क्षितारोपण

395. मधुपर्क में निम्न मिश्रण होना चाहिए–

1. ब्राह्म (मधु एवं दही)
2. ऐन्द्र (पायसका)
3. सौम्य (दही एवं घृत)
4. पौष्ण (घृत एवं मट्ठा)
5. सारस्वत (दूध एवं घृत)
6. मौसल (अनुराधा आसव एवं घृत)
7. वरुण (जल एवं घृत)
8. श्रावण (तिल का तेल एवं घृत)
9. परिव्राजक (तिल का तेल एवं खली)

396. श्रीकृष्ण की 16 पत्नियां थीं।

397. नियोग की दशाएं हैं–

1 जीवित या मृत पुत्रहीन होना चाहिए
2 कुलगुरु द्वारा निर्णीत पद्धति से नियोग

3. नियोजित पति का भाई, सपिण्ड आदि
4. कामुकता का पूर्ण अभाव
5. नियोजित पुरुष को घृत या तेल का लेप अनिवार्य है
6. केवल एक पुत्र तक नियोगी की अनुमति
7. स्त्री को अपेक्षाकृत युवा होना अनिवार्य

398. 12 घण्टे के दिन को पांच भागों में विभक्त किया गया है–
1. प्रातः या उदय
2. संगव
3. माध्यन्दिन या मध्याह्न
4. अपराह्न, और
5. सायांह्न या अस्तगमन या साय

399. प्रत्येक काल तीन मुहूर्तों का होता है।

400. गौण स्नान निम्नलिखित हैं–
1. वारुण स्नान
2. मन्त्र स्नान
3. भौम स्नान
4. आग्नेय स्नान
5. वायव्य स्नान
6. मानस स्नान

401. तीन पवित्र अग्नियां थीं–
1. आह्वानीय
2. गार्हपत्य
3. दक्षिणाग्नि

402. जप के तीन प्रकार हैं–
1. वाचिक (स्पष्ट उच्चारित)
2. उपांशु (अस्पष्ट)
3. मानस (मन में कहना)

403. पंच महायज्ञ–
1. भूतयज्ञ
2. मनुष्य यज्ञ
3. पितृ यज्ञ
4. देव यज्ञ
5. ब्रह्म यज्ञ

404. जलाशय के प्रकार हैं–

1 कूप
2. वापी
3. पुष्करिणी
4. तड़ाग

405. वानप्रस्थ के प्रकार–
1. पचमानक
2. अपचमानक

406. संन्यास के प्रकार–
1. कुटीचक
2. बहूदक
3 हंस
4. परमहंस

407. मेधातिथि के अनुसार–"शास्त्र में लिखे गये कर्तव्यों से छुटकारा ले लेना संन्यास नहीं है, प्रत्युत अहंकार छोड़ देने को संन्यास कहते हैं।"

408. ब्राह्मण की 10 श्रेणियां हैं–
(क) 5 गौड
(ख) 5 द्रविड

409. गुजराती ब्राह्मण 84 उपजातियों में विभक्त हैं।

410. पंजाब के सारस्वत 470 उपविभागों में विभक्त हैं।

411. संस्कार शब्द गृहसूत्रो में नहीं मिलता परन्तु धर्मसूत्रों में पाया जाता है।

412. पारस्कर ने ही ब्राह्मणों के नाम के आगे शर्मा आदि जोड़ने की व्यवस्था दी है।

413. कृष्ण की पत्नियां जो सती हुईं–
1. रुक्मिणी
2. गांधारी
3. शैव्या
4. हेमवती
5 जाम्बवती

414. देवदासी प्रथा को दक्षिण भारत में भाविनों की प्रथा कहा जाता है।

415. राजतिलक समारोह को 'राजसूय' कहते हैं।

416. राजा को वेतनस्वरूप उत्पादन का 16 प्रतिशत दिया जाता था।

417. हिन्दू राजा निरंकुश नहीं थे।

418. नेमी, सुदास, नहुष, सुमुख, वेन आदि राजा जब निरंकुश हुए पण्डितों एवं जनता ने उन्हें मार डाला।

419. मार्गों पर दूरी बताने के लिए दो सूचकांकों की दूरी 1940 गज थी।

420 चार प्रकार के शस्त्रों का प्रयोग करने वाली सेना को चतुरंगिणी कहा जाता था।

421 पाणिनी शुंगो को भारद्वाज गौत्र के ब्राह्मण बताते हैं।

422 गुप्तकाल में विष्णु के अनेक नाम प्रचलित हो गये–

1. चक्रामृत
2. गदाधर
3. जनार्दन
4. नारायण
5. वासुदेव
6. गोविन्द

423 भूमिदान का सबसे प्राचीन अभिलेखीय प्रमाण प्रथम शताब्दी के एक सातवाहन अभिलेख में मिलता है जिसमें अश्वमेधयज्ञ में एक गांव दान करने की चर्चा है।

424 अमरकोश में भूमि के प्रकार हैं–

1. उर्वरा
2. ऊसर
3. मरु
4. अप्रत
5. सद्वल
6. पकिल
7. जलप्रायमनुपम
8. कच्छ
9. शर्करा
10. शर्कावती
11. नदीमातक
12. देवमातृक

425 भूमि जोतने वाले नौकर को नकद वेतन या उपज का छठा हिस्सा मिलता था।

426. भूमि जोतने वाले नौकर, जो खाना, कपड़ा नहीं लेते थे, उन्हें उपज का तीसरा हिस्सा मिलता था।

427. कुषाण-काल में भारत में सिले हुए कपड़ों का प्रचलन प्रारंभ हो चुका था।

428. वराहमिहिर के अनुसार आवास निम्न प्रकार के थे–

1. ब्राह्मण का आवास पांच कमरे का
2. क्षत्रिय का आवास चार कमरे का
3. वैश्य का आवास तीन कमरे का, और
4. शूद्र का आवास दो कमरे का।

429 गुप्तकाल में न्याय परीक्षा–

1. ब्राह्मण की परीक्षा तुला से
2. क्षत्रिय की परीक्षा अग्नि से
3. वैश्य की परीक्षा जल से, और
4. शूद्र की परीक्षा विष से होती थी।

430. गुप्तकाल में हत्या दण्ड–
    1. ब्राह्मण की हत्या के लिए बारह नामक महाव्रत तप
    2. क्षत्रिय की हत्या के लिए नौ महाव्रत तप
    3. वैश्य की हत्या के लिए तीन महाव्रत तप
    4. शूद्र की हत्या के लिए दो महाव्रत तप

431. गडा खजाना मिलने पर–
    1. क्षत्रिय पाये तो एक–चौथाई राजा को देगा, एक–चौथाई ब्राह्मण को देगा और आधा स्वयं रखेगा
    2. ब्राह्मण संपूर्ण अपने पास रखेगा
    3. वैश्य पाये तो एक-चौथाई राजा को, आधा ब्राह्मण को, शेष अपने पास रखेगा।
    4. शूद्र पाये तो बारह भागों में विभक्त करके पांच भाग राजा को, पांच भाग ब्राह्मण को और दो भाग स्वयं रखेगा

432. वैश्य थे–
    1. वणिक
    2. श्रेष्ठी
    3. सार्थवाह

433. ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार विष्णु के 39 अवतार हुए परंतु 10 अवतार सहज स्वीकार किए जाते हैं।

434. शैवधर्म सम्प्रदाय चार बताए हैं–
    1. शैव
    2. पाशुपत
    3. कापालिक
    4. कालामुख

435. शैवमत के चार पद हैं–
    1. विद्या
    2. क्रिया
    3. भोग
    4 चर्या

436 शैवमत के तीन पदार्थ–

1. पति
2. पशु
3. पाश

437. नालन्दा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय निम्नलिखित थे–
1. रत्नासागर
2. रत्नोदचि
3. रत्नरंजक

438. नालन्दा विश्वविद्यालय में आठ महाविद्यालय थे।

439. नालन्दा के प्रसिद्ध आचार्य थे–
1. नागार्जुन
2. आयदेव
3. अंग
4. शलिभद
5. वसुबंधु
6. दिंग्नाग
7. धर्मपाल
8. चन्द्रपाल
9. प्रभागित्र

440. राजपूतों की विदुषियां–
1. अवन्ति–राजकवि राजशेखर की पत्नी
2. अक्का देवी–सोलंकी राजा विक्रमादित्य की बहन
3 मदालसा–संस्कृत की कवयित्री
4. इन्दुलेखा
5. मरुला
6 शीला
7. सुभद्रा
8. लक्ष्मी
9. विज्जिका
10. मोरिका
11. पद्मश्री

441. ब्राह्मण हरिश्चन्द्र ने एक क्षत्रिय कन्या भद्रा से विवाह किया था।

442. प्रथम बौद्ध महासभा–
1. 438 ई.पू.
2. स्थान–राजगृह

3. अध्यक्ष–महाकश्यप

443. द्वितीय बौद्ध महासभा–

1. 383 ई.पू.

2 स्थान–वैशाली

444. तृतीय बौद्ध महासभा–

1. अध्यक्ष–स्थाविर मोद्गलिपुत्र तिष्य

2. काल–अशोक के शासनकाल में

445. चतुर्थ बौद्ध महासभा–

1. कनिष्क के समय

446. तृतीय बौद्ध महासभा के अवसर पर अध्यक्ष तिष्य ने 'कथावस्तु' नामक ग्रंथ लिखा।

447. बौद्ध ग्रंथ पिटक कहलाते हैं। इसके विभाजन हैं–

1. सूत्त

2. विनय

3. अभिधम्म

448. बौद्ध शिष्य हैं–

1. भिक्षु

2. उपासक

449. गौतम बुद्ध ने 29 वर्ष की अवस्था (533 ई.पू.) में गृह त्याग किया।

450. गौतम बुद्ध ने 35 वर्ष की अवस्था मे बुद्धत्व प्राप्त किया।

451. गौतम बुद्ध ने 80 वर्ष की अवस्था में गोरखपुर के कुशीनगर में निर्वाण प्राप्त किया।

452. गौतम बुद्ध–

1.	जन्म	– लुम्बिनी ग्राम
2	ज्ञानप्राप्त	– बोधगया
3.	धर्मचक्र प्रवर्तन	– सारनाथ
4.	निर्वाण	– कुशीनगर
5.	वैसाखपूर्णिमा	– जन्म, ज्ञान और मृत्यु

453 बौद्ध की शाखाएं–

1. महासांधिक–कठोर नियम में विश्वास

2. स्थाविर वादिन–कठोर नियम मे विश्वास

454. मौर्य साम्राज्य में अन्तर्जातीय विवाह निषेध थे।

455 जैन ग्रंथों को 14 पर्व कहा गया है।

456. दिगम्बर – वस्त्रहीन जैन

457 श्वेताम्बर – श्वेत वस्त्रधारी जैन

458 द्वितीय जैन परिषद 512 ई.पू में गठित हुई।

459 शंकराचार्य–

1. केरल के थे
2. जन्म–788 ई.
3. जन्म-स्थल–मालावार का देहात
4. परिवार–ब्राह्मण
5. संपूर्ण भारत में चार मन्दिर

460 जैन धर्म की ईश्वर संबंधी अवधारणा है–अनीश्वरवादी

461. बुद्ध ने अष्टांग मार्ग प्रतिपादित किया।

462. इतिहासकार बुद्ध दर्शन को यथार्थवादी दर्शन मानते हैं।

463 'जातक' बौद्ध धर्म की साम्प्रदायिक पुस्तक है।

464. बुद्ध ने अपने प्रवचन मगधी भाषा में दिये।

465 भागवत धर्म कर्म पर आधारित है।

466. भागवत धर्मावलंबी भगवान विष्णु की उपासना करते हैं।

467. भागवत धर्म में नौ प्रकार की भक्ति स्वीकार करते हैं।

468. भागवत धर्म का विभाजन–रामभक्त रामावत् सम्प्रदायी हो गये।

469. भागवत धर्म के अवतार–

1. लीलावतार
2. गुणावतार
3. पुरुषावतार

470. चार आश्रम–

1. ब्रह्मचर्य
2. गृहस्थ
3. वानप्रस्थ
4. संन्यास

471. ब्राह्मण धर्म की शाखाएं–

1. शैव
2. वैष्णव

472. ब्राह्मण धर्म के सबसे समर्थ आचार्य थे–शंकराचार्य

473 शतपथ ब्राह्मण में विष्णु को सर्वश्रेष्ठ देवता माना गया है।

474. आर्यों के परस्पर युद्ध का कारण था–पशुधन एवं भूमि।

475. आर्यों के प्रसार का प्रमुख स्रोत था–लौह अस्त्र-शस्त्र

476. उत्तर वैदिक काल में आर्यों की गतिविधियों का केंद्र यमुना से बंगाल की

सीमा तक था।

477 ऋग्वैदिक काल में मुख्य फसल जौ थी।

478 परम्पराओं के अनुसार स्वायंभू मनु भारत के प्रथम राजा थे।

479. ऋग्वेद में निम्नलिखित धातुओं का उल्लेख है–

1. सोना
2. चांदी
3. तांबा
4. कांसा

480. चतुर्वर्ण का जन्म प्रजापति देवता से माना जाता है।

481. पुराण वैदिक साहित्य का अंग नहीं है।

482. यजुर्वेद गद्य में है।

483. वह देवता जो असुर भी है–वरुण (यह जरथुष्ट्र धर्म के देवता अहुरमज्द के समान है)।

484. ओ३म् शब्द वैदिक साहित्य में सबसे पवित्र माना जाता है।

475 उपवेद चरित्र निरपेक्ष है।

486. दासप्रथा संभवतः वैदिक (ऋग्वेद)-कालीन है।

487. ऋग्वैदिक सरस्वती अब लुप्त हो गई है।

488 पुरोहितों की पदलिप्सा के कारण दस राजाओं का युद्ध हुआ।

489. गायत्री मंत्र यजुर्वेद में संकलित है।

490. आर्यों ने वनों को साफ करने में अग्नि का प्रयोग किया।

491. ऋग्वैदिक काल में परिवार का मुखिया था–कुलप।

492. ऋग्वैदिक काल में जन का मुखिया था–गोप।

493. ऋग्वैदिक काल में अनार्य व्यापारी कहलाते थे–पणि।

494 साम्वेद संगीतमय है।

495. उपनिषदों में पशुबलि निषेध है।

496. वेदांगो से ज्ञात होता है कि चिकित्सक–आंख, हृदय और फेफड़े आदि रोग एवं उनके उपचार से परिचित थे।

497 उत्तरमीमांसादर्शन को वेदांत भी कहते हैं।

498. ऋग्वेद का नौवां मंडल सोम को समर्पित है।

499. उपनिषद के एक ऋषि उद्दालक भौतिकवादी थे।

500. वैदिककाल में ज्यामिति का माप का सिद्धान्त विकसित हो गया था।

501 राजसत्ता उद्‌भव का सिद्धांत ऐतरेय ब्राह्मण में संकलित है।

502. बाढ़ विनाश आरण्यक ग्रथ मे संकलित है।

503. धर्मशास्त्र की प्राचीनतम पुस्तक–मनुस्मृति।

504. कुरु कबीले का क्षेत्र दोआब का ऊपरी क्षेत्र।

505. ऋग्वैदिक आर्य समाज पितृसत्तात्मक था।

506. संगम युग में नारी की स्थिति–

1. नारी उच्च शिक्षित थी।
2. नारी को सम्पत्ति का अधिकार नहीं था।
3. विधवाओं को अमानवीय स्थिति में रहना पड़ता था।
4. सतीप्रथा अज्ञात नहीं थी।
5. सैनिक शिविरों में नारी को राजा की सुरक्षा के लिए नियुक्त किया जाता था।
6. नृत्य करने वाली स्त्रियों की स्थिति को घर की स्त्रियों के लिए एक प्रकार से खतरा समझा जाता था।
7. निम्नवर्ग की नारी को कृषि श्रमिक नियुक्त किया जाता था।
8. कवयित्री पुरस्कृत की जाती थी।
9. बाल-विवाह प्रचलित थे।
10. विवाह संबंध माता-पिता निश्चित करते थे।

507. संगम युग में सामाजिक संरचना–

1. चार जातियां थीं–
   (क) हडियाल
   (ख) पानन
   (ग) परेयान
   (घ) कादम्बन
2. राजाओं का समाज में प्रथम स्थान था।

508. संगम युग में दासप्रथा नहीं थी परंतु कृषि श्रमिक दास–तुल्य ही थे।

509. संगम काल उत्तर एवं दक्षिण की संस्कृति का समन्वय काल था।

510 गुप्तकाल की प्रसिद्ध कवयित्री थी–भट्टारिका।

511. गुप्तकाल में सार्थ के साथ होते थे–

1. मण्डी सार्थ
2. वहलिका
3. भारवाह
4. औदरिका
5. कार्पटिक

512. ब्रह्म समाज की स्थापना का उद्देश्य एक ईश्वर की आराधना करना था।

513. राजा राममोहन राय ने सतीप्रथा विरोधी कानून बनवाया।

514. राजा राममोहन राय ने वर्ष 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की।

515. महाराष्ट्र में वर्ष 1849 में ब्रह्म समाज की एक शाखा परमहंस सभा खोली गई।
516. डॉ. आत्माराम पाडुरंग ने प्रार्थना सभा की स्थापना की।
517 केशवचन्द्र सेन ने भारतीय ब्रह्म समाज की स्थापना की।
518. एम.जी. रानाडे ने दक्षिण शिक्षा समिति की स्थापना की।
519. स्वामी दयानन्द ने वर्ष 1875 में आर्य समाज की स्थापना की।
520. स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।
521. शिवनारायण अग्निहोत्री ने देव समाज की स्थापना की।
522. भारत में प्रकाशित प्रथम पत्रिका थी–बंगाल गजट।
523. महात्मा गांधी ने अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना की।
524 डॉ. भीमराव अंबेडकर ने अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ की स्थापना की।
525. देवेन्द्रनाथ टैगोर ने आदि ब्रह्म समाज स्थापित किया।

महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक तथ्य

526. मनु[1] एवं याज्ञवल्क्य[2] के अनुसार–
"गर्भधारण मासिक प्रवाह की अभिव्यक्ति के उपरांत 16 रातें।"
527. आपस्तम्ब[3] गृह सूत्रानुसार–
"मासिक प्रवाह की चौथी रात से सोलहवीं रात युग्मता वाली रातें नर बच्चे के लिए उपयुक्त (सम दिनों में चौथे दिन के उपरांत)।"
528. कन्या के लिए विषम दिनों में समागम करें।
529. अमावस्या और पूर्णमासी, अष्टमी और चतुर्थी को गर्भाधान नहीं करना चाहिए।[4]
530. ज्योतिष संबंधी[5] विस्तार के अनुसार–
"गर्भाधान के लिए मूल एवं मघा नक्षत्रों को भी छोड़ देना चाहिए।"

---

[1] मनुस्मृति–3/46

[2] याज्ञवल्क्य–1/79

[3] आपस्तम्बगृहसूत्र–9/1, वैखानस–3/9, याज्ञवल्क्य–1/79, मनु–3/48

[4] मनु 4/128 1/79

[5] 1/80

भारतीय दर्शन

मनुष्य ने अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के उपरांत मानव जीवन, उसके आदि और अन्त, सृष्टि-सृजन, ब्रह्माण्ड, प्रकृति और उसके सुखप्रद या दुःखप्रद प्रवृत्तियों के नियंत्रणकर्ता, आत्मा, शरीर आदि पर गंभीरता से विचार किया।

भारत के वास्तविक दर्शन का प्रारंभ आर्यों के वैदिक युग से होता है।

आर्यों ने सर्वप्रथम प्रकृति की विविध शक्तियों और विभूतियों का देवतारूप दर्शन किया।

मनुष्य ने आदिदेव या एकदेव की कल्पना की और उसे 'पुरुष'[1] कहा।

'पुरुष' की आधिकारिक बोधगम्य स्वरूप की प्रतिष्ठा हिरण्यगर्भ रूप में की गई। इसके विषय में कहा गया कि[2]–

"उसके माध्यम से आकाश प्रकाशमान है, पृथ्वी स्थित है और स्वर्ग प्रतिष्ठित है। उसी ने अन्तरिक्ष में रजोलोक की माप की। सूर्य उदित होकर उसी के ऊपर प्रकाश करता है। वह देवताओं का प्राण और पृथ्वी का जनपिता है। वह हमारा नाश न करे, वह सत्य धर्म है। उसने दिव्यलोक को उत्पन्न किया। उसी से सुप्रकाश की उत्पत्ति हुई।"

शनैः-शनैः वैदिक ऋषियों ने पुरुष, सत्, एकदेव, हिरण्यगर्भ से 'ब्रह्म' की कल्पना की।

सृष्टि-सृजन[3] से संबंधित दर्शन–"आदि में न तो सत् ही था और न असत् ही। इन सभी के अतिरिक्त–'एक' था। उसी 'एक' के मन में काम उत्पन्न हुआ, फिर सृष्टि सृजन हुआ।"

सृष्टि के साधन थे–रेतः, महिमा, स्वधा और प्रति।

सांसारिक जीवन को तुच्छ मानकर पुनर्जन्म से बचने के लिए ब्रह्म का ज्ञान अपेक्षित माना गया।

ब्रह्म से सभी की उत्पत्ति होती है।[4]

ब्रह्म और आत्मा के संबंध में छान्दोग्य और बृहदारण्यक उपनिषदों में विस्तृत जानकारी है।

आत्मन् जीवात्मा है, ब्रह्मन् परमात्मा है और जीवात्मा ही परमात्मा है।

ग्वेद-1/164/46

ग्वेद-10/121/1-9

ग्वेद-10/129/7

न्दोग्योपनिषद-3-14/1-4

543. उपनिषदों का मौलिक कथनसूत्र है–"तत् त्वम् असि" अर्थात् 'तू वह है'।

544. उपनिषदों में ऋग्वैदिक काल के बहुदेवतावाद और यज्ञ, तप, बलि की निरर्थकता को स्पष्ट करके आत्मन् तथा ब्रह्मन् की एकता और उसके द्वारा समस्त जीवन की एकता पर बल दिया गया।

545. इस लौकिक जीवन में ही पुरुष (आत्मा) और प्राज्ञ आत्मा (परमात्मा) का मिलन संभव है।[1] मिलन होने पर सांसारिक संबंध टूट जाते हैं।

546. आत्मन् और ब्रह्मन् की एकता और उसके मिलन का सिद्धांत भारतीय दर्शन की महत्त्वशाली और क्रांतिकारी प्रगति थी।

547. कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धान्त का आभास भी उपनिषदों में प्राप्त होता है।

548. कर्म और उसके फल के अटल नियम का प्रतिपादन किया गया और सुख-दुःख का समस्त उत्तरदायित्व मनुष्य पर रखा गया।

549. उपनिषदों में पुनर्जन्म को कर्म के सिद्धान्त का एक आवश्यक अंग मान लिया गया।

550. नित्य नये रूपों को जन्म देने वाले स्वर्णकार की भांति आत्मा भी कर्म के अधीन एक योनि से दूसरी योनि में संक्रमित होती रहती है।

551. सकाम मनुष्य अपने कर्मों द्वारा पुनर्जन्म पा सकता है।

552. जो निष्काम है, इच्छाओं से परे है, जिसकी इच्छाएं पूरी हो चुकी हैं अथवा केवल आत्माविषयक है वह तो ब्रह्म बन जाता है, चाहे वह इसी लोक में क्यों न जीवित रहे। इच्छाओं के नष्ट होते ही मानव अमृत हो जाता है, वह ब्रह्म का आनन्द भोगने लगता है।

553. ब्रह्म की ओर ले जाने वाले मार्ग पर केवल तपस्वी, श्रद्धावान, ज्ञान के द्वारा आत्मा का अन्वेषण करने वाले व्यक्ति ही जाते हैं।[2]

554. उपनिषदों के बाद भारतीय दर्शन की दो प्रमुख शाखाएं विकसित हुईं–

(क) वैदिक

(ख) अवैदिक

555. वैदिक शाखा की उपशाखाएं थीं–

(क) न्याय

(ख) वैशेषिक

(ग) सांख्य

(घ) मीमांसा

(ङ) वेदांत

556. अवैदिक शाखा की उपशाखाएं थीं–

(क) चार्वाक

(ख) बौद्ध

(ग) जैन

557. चार्वाक के अतिरिक्त समस्त दर्शन मरणोत्तर विधान मानते हैं।

558. उपनिषदों का आदेश है कि आध्यात्मिक, अभ्युत्थान के लिए ज्ञान के सोपान बनाकर तप, समाधि और योग के द्वारा चिन्मय प्रवृत्तियों को जागृत कर सदैव उन्नति करें।

न्याय

559. न्याय के संस्थापक गौतम ऋषि माने गये हैं।

560. न्यायदर्शन का प्रथम ग्रंथ गौतम का न्यायसूत्र है।

561. न्यायदर्शन पर चौथी सदी में वात्स्यायन ने न्यायभाष्य नामक टीका लिखी।

562. गंगेश के तत्त्व-चिन्तामणि ग्रंथ से बारहवीं सदी में नव्य न्यायदर्शन का प्रारम्भ हुआ।

563. मध्ययुग में नवद्वीप या नदिया (बंगाल) में न्याय दर्शन के प्रख्यात पंडित थे– वासुदेव, प्राचार्य चैतन्य, दीधिति, रघुनाथ, जगदीश और गदाधर।

564. न्यायदर्शन तर्कविद्या है।

565. जिन वस्तुओं की सत्ता है वे सभी ज्ञेय हैं, जो ज्ञेय नहीं उनकी सत्ता भी नहीं है–यह न्यायदर्शन का सिद्धान्त है।

566. न्यायदर्शन-शास्त्र में सोलह पदार्थों पर विचार किया जाता है–

1. प्रमाण
2. प्रमेय
3. संशय
4. प्रायोजन
5. दृष्टान्त
6. सिद्धान्त
7. अव्यव
8. तर्क
9. निर्णय
10. वाद
11. जल्प
12 वितण्डा

13. हेत्वाभास
14. छल
15 जाति, और
16. निग्रह स्थल

567. न्यायशास्त्र में निम्नलिखित को प्रमाण माना गया है–
1. प्रत्यक्ष
2. उपमान (तुलना)
3. शब्द (बोधगम्य)
4. अनुमान

568. अनुमान तीन प्रकार के हैं–
1. कारण से कार्य
2. कार्य से कारण, और
3. निष्कर्ष

569. न्याय के संवाक्य के पांच भाग हैं–
1. प्रस्थापना
2. कारण
3. दृष्टांत
4. कारण की पुनरावृत्ति, और
5. निष्कर्ष

570. प्रमाण द्वारा जिस पदार्थ का ज्ञान होता है उसे प्रमेय कहते हैं

571. न्यायशास्त्र में निम्नलिखित प्रमेय हैं–
1. आत्मा
2. शरीर
3. इन्द्रियां
4. अर्थ
5. बुद्धि
6. मनस
7. प्रवृत्ति
8. दोष
9. प्रेम्यभाव
10. पुनर्जन्म
11. कलदु:ख, और
12. अपवर्ग

572. न्यायदर्शन के अनुसार–"शरीर, इन्द्रियों और मन से आत्मा पृ

573. आत्मा सनातन, अनादि और अनन्त है।
574. आत्मा का शरीर से संबंध हो जाना ही जन्म है।
575. आत्मा का शरीर से संबंध विच्छेद ही मृत्यु है।
576 आत्मा अनेक है–न्यायदर्शन।
577. आत्मा निजी है इसलिए अनुभूतियां भी निजी हैं।
578. संसार का सृजन करने वाली आत्मा ईश्वर है।
579. मुक्ति दु:ख का अत्यन्ताभाव है–न्यायदर्शन।
580. विश्व में आत्मा को तभी तक जन्म बधन में बेधना पड़ता है, जब तक उसे कर्मों का फल भोगने के लिए शरीर का माध्यम आवश्यक होता है। जैसे ही ऐसे कर्मों की परम्परा का अन्त हो जाता है, पुनर्जन्म नहीं होता।
581. न्यायदर्शन के अनुसार उपर्युक्त वर्णित 16 विषयों का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।

वैशेषिक

582. वस्तुओं में नये गुणों और कर्मों का उत्पन्न होना तथा पूर्ववर्ती गुणों और कर्मों का विनष्ट होना लगा रहता है।
583. वैशेषिक दर्शन के प्रणेता कणाद ऋषि थे।
584 'विशेष' नामक पदार्थ की विशिष्ट कल्पना करने के कारण कणाद दर्शन को 'वैशेषिक' कहा गया।
585. इसे औलूक्य दर्शन भी कहते हैं।
586. धर्म साधक कर्म दो प्रकार के हैं–
    (क) सामान्य
    (ख) विशेष
587. सामान्य धर्म में–श्रद्धा, अहिंसा, प्राणि-हित-साधन, सत्य वचन, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अनुपधा (भावशुद्धि), अक्रोध, स्नान, पवित्र-द्रव्य-सेवन, विशिष्ट देवता-भक्ति उपासना और अप्रमाद।
588 विशेष धर्म–चारों वर्ण और चारों आश्रम के कर्तव्य रूप हैं।
589 वैशेषिक दर्शन के प्रमेय पदार्थ में–द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य और विशेष, समवाय आदि सन्निहित हैं।
590 द्रव्य कोटि में–पंचभूत, काल, दिक्, आत्मा और मन समाहित हैं।
591 गुण 17 हैं, यथा–रूप, रस, गंध, स्पर्श, सांख्य, परिणाम, पृथकत्व, संयोग, विभाग परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दु:ख, इच्छा, द्वेष और प्रयत्न।
592 कर्म है–उत्प्रेक्षण, अवक्षेपण, आकुचन, प्रसारण और गमन।
593 दसवीं सदी में टीका लिखी गई

(क) उदयनकृत किरणावली, और

(ख) श्रीधरकृत न्यायकन्दली

594.पांचवी सदी में 'पदार्थ-धर्म-संग्रह' नामक भाष्य लिखा गया।

सांख्य–दर्शन

595. सांख्य से तात्पर्य है–विवेक ज्ञान।
596. सांख्य–दर्शन के प्रवर्तक हैं–कपिल ऋषि। ग्रंथ–'सांख्य–सूत्र' है।
597. ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका नामक ग्रंथ लिखा।
598. गौड़पाद ने सांख्यकारिकाभाष्य लिखा।
599. सांख्य के तीन भाग हैं–

(क) सत्व

(ख) रज, और

(ग) तम

600. प्रकृति में होने वाले परिवर्तन और परिणाम उसकी आन्तरिक क्षमता की अभिव्यंजना हैं।
601. सांख्य दर्शन में 25 तत्त्व स्वीकार किये गये हैं–

(क) स्वरूप – प्रकृति
संख्या – एक
तत्त्व – प्रधान

(ख) स्वरूप – विकृति
संख्या – 16
तत्त्व – पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कार्मेन्द्रियां, पांच महाभूत, एक मन

(ग) स्वरूप – प्रकृति-विकृति
संख्या – सात
तत्त्व – महत् तत्त्व, अहंकार और तन्मात्र तथा पुरुष

602. सांख्य–दर्शन में पुरुष आत्मा के समकक्ष है।
603. पुरुष न तो बन्धन में रहता है और न उसका मोक्ष होता है।
604. प्रकृति ही पुरुष के लिए बंधन उत्पन्न करती है और मोक्ष मुक्त करता है।

योग–दर्शन

605 पतंजलि के योगसूत्र से योग–दर्शन का उत्कर्ष हुआ।

606. योगसूत्र पर व्यास ने भाष्य लिखा।

607. वाचस्पति मिश्र ने तत्त्ववैशारदी नामक टीका लिखी।

608. योग–दर्शन में 'चित्त' को प्रधान माना है।

609. इसकी पांच प्रवृत्तियां हैं–

1. प्रमाण (समुचित ज्ञान)
2. विपर्यय (मिथ्या ज्ञान)
3. विकल्प (कल्पना)
4. निद्रा (नींद), और
5. स्मृति (स्मरण)

610. भ्रान्तियां पांच प्रकार से उत्पन्न होती हैं–

1. अविद्य
2. अस्मिता
3. राग
4. द्वेष
5. अभिनिवेश

611. इन भ्रान्तियों से मुक्त होने अथवा इनको दूर करने के लिए चित्त की वृत्तियों का निरोध आवश्यक है।

612. चित्त के निरोध की पांच अवस्थाएं हैं। इन्हें चित्तभूमियं कहते हैं–

1. क्षिप्त
2 मूढ
3. विक्षिप्त
4. एकाग्र
5. निरुद्ध

613 इसके अतिरिक्त दो भूमियां हैं–

1. सम्प्रज्ञात योग
2. असम्प्रज्ञात योग

614. सम्प्रज्ञात योग की चार श्रेणियां हैं–

1. सवितर्क
2. सविचार
3. आनन्द
4. सास्मित

615. असम्प्रज्ञात योग 'निरोध' की अवस्था है।

616. योग के आठ अंग बताये गये हैं–

1 यम

2. नियम
3. प्राणायाम
4. प्रत्याहार
5. धारणा
6. ध्यान
7 समाधि
8. आसन

617. यम के पांच विभाग हैं–
1. शौच
2. संतोष
3. तप
4. स्वाध्याय
5. ईश्वर प्रणिधान

618. आसन का अभिप्राय है--शरीर को एक ही स्थिति में रखना।

619. प्राणायाम का अर्थ है–श्वास को कुछ देर तक नियंत्रित करना।

620. प्रत्याहार से स्पष्ट है–इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाकर एक ओर स्थिर करना।

621. धारणा के अन्तर्गत चित्त को किसी विशेष विषय पर लगाना।

622. ध्यान का अभिप्राय है–विचार में लीन होना।

623. समाधि का अर्थ है कि तन्मय होकर अवस्थित होना।

624. योग के अन्तर्गत मुक्ति को कैवल्य कहा जाता है, जिसमें पुरुष प्रकृति के बंधन से मुक्त होता है।

मीमांसा–दर्शन

625. मीमांसा से तात्पर्य है–वस्तु के स्वरूप का यथार्थ निर्णय।

626. इस दर्शन का आधार--जैमिनिकृत–'पूर्वमीमांसासूत्र' ग्रंथ है।

627. मीमांसा–दर्शन के अनुसार–जगत् और उसके विषय सत्य हैं।

628. कुमारिलभट्ट ने पांच तत्त्वों का वर्णन किया है–
1. द्रव्य
2. गुण
3. कर्म
4. सामान्य
5. अभाव

629 द्रव्य वह माना गया है जिसका परिमाण है।

630. पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, प्रकाश, अंधकार, दिक्, काल, शब्द, आत्मा और मन द्रव्य हैं।
631. जितने जीव हैं उनकी उतनी ही आत्मा है।
632. कुमारिलभट्ट ने गुण 24 बताए हैं।
633. मीमांसा में कर्म गोचर है जिससे पदार्थों में संयोग और वियोग होता है।
634. संयोग और वियोग की उद्भूत शक्ति को अपूर्व कहा जाता है।
635. मीमांसानुसार–जगत का न आदि है न अन्त।
636. मीमांसा–दर्शनानुसार–सभी ज्ञान अपने आप में प्रामाणिक हैं।
637. भ्रम अज्ञान नहीं है, बल्कि मिथ्या सत्य का रूप है, जो कभी नहीं होता। इसे अख्यातिवाद कहते हैं।
638. मीमांसा में शब्द महत्त्वपूर्ण है।
639. मीमांसा दार्शनिक शब्द को नित्य मानते हैं।
640. कुमारिलभट्ट के अनुसार शब्द में अभिधाशक्ति है।
641. जैमिनि ने पूर्वमीमांसा में पुरुषो के समान स्त्रियों को भी यज्ञादि करने के अधिकार को मान्यता दी।
642. मोक्ष के विषय में मीमांसा दार्शनिक अपेक्षाकृत मौन ही हैं।

वेदान्त

643. वेदान्त वेद के अन्तिम भाग हैं।
644. बादरायण ने अपने ग्रंथ 'वेदान्तसूत्र' का प्रणयन किया।
645 गोविन्द के शिष्य शंकर (शंकराचार्य) ने वेदान्त का विशद प्रतिपादन किया।
646 शंकराचार्य ने निम्नलिखित ग्रंथो की रचना की–

1. आत्मबोध
2. दक्षिणामूर्ति
3. आनन्दलहरी
4. उपदेशसाहस्री
5. शिवापराधक्षमापण
4. हस्तामलक

647 शंकराचार्य ने–

1. बौद्ध सिद्धान्तों का विरोध किया मगर बुद्ध की प्रशंसा की।
2. मीमांसा–दर्शन का खण्डन किया मगर वैदिक निर्देशों में आस्था प्रकट की।
3. ब्रह्मज्ञान का प्रचार किया और विष्णु, शिव, सूर्य, शक्ति आदि देवताओं को विहित माना

648. शंकराचार्य के अनुसार–

1. जगत् की विविधता में एकता है।
2. विभिन्न वस्तुओं में एक ही सत्ता है, जो अनन्त सत्य है।
3. यह सत्ता चैतन्य और आनन्दयुक्त है।
4. यह सत्ता देश, काल और अवस्था से परे है।
5. सत्ता को नाम, गुणों और विशेषताओं से आबद्ध नहीं किया जा सकता है।
6. सत्ता ब्रह्म है।
7. इसी को प्रकृति और भाषा कहते हैं।
8. माया वह है, जिसमें ब्रह्म के अनेक रूप हैं।
9. ब्रह्म को माया के कारण ईश्वर कहते हैं।
10. माया के कारण ही वह अत्यन्त सूक्ष्म है।
11. जगत् ब्रह्म का ही रूप है, जो सत्य है।
12. वह असत् नहीं है।
13. सत्य वह वस्तु है जिससे उस वस्तु का बोध होता है।

649. रामानुज ने भी वेदान्त पर विशद चर्चा की है।

650. रामानुज ने–

1. ब्रह्म में चित् और अचित् की उपस्थिति स्वीकार की है।
2. शंकर के मायावाद का खण्डन किया है।
3. मनुष्य की आत्मा और शरीर दोनों को सत्य माना है।

वैदिक धर्म

651. सर्वव्यापी एक तत्त्व और एक सत्ता है।

652. प्रकृति की शक्ति को देवता ही नियंत्रित करते हैं।

653. जगत् के स्रष्टा के रूप में दिव्य शक्ति को स्वीकार किया गया।

654. सृष्टि ही स्रष्टा है, स्रष्टा ही सृष्टि है।

655. "अग्नि वाक् में प्रतिष्ठित है, वाक् हृदय में, हृदय मुझ में है, मैं अमरत्व में और अमरत्व ब्रह्म में है।"[1]

656. वैदिक धर्म को हेनोथीइज्म कहा गया।

657. जगत् के स्रष्टा के रूप में प्रजापति अथवा परम 'पुरुष' की कल्पना 'एकेश्वरवाद' का प्रतीक है जिसे मोनोथीज्म की संज्ञा दी गई

658. जब एकेश्वरवाद सर्वेश्वर स्वीकार कर लिया गया तो उसे पैन्थीइज्म कहा गया।

659. अद्वैतवाद को मोनोज्म कहा गया।

660. वैदिक देवमण्डल–

(क) द्युस्थानीय(आकाशवाणी) – सूर्य, सविता, विष्णु, वरुण, मित्र अश्विन और उषा प्रधान देवता है।

(ख) अन्तरिक्षस्थानीय – इन्द्र, अपांनपात्, पर्जन्य और रुद्र प्रमुख देवता है।

(ग) पृथिवीस्थानीय – अग्नि, बृहस्पति और सोम प्रख्यात है।

661. प्रकृति के प्रमुख कार्यों को अभिव्यक्त करने वाले देवताओं का एक वर्ग हो गया था। इनमें प्रमुख हैं–

"द्यौ(आकाश), पृथ्वी, वरुण, इन्द्र, सूर्य, रुद्र, अश्विन, मरुत, वायु, वात, पर्जन्य और उषा आदि।"

662. सूर्य के पांच रूप थे–

1. सूर्य
2. सवित्
3. मित्र
4. पूषन
5. विष्णु

663. प्रमुख देवता–

1. इन्द्र – अत्यंत शक्तिशाली एवं पराक्रमी देवता और दस्युओं का विजेता।
2. वरुण – नियन्ता, देवताओं का पोषक और 'ऋत' के अधिपति।
3. सूर्य – समस्त जगत् और जीवों को आलोकित करने वाला।
4. रुद्र – उग्र देवता।
5. अग्नि – गृहस्थ का पोषक। अत: उसकी संज्ञा गृहपति थी।
6. सोम – प्रारंभ में आर्यों का प्रिय पेय था, तदोपरांत, वह आनन्द और प्रफुल्लता का देवता बन गया।
7. अश्विन – द्यौ का पुत्र था।
8. मरुत – रुद्र का पुत्र था। झंझावात का देवता।
9. वायु – कल्याणकारी देवता।
10. पर्जन्य – जल, वर्षा और नदियों का देवता।
11. विवस्वान् – ऋग्वेद के अनुसार वह देवताओं का जनक था। सरण्यू उसकी भार्या थी और त्वष्टा उसकी पुत्री। अश्विन उसके पुत्र थे।
12. वात – शक्तिशाली वायु।
13. उषा – प्रात:कालीन अधिष्ठात्री देवी।

14. अदिति – विशाल प्रकृति को 'निस्सीम' का दैवीकरण।

664 ऋग्वेद में इन्द्र से संबंधित 250 ऋचाएं हैं।

665. यज्ञ के प्रकार–

1. अग्निहोत्र – यह यज्ञ प्रातः और सायं अग्नि की उपासना के साथ सम्पन्न होता है।
2. दर्श और पूर्णमास यज्ञ – यह क्रमशः अमावस्या और पूर्णिमा को सम्पन्न किए जाते हैं।
3. चातुर्मास्य यज्ञ – पापों के क्षय के लिए चार-चार मासों में यह यज्ञ सम्पन्न किए जाते हैं।
4. निरुढ़पशुबंध – यह यज्ञ वध के लिए किया जाता है।
5. पितृयज्ञ – यह यज्ञ पितरों को संतुष्ट करने के लिए किया जाता था।
6. सोमयज्ञ – सोमरस देवताओं को अर्पित किया जाता था।
7. अग्निष्टोम यज्ञ – सात प्रकार के अग्निष्टोम प्रकृति यज्ञ थे।
8. पंच महायज्ञ – प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक था।
9. राजसूय यज्ञ – अभिषिक्त राजा द्वारा सम्पन्न किया जाता था।
10. अश्वमेध यज्ञ – सार्वभौम राजा द्वारा सम्पन्न किया जाता था।

666. ऋग्वेद में पाप और पुण्य के साथ पुनर्जन्म की कल्पना की गई।

667. पुण्यकर्मा को स्वर्ग और पापकर्मा को नरक मिलता है।

668. गीता में कर्म प्रधान है, यथा–

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"।

669. गीता में तीन तत्त्वों का निरूपण किया गया है–

1. क्षर
2. अक्षर
3. पुरुषोत्तम

670 भगवान विष्णु को अपना प्रधान इष्ट देव और परमात्मा के रूप में मानने वाले भक्त वैष्णव कहे गये।

671. पांचरात्र मत का विकास तीसरी सदी ई.पू. के लगभग हुआ जो वैष्णव धर्म का प्रधान मत था।

672. पांचरात्र का सिद्धान्त है–वासुदेव और उसके स्वरूपो का पूजन-आराधन सन्निहित।

673. शिव से संबंधित धर्म को 'शैव धर्म' कहा गया।

674. विष्णु के अवतारों की भांति शिव के अवतारों की कल्पना नहीं की गई।

675 शिव का विकास 'रुद्र' से 'शिवम्' के रूप में हुआ

676. सिन्धु सभ्यता के अवशेषों में छोटे-छोटे अनेक लिंग मिले हैं। अगर शिव के प्रतीक लिंग के सिद्धांत को सत्य मान लिया जाये तो शैव धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म हो जायेगा।

677. रुद्र सर्वत्र था। वह भूपति और पशुपति था।

678. पशुपति के अधीन पांच प्रकार के पशु थे–

1. गौ
2. अश्व
3. मनुष्य
4. अजा
5. भेड

679. महाभारत में शिव का उल्लेख सर्वोच्च और शक्तिशाली देवता के रूप में हुआ है।

680. भगवान शिव ने प्रसन्न होकर अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्रदान किया।

681. गुप्तकाल में शैव धर्म का उत्कर्ष तीव्र गति से हुआ।

682. अर्धनारीश्वर के रूप में शिव की कल्पना की गई।

683. त्रिमूर्ति में–ब्रह्मा, विष्णु, महेश (शिव) हैं।

684. द्विदेव की कल्पना में विष्णु और शिव हैं।

685. शैव सम्प्रदाय चार है–

1. शैव
2. पाशुपत
3. कापालिक
4 कालमुख

686. शैव सम्प्रदाय के सिद्धान्त–

1. सृष्टि के तीन रत्न हैं–
   (क) शिव
   (ख) शक्ति
   (ग) बिन्दु
2. शिव कर्ता है।
3 शक्ति कारण है।
4 बिन्दु उपादान है।
5. शिव की दो शक्तियां हैं–
   (क) समवायिनी
   (ख) परिग्रहरूप
6. समवायिनी निर्विकार और चिद्रूपा है।

7. परिग्रह शक्ति, अचेतन और परिणामशालिनी है।

8. बिन्दु के दो प्रकार हैं–

(क) शुद्ध

(ख) अशुद्ध

9. शुद्ध बिन्दु महामाया है।

10. अशुद्ध बिन्दु माया है।

11. चार पाद हैं–

(क) विद्या

(ख) क्रिया

(ग) भोग

(घ) चर्या

12. तीन पदार्थ हैं–

(क) पति

(ख) पशु

(ग) पाश

13. पति का अर्थ शिव से किया गया है जो स्वामी है।

14. शिव के चार अंग हैं–

(क) मंत्र

(ख) मंत्रेश्वर

(ग) महेश्वर

(घ) मुक्त

15. पशु का व्यवहार जीवात्मा के लिए किया जाता है।

16. पशु के तीन प्रकार हैं–

(क) विज्ञानकाल

(ख) प्रलयकाल

(ग) सकल

17. पाश का अभिप्राय बंधन से है, जिसके द्वारा शिवरूप होने पर भी जीव को पशुत्व की प्राप्ति होती है।

687 पाशुपत सम्प्रदाय का सिद्धान्त–पाच पदार्थों को स्वीकार किया गया–

(क) कार्य

(ख) कारण

(ग) योग

(घ) विधि

(ङ) दृष्टान्त

688. कापालिक सम्प्रदाय--

1. कापालिक के इष्ट देव भैरव हैं।
2. 6 मुद्राएं है--कंठिका, रुचक, कुंडल, शिखामणि, भस्म, यज्ञोपवीत।

689. कालामुख सम्प्रदाय--

1. इसके अनुयायी कापालिकों के ही वर्ग के थे।
2. नरकपाल में भोजन करना
3. सुरापान
4. नरभस्म शरीर पर लगाना प्रमुख सिद्धान्त थे।

690. लिंगायत सम्प्रदाय--

1. कर्म इनकी प्रधानता है।
2. शिव परम तत्त्व है।
3. लिंग के तीन भेद--
   (क) भावलिंग
   (ख) प्राणलिंग
   (ग) इष्टलिंग
4. अंगस्थल का व्यवहार 'जीव' के लिए किया गया।
5. अंगस्थल के तीन प्रकार हैं--
   (क) योगांग
   (ख) भोगांग
   (ग) त्यागांग
6. पांच महापुरुषों ने इसके उपदेश दिए--
   (क) रेणुकाचार्य
   (ख) दारुकाचार्य
   (ग) एकोशमाचार्य
   (घ) पंडिताराध्य
   (ङ) विश्लाध्य
7. लिंगायत का साहित्य कन्नड भाषा में अधिक है।

जैन--धर्म

691. जैन धर्म के प्रचारक--(24 तीर्थंकर)

1. ऋषभदेव(आदिनाथ)(प्रवर्तक)
2. अजितनाथ
3. सम्भवनाथ

4. अभिनन्दन
5. सुमतिनाथ
6 पद्मप्रभु
7 सुपार्श्वनाथ
8. चन्द्रप्रभु
9. सुविधिनाथ
10. शीतलनाथ
11. श्रेयांसनाथ
12. वासुपूज्य
13. विमलनाथ
14. अनन्तनाथ
15. धर्मनाथ
16. शान्तिनाथ
17. कुन्थुनाथ
18. अरनाथ
19. मल्लिनाथ
20. मुनिसुव्रत
21. नेमिनाथ
22. अरिष्टनेमि
23. पार्श्वनाथ
24. महावीर स्वामी

692. जिस साधक को सिद्धि प्राप्त करके 'कैवल्य' प्राप्त होता है, उसे तीर्थंकर कहते हैं।

693. महावीर के ग्यारह प्रधान शिष्य थे–इन्हें गणधर कहा जाता है–

1. इन्द्रभूति
2. अग्निभूति
3. वायुभूति
4. व्यक्त
5. सुधमन
6. मण्डित
7. मोरियपुत्र
8. अकंपित
9 अचल भ्राता
10 मेवार्य
11 प्रभास

694. त्रिरत्न–

(क) सम्यक् श्रद्धा

(ख) सम्यक् ज्ञान

(ग) सम्यक् चरित्र

695. सम्यक् श्रद्धा के आठ अंग हैं–

1. निश्शंकित
2. निष्कांक्षित
3. निर्विचिकित्सक
4. अमूढ़दृष्टि
5. उपगूहन
6. स्थितिकरण
7. वात्सल्य
8. प्रभावना

696. तीन प्रकार की अज्ञानता से दूर रहना चाहिए–

(क) लोकमूढ़

(ख) देवमूढ़

(ग) पाषंडमूढ़

697 पांच सम्यक् ज्ञान हैं–

(क) मति

(ख) अवधि

(ग) श्रुति

(घ) मन पर्याय

(ङ) केवल (पूर्ण ज्ञान)

698. सम्यक् ज्ञान के आठ अंग हैं–

1. ग्रंथ
2. अर्थ
3. उभय
4. काल
5. विनय
6. सोपधान
7. बुहमान
8. अनिन्हव

699 ज्ञान के सात प्रकार हैं–

1. है

2. नहीं है।
3. है और नहीं है।
4. कहा नहीं जा सकता।
5. है किंतु कहा नहीं जा सकता।
6. नहीं है और कहा नहीं जा सकता।
7. है, नहीं है और कहा नहीं जा सकता है।

700. संसार में कोई पदार्थ नष्ट नहीं होता।

701. द्रव्य 6 प्रकार के हैं–

1. जीव
2. पुद्गल
3. आकाश
4. धर्म
5. अधर्म
6. काल

वैशेषिक दर्शन के अनुसार द्रव्य 9 हैं–

1. पृथ्वी
2. जल
3. आकाश
4. तेज
5. वायु
6. काल
7. दिक्
8. आत्मा
9. मन

702. चैतन्य ही जीव का प्रधान लक्षण है।

703. धर्म के दस लक्षण हैं–

1. उत्तम क्षमा
2. उत्तम मार्दव
3. उत्तम आर्जव
4. उत्तम शौच
5. उत्तम सत्य
6. उत्तम संयम
7. उत्तम तप
8. उत्तम त्याग
9. उत्तम आकिंचन्य
10. उत्तम ब्रह्मचर्य

704. 22 परिवह सहन करके जीवन व्यतीत करना चाहिए–

1. क्षुत
2. पिपासा
3. शीत
4. उष्ण
5. दशमशक
6. नाग्न्य
7. अरति

8. स्त्री
9 चर्या
10. निषधा
11. शैया
12. आक्रोश
13 वध
14. याचना
15. अलाभ
16. रोग
17. तृणस्पर्श
18. मल
19. सत्कार पुरस्कार
20. प्रज्ञा
21. अज्ञान
22. अदर्शन

705. 5 महाव्रत हैं–
1. अहिंसा
2. सत्यभाषण
3. अस्तेय
4 ब्रह्मचर्य
5. अपरिग्रह

706. गृहस्थों के लिए पंच महाव्रत अणुव्रत हैं–
1. अहिंसाणुव्रत
2. सत्याणुव्रत
3. अस्तेयाणुव्रत
4. ब्रह्मचर्याणुव्रत
5. अपरिग्रहाणुव्रत

707. अणुव्रत पालन के लिए चार आधार हैं–
1. मैत्री
2. प्रमोद
3. कारुण्य
4. माध्यस्थ

708. अणुव्रत के साथ आचरण के लिए सात 'शीलव्रत' आवश्यक हैं।

709 शीलव्रत के दो भाग हैं–

1. गुणव्रत
2 शिक्षाव्रत

710. गुणव्रत–

1. दिग्व्रत
2. देशव्रत
3. अनर्थदण्ड व्रत

711 शिक्षाव्रत–

1. सामयिक
2. प्रोषद्योपवास
3. उपभोग-प्रतिभोग परिणाम
4. अतिथि संविभाग

712. 18 पापों से मुक्त होना आवश्यक है–

1. प्राणातिपात
2. झूठ
3. चोरी
4. मैथुन
5. द्रव्यमूर्च्छा
6. क्रोध
7. मान
8. माया
9. लोभ
10. राग
11. द्वेष
12. कलह
13. दोषारोपण
14. चुगली
15. असंयम में रति और संयम में अरति
16. पर-परिवाद
17. माया-मृषा
18. मिथ्या दर्शन रूपी शल्य

713. जैन धर्म का चरम लक्ष्य निर्वाण है।

714 जैन संघ की चार श्रेणियां थीं–

1 भिक्षु
2. भिक्षुणी

3. श्रावक

4. श्रावकी

715. प्रथम दो श्रेणियां परिव्राजकों के लिए।

716. अन्तिम दो श्रेणियां गृहस्थों के लिए।

717. महावीर के अनुसार मनुष्य तीन प्रकार के हैं–

1. अव्रती

2. अणुव्रती

3. सर्वव्रती

718. महावीर के उपरांत दो विभाग हो गए–

1. श्वेताम्बर – श्वेत वस्त्र धारण करने वाले

2. दिगम्बर – निर्वस्त्र रहने वाले

719. श्वेताम्बर के 3 प्रमुख उपसम्प्रदाय–

1. पुजेरा या मूर्तिपूजक

2. ढूंढ़िया या साधुमार्गी

3. तेरापंथी

720. दिगम्बर के 3 उपसम्प्रदाय–

1. बीसपंथी

2. तेरापंथी

3. तारणपंथी

बौद्ध–धर्म

721. बौद्ध–धर्म के आदि प्रवर्तक गौतम बुद्ध थे।

722. सात दिन सात रात समाधिस्थ रहकर बुद्ध को आठवें दिन वैशाख पूर्णिमा को सत्य और ज्ञान का आलोक मिला और उन्हें सम्बोधि की प्राप्ति हुई। अत. वे तथागत और बुद्ध कहे गये।

723. बोध-प्राप्ति स्थल बोधगया के नाम से प्रख्यात हुआ।

724. जिस वट वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ वह बोधि वृक्ष के नाम से जाना जाता है।

725. बौद्ध साहित्य को धर्मचक्र प्रवर्तन कहते हैं।

726. गौतम बुद्ध ने तपस्सु और भल्लिक नामक निम्नजातीय दो बनजारों को सर्वप्रथम उपदेश देकर अपना अनुयायी बनाया।

727. अनुपिय नामक स्थान पर महात्मा बुद्ध ने शाक्य शासकों को उपदेश दिया।

728. महात्मा बुद्ध के प्रधान शिष्य–

1 सारिपुत्र ब्राह्मण

2 आनन्द – बुद्ध का चचेरा भाई
3. मौद्गल्यायन – अज्ञात
4. उपालि – नापिलपुत्र
5. सुनीति – नागी
6. अनुरुद्ध – वैश्य
7 अनाथपिंडल – श्रेष्ठि
8. बिम्बसार – मगध शासक
9. प्रसेनजित् – कोसल राजा
10. अजातशत्रु – मगध सम्राट
11. जीवक – गणिकापुत्र
12. महाकश्यप – ब्राह्मण

729. बौद्ध अनुयायी स्त्रियां–

1. महाप्रजापति गौतमी – गौतम बुद्ध की मौसी
2. यशोधरा – पत्नी
3. नन्दा – गौतमी की पुत्री
4. खेमा – बिम्बसार की पत्नी
5. आम्रपाली – गणिका
6. विशाखा – श्रेष्ठि की पुत्री

730. बौद्ध-धर्म के मुख्य लक्ष्य–

1. मोक्ष का मार्ग निर्देशित करना
2. मनुष्य को सांसारिक वेदना और कष्ट से मुक्त करना
3. स्पृहा और वासना का विनाश करना
4. मानव को सत्य के निकट लाना
5. त्याग और संयम से रहना
6. कार्यशील होना
7. शील पांच प्रकार के हैं–
   (क) प्राणातिपातविरति
   (ख) अदत्तादानविरति
   (ग) काममिथ्याचारीविरति
   (घ) सुशमैरेयप्रमादस्थानविरति
   (ङ) मृषावादविरति
8. भिक्षुओं के लिए पांच शील हैं–
   1. अकालभोजनविरति
   2

3 माल्यगंधविलेपनविरति

4. उच्चासनशयनविरति

5. जातकपरजतप्रतिग्रहविरति

731. चार आर्यसत्य हैं–

(क) दु.ख

(ख) दु:ख–समुदय

(ग) दु:ख–निरोध

(घ) दु:ख–निरोधगामी प्रतिपद

732. अपर्यंगिक मार्ग–

1 सम्यक् दृष्टि

2. सम्यक् संकल्प

3. सम्यक् वाणी

4. सम्यक् कर्मान्त

5. सम्यक् आजीव

6. सम्यक् व्यायाम

7. सम्यक् स्मृति

8 सम्यक् समाधि

733 भिक्षुओं के धर्म हैं–

1. चार स्मृति प्रस्थान

2 चार सम्यक् प्रधान

3. चार ऋद्धिपाद

4. पांच इन्द्रियां

5. पांच बल

6. सात बोध्यंग

7. आर्य आष्टांगिक मार्ग

734. श्रामणेरों (भिक्षु-भिक्षुणियों) के चार निश्रय–

प्रथम निश्रय – भिक्षा से प्राप्त भोजन

द्वितीय निश्रय – चीथड़ों का चीवर

तृतीय निश्रय – वृक्ष के नीचे निवास

चतुर्थ निश्रय – गोमूत्र का भेषज

735 बौद्ध धर्म में सघ विभक्त हुआ–

(क) महासांधिक

(ख) स्थविरवादी

736 महासांधिक बुद्धत्व प्राप्ति के 9 भेद मानने लगे–

1. मूलभक्षसांधिक
2 एकव्यावहारिक
3. लोकोत्तरवाद
4 कौरुफुल्लका
5. बहुक्षुतीथ
6. प्रज्ञप्तिवाद
7. चैत्यशैल
8. अवरशैल
9. उत्तर शैल

737. स्थविरवादी लोक-परम्परा के अनुयायी के दो भाग–
(क) हैमवन्त
(क) सर्वास्तिवाद

738. सर्वास्तिवाद के 9 भेद–
1. वात्सीपुत्रीय
2. धर्मोत्तर
3. भद्रयानिक
4. सम्मितीय
5. छान्दागारिक
6. महीशासक
7. धर्मगुप्तिक
8. काश्यपीय
9. सौत्रान्तिक

739. महांसांधिकों ने बौद्ध धर्म की दो शाखाएं बनाईं–
1. हीनयानी – स्थविरवादी
2. महायानी – महासांधिक

740. महायान के दो वर्ग हुए–
1. विज्ञानवाद या योगाचार
2 माध्यमिक या शून्यवाद

741. हीनयान के दो वर्ग हुए–
1. वैभाषिक
2 सौतान्त्रिक

742. हीनयान को श्रावकयान भी कहते हैं।

743. वैभाषिक मत के दो भेद–
(क) कश्मीर वैभाषिक

(ख) पाश्चात्य वैभाषिक

744. वैभाषिक मत के प्रसिद्ध आचार्य–

(क) धर्मत्रात
(ख) घोषक
(ग) वसुमित्र
(घ) बुद्धदेव

विष्णु के अवतार

745. हिन्दू धर्म में विष्णु के 10 अवतार माने गये हैं, यथा–

1 मत्स्य
2. कच्छप
3. वराह
4. नृसिंह
5. वामन
6. परशुराम
7. राम
8. बलराम
9. बुद्ध
10 कल्कि

इन अवतारों में कृष्ण का नाम इसलिए नहीं है क्योंकि कृष्ण स्वयं भगवान के साक्षात् स्वरूप हैं।[1]

शिक्षा केन्द्र

746. रामायणयुगीन केन्द्र–

1 प्रयाग में संगम तट पर महर्षि भरद्वाज आश्रम
2. मंदाकिनी नदी के तट पर चित्रकूट में वाल्मीकि आश्रम
3. वसिष्ठ आश्रम
4. दण्डकारण्य में महर्षि अगस्त्य आश्रम

747. महाभारतकालीन केन्द्र–

1. मालिनी नदी के तट पर ब्रह्मर्षि कण्व के आश्रम में शकुंतला रहती थी।

---

[1] भागवत पुराण 1/3/6-25 1/3/28

2. हिमालय पर्वत पर अवस्थित महर्षि व्यास का आश्रम, वर्तमान में हिमाचल प्रदेश का जनपद बिलासपुर है।
3. नैमिषारण्य में महर्षि शौनक का आश्रम। 10 हजार विद्यार्थी थे। यहां आवसथ नामक छात्रावास था।
4. हरिद्वार (गंगाद्वार) में महर्षि भरद्वाज का आश्रम।
5. महेन्द्र पर्वत पर परशुराम का आश्रम।

748. प्रमुख शिक्षा केन्द्र–

1. नालन्दा विश्वविद्यालय

1 यहां का सबसे बड़ा विहार 203 फुट लबा और 164 फुट चौड़ा था।
2. इसके सामान्य कक्ष साढ़े नौ फुट x बारह फुट के थे।
3. सात विशालकाय कक्ष और 300 छोटे-बड़े कक्ष थे।
4. खर्चे के लिए 200 गांव से दान प्राप्त होता था।
5 एक समय विद्यार्थियों की संख्या दस हजार थी।
6. शिक्षकों की संख्या लगभग 1,510 थी।
7. श्वानच्वाग के समय शीलभद्र इसके प्रधान कुलपति थे।
8. इससे पहले प्रधान कुलपति धर्मपाल थे।
9. धर्मयज्ञ नामक विशाल पुस्तकालय था।
10. पुस्तकालय के तीन भवन थे–
    (क) रत्नसागर
    (ख) रत्नोदधि
    (ग) रत्नरंजक
11. नित्य 100 व्याख्यानों का आयोजन होता था।
12. यहां के प्रमुख विद्वान छात्र थे–
    (क) नागार्जुन
    (ख) वसुबंधु
    (ग) असंग
    (घ) धर्मकीर्त्ति
13. प्रमुख विद्वान आचार्य थे–
    (क) धर्मपाल
    (ख) चन्द्रपाल
    (ग) गुणमति
    (घ स्थिरमति
    (ङ) प्रभामित्र

(च) जिनमित्र
(छ) आर्यदेव
(ज) दिङ्नाग
(झ) ज्ञानचन्द्र आदि

2. विक्रमशिला विश्वविद्यालय

1. इसकी स्थापना बंगाल के पालवंशीय शासक धर्मपाल ने बिहार में भागलपुर से 85 मील दूर की थी।
2. प्रमुख विद्वान्
   (क) रक्षित
   (ख) विरोचन
   (ग) ज्ञानपाद
   (घ) बुद्ध
   (ङ) जेतारि रत्नाकर शांति
   (च) ज्ञानश्री मित्र
   (छ) रत्नवज्र
   (ज) दीपंकर
   (झ) अभयंकर आदि
3. 108 आचार्य यहां सेवारत थे।
4. भिक्षु–अध्यापक प्रबंध में हाथ बंटाते थे।
5. छः द्वार–पण्डितों की समिति द्वारा इसका संचालन महास्थविर की अध्यक्षता में होता था।
6. 10वीं सदी में (उत्तरार्द्ध में)–
   (क) प्रथम द्वार पर कश्मीर निवासी–रत्नवज्र
   (ख) द्वितीय द्वार पर गौड़ प्रदेश के–ज्ञानश्रीमित्र
   (ग) तृतीय द्वार पर–जेतारि रत्नाकर शांति
   (घ) चतुर्थ द्वार पर–वागीश्वर कीर्ति
   (ङ) पंचम द्वार पर–नरोप
   (च) षष्ठ द्वार पर–प्रज्ञाकर यति बैठते थे।
7. 1203 ई. में बख्तियार खिलजी ने इसे तोड़ डाला और जलाकर नष्ट कर दिया।

3. वलभी विश्वविद्यालय–

1. गुजरात–काठियावाड़ के समुद्र तट पर स्थित वलभी एक प्रमुख शिक्षा केन्द्र था।
2. इसका निर्माण राजकुमारी टड्डा ने करवाया था।

3. इसका विहार राजा धारसेन ने 580 ई में बनवाया था जिसका नाम श्री बप्पपाद रखा गया।
4. श्रीबप्पपाद का संचालन (निर्देशन एवं प्रशासन) आचार्य स्थिरमति करते थे।
5. इसमें लगभग 100 विहार एवं 6000 भिक्षु थे।

4. श्रावस्ती शिक्षा केन्द्र–
1. इसका नाम था–जेतवन विहार।
2. प्रमुख श्रेष्ठी अनाथपिंडक ने इसका निर्माण करवाया था।
3. यह 130 एकड़ में फैला हुआ था।
4. इसमें 120 भवन थे।

5. अनेक बौद्ध शिक्षा केन्द्र–
1. कश्यप बुद्ध संघाराम
2. कश्मीर विहार
3. जालन्धर का बौद्ध विहार
4. श्रुधन् मठ
5. मतिपुर संघाराम
6. कान्यकुब्ज स्थित भद्र बौद्ध विहार
7. वाराणसी के तीन बौद्ध विहार
8. हिरण्य (मुंगेर) संघाराम
9. कपिलवस्तु का निग्रोघाराम
10. वैशाली का आम्रवन
11. राजगृह का वेणुवन

6. हिन्दुओं के प्रमुख शिक्षानगर–
1 काशी
2. कांची
3. कर्नाटक
4 नासिक
5. तक्षशिला
6. पाटलिपुत्र
7 कन्नौज
8. धारा
9. अनहिल पाटन

7 तक्षशिला विश्वविद्यालय

1. इसकी स्थापना भरत ने की थी।[1]
2. इसका प्रशासन तक्ष को सौंपा गया।
3. जनमेजय ने अपना नाग यज्ञ यहीं सम्पन्न कराया था।[2]
4 प्रमुख विद्वान थे–
   (क) कौसल शासक प्रसेनजित्
   (ख) मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त
   (ग) कौटिल्य (विष्णुगुप्त)
   (घ) ख्यातिलब्ध वैद्य जीवक
   (ङ) वैयाकरण पाणिनि
   (च) वैयाकरण पतंजलि

8. उडयन्तपुर शिक्षा केन्द्र–

1. प्राचीन मगध में
2. संस्थापक–पल्लववंशीय राजा गोपाल (प्रथम)
3. मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने इस शिक्षा केन्द्र के सभी शिक्षको एवं शिष्यों को मार डाला तथा इस प्रसिद्ध विशालकाय शिक्षा केन्द्र में आग लगाकर इसे नष्ट कर दिया।

9 संगम विद्यापीठ–

1. मदुरा (सुदूर दक्षिण में)
2. यहां उत्कृष्ट तमिल साहित्य की रचना हुई।

राष्ट्र

749 पुराणों में भरतवर्ष या भारतवर्ष उल्लिखित है।

1. मार्कण्डेय पुराण एवं विष्णु पुराण – दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में समुद्र एवं उत्तर में हिमालय–यह भारतवर्ष है।
2. मत्स्य पुराण एवं वायु पुराण – भारतवर्ष कुमारी अन्तरीप से गंगा तक है।
3. मार्कण्डेय पुराण एवं वायु पुराण – स्वयंभू मनु के वंश में उत्पन्न ऋषभ के पुत्र भरत के नाम पर भारतवर्ष नाम हुआ।

4. वायु पुराण — (एक अन्य स्थान पर)–दुष्यन्त एवं शकुन्तला के पुत्र भरत के नाम पर इसका नाम भारतवर्ष हुआ।

5. विष्णु पुराण — स्वर्ग एवं मोक्ष प्राप्ति का स्थल भारतवर्ष है।

750. खारवेल के हाथी गुम्फा अभिलेख में भारत को भरधवस (भारतवर्ष) कहा गया है।

751. मौर्यों और गुप्त काल में भारत में दो मुख्य महामार्ग थे–

(क) उत्तरापथ — यह पाटलिपुत्र को तक्षशिला से जोड़ता था।

(ख) दक्षिणापथ — यह पाटलिपुत्र को आन्ध्र साम्राज्य की राजधानी गोदावरी नदी के तट पर बसी प्रतिष्ठान से जोड़ता था।

752. एक मार्ग–पाटलिपुत्र से भृगुकच्छ और बरबरीकुम के बन्दरगाहों तक जाता था।

753. सम्वत्–ये 38 हैं–

1. सृष्टि
2. चीनी
3. खताई
4. पारसी
5. कांण्डिया
6. मिस्री
7 कुस्तुन्तुनिया
8. अन्ताकिया
9. मोलीन
10. ईसाई दुनिया
11. इबरानी
12. यहूदी
13. कलियुगी
14. नोह
15 लौकिक
16. युधिष्ठिर
17. परशुराम
18. ब्राह्मी
19. स्पार्टा
20. मुस्वी
21. दाऊदी
22. यूनानी
23. रूमी

24. वालूसारी
25. बुद्ध
26. सिकन्दरी
27. बरमी
28. विक्रमी
29. सालिवाहन
30. हिजरी
31. ईस्वी
32. बंगाली
33. यदिजारी
34. शहूर
35. नानक
36. विलायती या अम्ली
37. दयानन्दी
38. महानिर्वाण

754. योजन–

12 योजन	=	48 मील
1 योजन	=	4 मील

अध्याय दो

साहित्य

महत्त्वपूर्ण लेखक, काल एवं ग्रंथ

1	हारिद्रुमत गौतम	– 600-300 ई.पू., गौतम धर्मसूत्र
2.	बौधायन	– 600-300 ई.पू., बौधायन धर्मसूत्र
3.	आपस्तम्ब	– 600-300 ई.पू., आपस्तम्ब धर्मसूत्र
4.	हिरण्यकेशी	– 600-300 ई.पू., हिरण्यकेशी धर्मसूत्र
5.	वसिष्ठ	– 600-300 ई.पू., वसिष्ठ धर्मसूत्र
6.	विष्णु	– 600-300 ई.पू., विष्णु धर्मसूत्र
7	कौटिल्य	– 300-100 ई.पू., अर्थशास्त्र
8.	वैखानस	– 600-300 ई.पू., वैखानस धर्मसूत्र
9.	अत्रि	– ईसा की प्रथम शताब्दी, अत्रि स्मृति एवं अत्रि संहिता, आत्रेय धर्मशास्त्र
10.	उशना	– प्रथम शताब्दी, औशनसी दण्डनीति धर्मशास्त्र
11.	कण्व और काण्व	– प्रथम शताब्दी, कण्व धर्मशास्त्र
12.	कश्यप	– प्रथम शताब्दी, कश्यप धर्मशास्त्र
13.	गार्ग्य	– प्रथम शताब्दी, गार्ग्य धर्मसूत्र
14.	च्यवन	– प्रथम शताब्दी, च्यवन धर्मसूत्र
15.	जातूकर्ण्य	– तीसरी-चौथी शताब्दी, जातूकर्ण्य धर्मसूत्र
16.	बृहस्पति	– 400-700 ई.पू., बृहस्पतिस्मृति
17.	भारद्वाज	– कौटिल्यकालीन, भारद्वाज धर्मसूत्र
18.	मनु	– 200-100 ई.पू., मनुस्मृति
19.	वाल्मीकि	– रामायण
20.	वेदव्यास	– महाभारत
21		100-300 ई याज्ञवल्क्यस्मृति
22	पराशर	पराशरस्मृति

23	नारद	– 100-400 ई., नारदस्मृति
24	कात्यायन	– 100–400 ई., कात्यायनस्मृति
25	अंगिरा	– अंगिरास्मृति
26	ऋष्यश्रृंग	– ऋष्यश्रृंगस्मृति
27	काण्णाजिनि	– काण्णाजिनिस्मृति
28	चतुर्विंशतिमत्त	– चतुर्विंशतिमतस्मृति
29	दक्ष	– दक्षस्मृति
30	पितामह	– पितामहस्मृति
31	पुलस्त्य	– 400-700 ई., पुलस्त्यस्मृति
32	प्रचेता	– प्रचेतास्मृति
33	प्रजापति	– प्रजापतिस्मृति
34	मरीचि	– मरीचिस्मृति
35.	यम	– यमस्मृति
36.	लौगाक्षि	– लौगाक्षिस्मृति
37.	विश्वामित्र	– विश्वामित्रस्मृति
38.	षटत्रिंशन्मत	– षटत्रिंशन्मत
39	संवर्त	– संवर्तस्मृति संग्रह
40.	असहाय	– भाष्यकार
41	भर्तृयज्ञ	– भाष्यकार
42.	भारुचि	– भाष्यकार एवं धर्मसूत्रकार
43.	विश्वरूप	– भाष्यकार
44.	श्रीकर	– निबंधकार
45	मेधातिथि	– मनुस्मृति के सबसे प्राचीन भाष्यकार
46.	धारेश्वर भेजदेव	– भुजबल निबंध
47.	देवस्वामी	– भाष्यकार
48.	जितेन्द्रिय	– धर्मशास्त्रकार
49.	बालक	– ग्रंथकार
50.	बालरूप	– आचार-व्यवहार पर निबंधात्मक ग्रंथ
51.	योगलोक	– आचार-व्यवहार पर निबंधात्मक ग्रंथ
52.	विज्ञानेश्वर	– मिताक्षराग्रंथ
53.	कामधेन	– निबंधकार
54.	हलायुध	– निबंधकार
55.	भवदेव भट्ट	– यवहारतिलक ग्रंथ
56	प्रकाश	महार्णव प्रकाश ग्रंथ

57 पारिजात — ग्रंथकार

58 गोविन्दराज — भाष्यकार (मनुस्मृति पर भाष्य लिखा) स्मृति मंजरी

59 लक्ष्मीधर — कल्पतरु

60 जीमूतवाहन — कालविवेक, व्यवहारमातृका और दायभाग ग्रंथ

61 अपरार्क अपरादित्य — याज्ञवल्क्य धर्मशास्त्र निबध

62 श्रीधर — स्मृत्यर्थसार

63 प्रदीप — ग्रंथकार

64 अनिरुद्ध — हारलता, पितृययिता अथवा कार्योपदेशिनी ग्रंथ

65 बल्लालसेन — आचारसागर, प्रतिष्ठासागर, दानसागर और अद्भुतसागर ग्रथ

66 हरिहर — पारस्करगृह्यसूत्र पर भाष्य

67 देवण्ण भट्ट — स्मृतिचन्द्रिका

68 हरदत्त — निबंधकार

69 हेमाद्रि — चतुर्वर्गचिन्तामणि

70 कुल्लूक भट्ट — मन्वर्यमुक्तावली नामक टीका

71 श्रीदत्त उपाध्याय — निबंधकार

72 चण्डेश्वर — निबंधकार

73 हरिनाथ — स्मृतिसार निबंध

74. माधवाचार्य — पराशरमाधवीय और कालनिर्णय ग्रंथ

75. विश्वेश्वर भट्ट — मदनपरिजात और सूर्यसिद्धांतविवेक

76. विश्वनाथ — मदनरत्न या मदनरत्नप्रदीप या मदनप्रदीप

77. शूलपाणि — दीपकलिका, एकादशीविवेक, निधिविवेक, श्रद्धाविवेक, दुर्गात्सवप्रयोग, दुर्गोत्सवविवेक, दोलयात्राविवेक, प्रतिष्ठाविवेक, प्रायश्चितविवेक, रासयात्राविवेक, व्रतकालिक विवेक, शुद्धिविवेक, संक्रांतिविवेक, संबंधविवेक

78. रुद्रधर — शुद्धिविवेक, श्राद्धविवेक, वर्णकृत्य

79. मिसरु मिश्र — पदार्थ चन्द्रिका

80. वाचस्पति मिश्र — विवादचिंतामणि, आचारचिंतामणि, शुद्धिचिंतामणि, कृत्यचिंतामणि, तीर्थचिंतामणि, द्वैतचिंतामणि, शूद्राचारचिंतामणि

81. दलपति — नृसिंहप्रसाद

82. प्रताप रुद्रदेव — सरस्वतीविलास

83 गोविन्दानंद — दानकौमुदी शुद्धिकौमुदी श्राद्धकौमुदी

		वर्णक्रियाकौमुदी
84.	रघुनन्दन	– स्मृतितत्त्व, तीर्थतत्त्व, द्वादश यात्रातत्त्व, त्रिपुष्कर शांतितत्त्व, गयाश्राद्धपद्धति, रासयात्रापद्धति
85.	नारायण भट्ट	– अन्त्येष्टि पद्धति, त्रिस्थलीसेतु, प्रयोगरत्न
86.	नन्द पण्डित	– विद्वन्मनोहरा टीका, स्मृतिसिंधु, तत्त्वमुक्तावली टीका, वैजयंती या केशववैजयंती, दत्तमीमांसा
87.	कमलाकर भट्ट	– निर्णयसिंधु भाष्य, शूद्रकमलाकर, विवादताण्डव, निर्णयसिंधु
88.	नीलकण्ठ भट्ट	– भगवन्त भास्कर धार्मिक ग्रंथ
89.	शंकर भट्ट	– शास्त्रदीपिका, विधिरसायनदूषण मीमांसाबालप्रकाश, द्वैतनिर्णय, धर्मप्रकाश या सर्वधर्मप्रकाश
90.	मित्रमिश्र	– वीरमित्रोदय
91.	अनन्तदेव	– स्मृति कौस्तुभ, संस्कार कौस्तुभ
92.	नागोजि भट्ट	– आचारेन्दु शेखर, अशौच निर्णय, तिथीन्दुशेखर, प्रायश्चित तेन्दुशेखर, श्राद्धेन्दुशेखर, सपिण्डी मंजरी एवं सापिण्ड्यदीपक
93	बालकृष्ण या बालम्भभट्ट	– निर्णयसिंधु, वीरमित्रोदय, नीलकण्ठ का मयूख, संस्कारकौस्तुभ
94	काशीनाथ उपाध्याय	– धर्मसिन्धुसार या धर्मविधसार
95.	जगन्नाथतर्कपंचानन	– विवादसारार्णव
96.	ऋषि कणाद	– वैशेषिक दर्शन
97	ऋषि कपिल	– सांख्य दर्शन
98	ऋषि जैमिनी	– पूर्वमीमांसा
99.	ऋषि वादरायण	– उत्तरमीमांसा
100	पतंजलि	– योगदर्शन
101.	पाणिनि	– अष्टाध्यायी
102	मैगस्थनीज	– इण्डिका–मौर्ययुग
103	विशाखदत्त	– मुद्राराक्षस–मौर्ययुग
104.	अश्वमेध	– बुद्धचरित, सौन्दर्यानन्द, सरिपुत्रप्रकरण–कुषाण युग
105	नागार्जुन	– प्रज्ञापरामित–कुषाण युग(माध्यमिक सूत्र)
106.	तसुमित्र	– महाविभाष शास्त्र–कुषाणयुग
107	कालिदास	– अभिज्ञानशकुंतल, ऋतुसहार, मालविकाग्निमित्र, मेघदूत, रघवुंश, कुमारसंभव

विक्रमोर्वशीयम्–गुप्त युग

108. महाकवि भास – मध्यमव्यायोग, दूतवाक्य, बालचरित, प्रतिमा, अभिषेक, अविमार्क, चारुदत्त, प्रतिज्ञायौगंधराय स्वप्नदत्तावास, दूतघटोत्कच, कर्णभार, उरूभ और पंचरात्र–कुल 13 नाटक–गुप्त युग
109 शुद्रक – मृच्छकटिकम्–गुप्त युग
110. भट्टी – रावणवध या भट्टीकाव्य, तीन शतक–गुप्त युग
111. विष्णु शर्मा – पंचतंत्र–गुप्त युग
112 कामन्दक – नीतिसार–गुप्त युग
113 ईश्वरकृष्ण – सांख्यकारिका या सांख्यपद्धति दर्शन–गुप्त युग
114. वात्स्यायन – कामसूत्र, न्यायभाष्य या न्यायपद्धति–गुप्त युग
115. प्रशस्तपाद – पदार्थ धर्म संग्रह–गुप्त युग
116. महाकवि दण्डी – काव्यादर्श, दशकुमार चरित–गुप्त युग
117. असंग – योगाचार भूमिशास्त्र–गुप्त युग
118 वसुबंधु – महायान तथा हीनयान बौद्ध दर्शन–गुप्त युग
119. दिङ्नाग – प्रमाणसमुच्चय–गुप्त युग
120. परमार्थ – वसुबंध की जीवनी–गुप्त युग
121. चन्द्रगोमिन – चन्द्रव्याकरण–गुप्त युग
122. हरिषेण – इलाहाबादप्रशस्ति–गुप्त युग
123. वासुल – यशोवर्मा पर प्रशस्ति–गुप्त युग
124. रवि शांति – कवि–गुप्त युग
125. वत्स भट्टी – कुमारगुप्त एवं मन्दसौर प्रशस्ति–गुप्त युग
126. कुब्ज – तालगुन्दप्रशस्ति–गुप्त युग
127. शाब – चन्द्रगुप्त द्वितीय का राजकवि–गुप्त युग
128. ई–त्सिंग – जातकमाला (672–688 ई.)–हर्षवर्धन युग
129. हर्षवर्धन – रत्नावली, प्रियदर्शिका, नागानन्द–हर्षवर्धन यु
130. जयदेव – गीतगोविन्दम्–हर्षवर्धन युग
131. बाणभट्ट – हर्षचरित, कादम्बरी–हर्षवर्धन युग
132. गयादित्य – काशिकावृत्ति–हर्षवर्धन
133. राजशेखर – कर्पूरमंजरी, बालरामायण, बालभारत, विशाल–भंजिका (नाटक)–राजपूत युग
134. जयदेव – गीतगोविन्द–राजपूत युग
135. कल्हण – राजतरंगिणी–राजपूत युग
136 सोमदेव ———— राजपूत युग

137 चन्दबरदायी — पृथ्वीराजरासो—राजपूत युग
138 भट्टी — रावणवध—राजपूत युग
139 माघ — शिशुपाल वध
140 श्रीहर्ष — नैषधचरित
141 पद्मगुप्त — नवसाहसांकचरित
142 दामोदर गुप्त — कुल्तनिमाता
143 दण्डी — दशकुमारचरित
144 धनपाल — तिलकमंजरी, यशतिलक
145 सुबंधु — वासवदत्ता
146 भवभूति — मालतीमाधव, महावीरचरित, उत्तररामचरित—नाटक
147 आनन्दवर्धन — प्रबोधचंद्र—नाटक
148 भट्ट नारायण — वेणीसंहार—नाटक
149 मुरारी — अनर्धराघव
150 विल्हण — विक्रमांकचरित
151 सान्धकारन्दित — रामचरित
152 क्षेमेन्द्र — वृहत्कथामंजरी
153 जयादित्य — काशिकावृत्ति
154 भर्तृहरि — पतंजलि के महाभाष्य पर टीका
155. सर्व वर्मा — व्याकरण पर पुस्तक
156 हेमचन्द्र — शब्दकोश
157. यादवभट्ट — शब्दकोश
158. पुरुषोत्तम देव — शब्दकोश
159 भट्टक्षीर स्वामी — शब्दकोश
160. धर्मकीर्ति — न्यायबिन्दु
161. कोक पंडित — कोकशास्त्र
162. शृंगदेव — संगीतरत्नाकर
163. हेमचन्द्र — दर्शन, प्रमाण मीमांसा
164. उद्योत्कर — न्याय पर भाष्य
165. उदयनाचार्य — न्याय पर भाष्य
166. श्रीधर — वैशेषिक दर्शन पर भाष्य
167 वाचस्पति मिश्र — सांख्यदर्शन पर भाष्य
168. शंकराचार्य — दर्शन पर मौलिक रचना
169 विज्ञानेश्वर — मिताक्षरा (हिन्दू कानून पर टीका)
170 हरिभद्र बौद्ध लेखक समरैच्चकाहा धूर्तख्यान धर्मपाल युग

171. शिवस्वामी — कफ्फणाभ्युदय
172. रविषेण — पद्मपुराण
173. जिनसेन — पार्श्वाभ्युदय, आदिपुराण (प्रथम 42 अध्याय)
174. असंग — वर्धमानचरित
175. महाकवि रत्नाकर — हर-विजय
176. अभिनन्द — कादम्बरी कथासार
177. अभिनन्द — रामचरित
178. वासुदेव — युधिष्ठिर विजय, शौरीकथोदय, त्रिपुरदहन
179. त्रिविक्रम भट्ट — नलचम्पू
180. अमितगीत — सुभाषितरत्नसंदोह
181. वाक्पति — गौड़वहो
182. भीम — प्रतिभाचाणक्य, दशाननस्वप्न—नाटक
183. शक्तिभद्र — आश्चर्य चूड़ामणि
184. क्षेमीश्वर — चण्डकौशिक, नैषधानन्द—नाटक
185. आनन्द — माधवनलकामकन्दाल—गल्प साहित्य
186. धनपाल — तिलकमंजरी
187. विश्वरूप — याज्ञवल्क्य स्मृति पर 'बाल क्रीड़ा'
188. अद्योतन सूरी — कुवलयमाला
189. विल्हण — चालुक्यवंश के राजकवि
190. विज्ञानेश्वर — चालुक्यवंश के राजकवि
191. भारवि — किरातार्जुनयी—पल्लववंश
192. महेन्द्र वर्मा — मन्तीबलासप्रहसन—पल्लववंश
193. त्रियापल्लुवर — तमिल कुराल
194. प्रियपूर्णम् या शेखर — तिरुट्टोन्डपूर्णम—चोलवंश
195 नन्दी — तिरुविलाई या दलपूर्णम्—चोलवंश
196. नन्दी अन्दारनम्बी — तिरुसुराई काण्डपूर्णम्—चोलवंश
197. अमुदनार — रामानुजनुदएंदादि—चोलवंश
198. तिरुकदेवर — शिवकोशीन्दमणि—चोलवंश
199. जयगोन्दर — कलिंगहुपर्णी—चोलवंश
200. ओट्टाकुहन — राजराजाद्वितीय का राजकवि
201. सोमेश्वर — कीर्तिकौमुदी—राजपूत युग
202. हाल — गाथासप्तशती—सातवाहन/अंध्रवंश
203. सर्वसेन — हरि विजय—वाकाटकवंश
204. रुद्रट — काव्यालंकार—राजपूत युग

205. जैनआचार्य हेमचन्द — राजपुरोहित एवं इतिहासकार—चालुक्यवंश
206. हिरोडोटस — एक यूनानी, जिसने भारत का सही वर्णन किया
207. अलबरूनी — संस्कृत विद्वान—गजनीवंश
208. उतबी — इतिहासकार—गजनीवश
209. फराबी — दर्शनशास्त्र—गजनीवंश
210. बैहाकी — तारीख—सुबक्तगीन—गंजनीवंश
211. फिरदौसी — फार्रुखी, शाहनामा—गजनीवंश
212. हरिभद्र सूरी — समरादित्यकथा, धूर्ताख्यान, कथाकोष, जैन साहित्य
213. सिद्धार्षसूरि — उपमितिभवप्रपंच कथा
214. जिनेश्वरसूरि — कथाकोष प्रकरण
215. गुणभद्र — उत्तरपुराण
216. सोमदेवसूरि — नीतिवाक्यामृत
217. पद्मगुप्त — नवसहसांकचरित
218. जयानक — पृथ्वीराजविजय
219. अरिसिंह — सुकृतसंकीर्तन
220. मेरुतुंग — प्रबंधचिंतामणि
221. जयसिंह — हम्मीर मद मर्दन, वस्तुपाल, तेजपाल
222 उदयप्रभु — सुकृतकीर्ति कल्लोलिनी
223. बालचन्द्र — वसंत विलास
224. स्ट्रोब — भूगोल
225. प्लिनी — नेचुरल हिस्ट्री
226. आर्यदेव — चतुरशतक—गुप्तकालीन, बौद्धग्रंथ
227. सर्वनन्दी — लोकविभंग—458 ई., जैन ग्रंथ
228 आचार्य सिद्धसेन — न्यायवार्ता
229. विशाखदत्त — देवीचन्द्रगुप्तम्
230 चन्द्रगोमी — चन्द्र व्याकरण
231. बुद्धघोष — विसुद्धिमग्ग
232. भरत — नाट्यशास्त्र
233. बिलादूरी — फुतूह-अल-बलदान
234. सूर्यमल — वंश भास्कर
235 भट्टभुवनदेव — अपरिजातपृच्छा

वैज्ञानिक एवं ग्रंथ

236. आर्यभट्ट — आर्यभट्टीय (एकमात्र ज्योतिष ग्रंथ, जिस पर रचनाकार का नाम अंकित है)—सूर्य सिद्धान्त
237 भास्कर — महाभास्कर्य, लघुभास्कर्य, भीष्य
238. ब्रह्मगुप्त — ब्रह्मसिद्धान्त
239. वराहमिहिर — पंचसिद्धान्तिका, वृहत्संहिता, वृहज्जातक, लघुजातक
240. धन्वंतरि — नवीनतकम्—गुप्तयुग
241 वाग्भट्ट — अष्ट्रांगहृदय—आयुर्वेद ग्रंथ, सिद्धांत शिरोमणि, अष्ट्रांग संग्रह
242. पलकाप्य — हस्तायुर्वेद—पशुचिकित्सा संबंधी
243. चरक — औषधिज्ञाता
244. माधवकर — माधवनिदान—चिकित्सा संबंधी
245 शाकटायण — शब्दानुशासन, पाइलच्छीमाला वैज्ञानिक साहित्य
246. उद्भट्ट — अलंकार संग्रह—वैज्ञानिक साहित्य
247. रुद्रट — काव्यालंकार—वैज्ञानिक साहित्य
248. वामन — काव्यालंकार सूत्रवृत्ति—वैज्ञानिक साहित्य
249. माधवकार — माधवनिदान—चिकित्सा संबंधी
250. आर्यभट्ट द्वितीय — आर्य सिद्धान्त
251 आनन्दवर्धन — देवीशतक, ध्वन्यलोक—वैज्ञानिक साहित्य

अन्य ग्रंथ

252. शिवस्वामिन् — कप्पहण अभ्युदय—काव्य
253. जैनजिनसैन — पार्श्व अभ्युदय—काव्य
254. कनक सैन — यशोधरा चरित—काव्य
255. अभिनन्द — रामचरित—महाकाव्य
256. वासुदेव — युधिष्ठिर विजय, त्रिपुरदहन—महाकाव्य
257. क्षेत्रेंद — भारतमंजरी, रामायणमजरी—काव्य
258. सन्याकर नंदी — रामचरित—काव्य
259. धनंजयश्रुतकीर्ति — राघव—पांडवीय या द्विसंधान—गद्य-पद्यमिश्रण
260. त्रिविक्रमभट्ट — नलचम्पू अथवा दमयंती कथा, मदालसाचम्पू
261. सोमदेव — यशस्तिलकचम्पू

262. जयदेव — गीतगोविन्द—काव्य
263. रामचन्द्र तथा गुणचंद्र — नाट्य दर्पण—शास्त्रीयग्रंथ
264. भीम या भीमट — प्रतिभा चाणक्य—नाटक
265. हस्तिमल्ल — विक्रांतकौरव, समुद्राहरण—नाटक
266. राजशेखर — बाल रामायण, बाल भारत—नाटक
267. दामोदर गुप्त — कुट्टनीमतम्—उपदेशात्मक
268 मल्लट — मल्लटशतक, नीतिवाक्यामृत
269. मैत्रेयरक्षित — धातुप्रदीप—व्याकरण
270. शकटायन — शब्दानुशासन—व्याकरण
271. यादवप्रकाश — वैजयंती—व्याकरण
272. क्षीरस्वामिन् — पाणिनि पर धातुवृत्ति—व्याकरण, कैयट के महाभाष्य पर टीका—व्याकरण
273. हरदत्त — काशिकावृत्ति पर पदमंजरी—व्याकरण
274. उद्भट्ट — काव्यालंकार संग्रह—काव्यशास्त्र
275. वामन — काव्यालंकार सूत्र—काव्यशास्त्र
276. रुद्रट — काव्यालंकार—काव्यशास्त्र
277. आनन्दवर्धन — ध्वन्यावलोक—काव्यशास्त्र
278. आचार्य मम्मट — काव्यप्रकाश—काव्यशास्त्र
279. भोज — सरस्वतीकंठाभरण—काव्यशास्त्र
280. धनंजय — दशरूपक—नाटक
281. सागरनंदिन — रत्नकोश—नाटक
282. माधवकर — रोगविनिश्चय—चिकित्साशास्त्र
283. चक्रपाणिदत्त — चिकित्साशास्त्र—स्वास्थ्य संबंधी
284. सुरेश्वर — लौह पद्धति
285. भोज — शालिहान्न (घोड़े पर चिकित्सा संबंधी)
286 नारद — संगीत मकरानन्द
287. जग देकमल्ल — संगीत चूड़ामणि
288. सोमेश्वर — मानसोल्लास—संगीत
289 सारगदेव — संगीत रत्नाकर
290. हरिभद्र — रामराइच्चकहा—प्राकृत
धूर्ताख्यान—प्राकृत
291. धनेश्वर — सुरासुन्दरीचरित—प्राकृत
292. गुणचन्द्र — महावीरचरित—प्राकृत
293. देवभद्र — पार्श्वनाथचरित—प्राकृत

294. हेमचन्द्र — कुमारपालचरित—प्राकृत
295. शिवकोटाचार्य — बौद्ध आराधना—उपदेशात्मक
296. अमोघवर्ष नृपतुंग — कविराजमार्ग—कन्नड़ साहित्य
297 पंप प्रथम अथवा आदिपंप — आदिपुराण—कन्नड साहित्य
298. पोन्न — शान्तिपुराण—कन्नड साहित्य
299. रत्न — अजितपुराण—कन्नड़ साहित्य
300. नागवर्माचार्य — चन्द्रचूणामणिशतक —कन्नड़ साहित्य
301. चड़राज — मदन तिलक—कन्नड़ साहित्य
302. नन्नचोड़ — कुमारसंभव की तेलुगु में रचना की
303. नांबि-आंदार-नांबि — तिरु-इशैप्प-शैवभक्ति में काव्य-संग्रह
304. कंबन — रामायण की तमिल में रचना की
305 पुगलेंदि — नल-वेणवा—नल—दमयंती की लालित्यपूर्ण शैली मे काव्य रचना
306. ओट्टक्कुट्टन — तक्कयागप्पाणि—तमिल साहित्य
307 अब्बे द्वितीय (प्रसिद्ध विदुषी) — नन्नूरकौवे कलविओकुक्कम
308. शेक्किलार — परिआपुराणम्—शैव साहित्य
309. सोमनाथ — राग-विबोध—संगीत साहित्य
310 कल्लिनाथ — संगीत रत्नाकर
311. महाराणा कुंभा — संगीत राग
312. मुहम्मद जायसी — पद्मावत
313. जगनिक — परमाल रासो (आल्हाखण्ड)
314. बालाजूरी — फ़तूह-अल-बुल्दान—अरबी साहित्य
315 अल्बरूनी — किताबुलहिन्द—अरबी साहित्य
316. मिनहास-उस-सिराज—जुजानी — तबक़ात-ए-नासिरी, फ़ख्र-ए-मुद्दबिर
317. जियाउद्दीन बरनी — तारीख़-ए-फिरोजशाही
318. शम्स-ए-सिराज अफीफ — तारीख़-ए-फिरोजशाही
319. बाबर — तुजूक-ए-बाबरी (बाबर की आत्मकथा)
320. इब्नेबतूता — रेहला
321. ख्वाजा अब्दुल मलिक इसामी — फ़तूह-अस-सलातीन
322 अमीर खुसरो किरान उस सादेन मिफ़्ता—उल-फ़तूह सजाइन—उल फुतूह (तारीख़ ए-अलाई) आदि

नूहसिपिहर, तुग़लकनामा
323 याह्याबिन अहमद सिरहंदी– तारीख-ए-मुबारकशाही
324 मिर्जा हैदर दुग़लत – तारीख-ए-रसीदी
325 गुलबदन बेगम – हुमायूंनामा
326 डॉ. मोतीचन्द्र – सार्थवाह (गुप्तकालीन व्यापारिक भागो का विवरण)
327. अशोक मेहता – 1857 का महान विद्रोह
328. सावरकर – भारतीय स्वतंत्रता का युद्ध
329. विलियम वोल्ट्स – कंसीडेशन आफ इंडियन अफेयर, वर्ष 1772

समाचार–पत्र

330. जेम्स ऑगस्टस हिक्की – दी बंगाल गजट, वर्ष 1780
331. वर्ष 1878 में मुंबई प्रांत में 62 देशी भाषा के समाचार–पत्र थे, उत्तर–पश्चिम प्रांत, अवध एवं मध्य प्रांत में 60 समाचार–पत्र थे, बंगाल में २८ समाचार–पत्र थे, मद्रास में 19 समाचार–पत्र थे।

पुस्तकें

332. नल्लसिंह – विजयपाल रासो, संवत् 1355
333. शार्ङ्गधर – हम्मीर रासो, संवत् 1357
334 विद्यापति – कीर्तिलता, संवत् 1460, कीर्तिपताका संवत् 1460
335. दलपति विजय – खुमान रासो, संवत् 1050–1375
336. नरपति नाल्ह – विसलदेव रासो, संवत् 1292
337. चंदबरदाई – पृथ्वीराज रासो, संवत् 1050–1375
338. भट्ट केदार – जयचंद्र प्रकाश, संवत् 1050–1375
339. मधुर कवि – जयमयंक जसचंद्रिका, संवत् 1050–1375
340. जगनिक – परमालरासो, संवत् 1050–1375
341. अमीर खुसरो – खुसरो की पहेलियां, संवत् 1050–1375
342. विद्यापति – विद्यापति पदावली, संवत् 1050–1375
343. अब्दुर्रहमान – सदेश रासक, संवत् 1050–1375
344. धनपाल – भविसयत्त कथा, संवत् 1050–1375
345. जोइन्दु – परमात्मा प्रकाश, संवत् 1050–1375
346. रामसिंह – पाहुड़ दोहा
347. धर्मसूरि – जम्बू स्वामी रासा (13वीं शताब्दी)

348 हेमचन्द्र — शब्दानुशासन
349. कबीरदास — बीजक—सिकन्दर लोदी के समकालीन
350. रैदास (रविदास) — रैदास की बानी—सिकन्दर लोदी के समकालीन
351. नानकदेव — गुरु ग्रंथ साहब—सिकंदर लोदी के समकालीन
352. दादूदयाल — हरडे वाणी, अंगवधू—कबीर के समकालीन
353. सुन्दर दास — सुन्दर विलास अथवा सवैया—दादू के समकालीन
354. मलूकदास — ज्ञानबोध, रतनखान, भक्तबच्छावली, भक्त विरुदावली, पुरुष विलास, दस रत्न ग्रंथ, गुरु प्रताप, अलखबानी, रामावतार लीला
355. जायसी — आखिरी कलाम, पद्मावत, अखरावट—शेरशाह सूरी के समकालीन
356. तुलसीदास — दोहावली, कवितावली, गीतावली, कृष्णगीतावली, विनय पत्रिका, रामचरितमानस, रामललानहछू, वैराग्य-संदीपिनी, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल और रामाज्ञा
357. सूरदास — सूरसागर, साहित्य लहरी, सूरसारावली
358. रसखान — प्रेमवाटिका, सुजान रसखान
359. अयोध्यासिंह उपाध्याय — प्रिय प्रवास
360. मैथिलीशरण गुप्त — साकेत, यशोधरा
361. जयशंकर प्रसाद — काननकुसुम, करुणालय, प्रेमपथिक, आंसू, झरना, कामायनी, लहर
362. महादेवी वर्मा — निहार, रश्मि, सांध्यगीत, नीरजा, माया, दीपशिखा
363. हरिवंशराय बच्चन — मधुशाला, निशानिमंत्रण, एकान्त संगीत आदि।
364. मुंशी प्रेमचंद — रंगभूमि, सेवा सदन, गबन, प्रेम आश्रम, निर्मला, कर्मभूमि, कायाकल्प, प्रतिज्ञा, मंगलसूत्र, गोदान
365. पं० सूर्यनारायण व्यास — सागर प्रवास, तू-तू-मैं-मैं, भव्यदिभूतयः, आग्र नारियां, कुंडलि संग्रह, विश्ववंद्य महाकवि कालिदास प्रबंध चिंतामणि का आलोचनात्मक अध्ययन।
366 अटल बिहारी वाजपेयी — मेरी इक्यावन कविताएं, संसद में तीन दशक, अध्य महोदय, मेरी संसदीय यात्रा।
367. डॉ. शंकरदयाल शर्मा — पं० जवाहरलाल नेहरू, हमारे जीवन मूल्य, बेहत भविष्य के लिए, शिक्षा दिशा और दृष्टिकोण।
368. कृष्ण सरल — क्रांतिकारी कोश (पांच खंड)।
369 डॉ सत्यदेव त्रिवेदी — प्राचीन भारत में गुप्तचर सेवा

370 नरेशचद्र चतुर्वेदी — चर्चित राष्ट्रीय गीत (दो खंड)।
371 प्रो. विजयकुमार मलहोत्रा — कमल:शाश्वत सांस्कृतिक प्रतीक।
372 राजशेखर व्यास — सुभाषचंद्र बोस:कुछ अधखुले पन्ने, भगतसिंह समग्र (तीन खंड)।
373. जयप्रकाश भारती — हिन्दी की सौ सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें।
374 मनु शर्मा — कृष्ण की आत्मकथा(आठ खंड)
375 कृपाशंकर तिवारी — एड्स और समाज
376. चंद्र नमल नवल — भारतीय पुलिस
377. बृजमोहन शर्मा — भारतीय पुलिस
378. विष्णुदत्त शर्मा — पुलिस अन्वेषण फोटोग्राफी
379. डॉ. अमरनाथ सिन्हा — भारतीय सेना : परंपरा और स्वरूप
380 एस.एस. गिल — डायनेस्टी, राजवंश।
381 गिरिराज किशोर — संपूर्ण कहानियां (पांच खंड)
382. देवेन्द्र सत्यार्थी — बेला फूले आधी रात
383. कमलेश्वर — कितने पाकिस्तान
384. पी.वी. नरसिंह राव — दी इनसाइडर
385. जोगिन्द्र सिंह — इन साइड सी.बी.आई.
386. बाबा नागार्जुन — पारो

धर्मशास्त्र का इतिहास

प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण ग्रंथों तथा लेखकों का काल—निर्धारण

387. 4000—1000 ई.पू. — वैदिक संहिता, ब्राह्मणों एवं उपनिषदों का काल
388. 800—500 ई.पू — यास्ककृत निरुक्त
389. 800—400 ई.पू. — प्रमुख श्रौतसूत्र-आपस्तंब, आश्वलायन, बौधायन, काव्यायन, सत्याषाढ आदि; गृहसूत्र-आपस्तब, आश्वलायन
390. 600—300 ई.पू. — गौतम, आपस्तंब, बौधायन, वसिष्ठ के धर्मसूत्र एवं पारस्कर के गृहसूत्र
391. 600—300 ई.पू.. — पाणिनि
392 500—200 ई पू जैमिनीकृत पूर्वमीमांसासूत्र
393 500—200 ई पू भगवद्गीता

394. 300 ई.पू. — पाणिनि के सूत्रों पर वार्तिक लिखने वाले वररुचि कात्यायन

395. 300 ई.पू.–100 ई — कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र

396. 150 ई.पू.–100 ई. — पतंजलि का महाभाष्य

397. 200 ई.पू.–100 ई. — मनुस्मृति

398. 100–300 ई. — याज्ञवल्क्य स्मृति

399. 100–300 ई. — विष्णु धर्मसूत्र

400. 100–400 ई. — नारद स्मृति

401. 200–500 ई — वैखानस स्मृतिसूत्र

402. 200–500 ई. — पूर्वमीमांसासूत्र के भाष्यकार शबर

403. 300–500 ई. — व्यवहार आदि पर बृहस्पति-स्मृति

404. 300–600 ई. — वायु पुराण, विष्ण पुराणु, मार्कण्डेय पुराण, मत्स्य पुराण, कूर्मपुराण

405. 400–600 ई. — कात्यायनस्मृति (अप्राप्त)

406. 500–550 ई. — वराहमिहिर, पंचसिद्धान्तिका, बृहत्संहिता, बृहज्जातक के लेखक

407. 600–650 ई. — कादम्बरी एवं हर्षचरित के लेखक–बाण

408. 600–665 ई. — पाणिनिकृत अष्टाध्यायी पर 'काशिका'–व्याख्याकार वामन–जयादित्य

409. 650–700 ई. — कुमारिल का तंत्रवार्तिक

410. 600–900 ई. — स्मृतियां–पराशर, शंख, देवल; पुराण–अग्नि पुराण गुरुड़ पुराण

411. 788–820 ई. — महान् अद्वैतवादी दार्शनिक शंकराचार्य

412. 800–850 ई. — याज्ञवल्क्य स्मृति के टीकाकार विश्वरूप

413. 825–900 ई. — मनुस्मृति के टीकाकार मेधातिथि

414. 966 ई. — वराहमिहिर के बृहज्जातक की टीकाकार उत्पल

415. 1000–1050 ई. — बहुत से ग्रंथों के लेखक धारेश्वर भोज

416. 1080–1100 ई. — याज्ञवल्क्य स्मृति के टीकाकार मिताक्षरा के लेखक विज्ञानेश्वर

417. 1080–1110 ई. — मनुस्मृति के व्याख्याकार गोविंदराज

418. 1100–1130 ई. — कल्पतरु या कृत्यकल्पतरु नामक विशाल धर्मसूत्र विषयक निबंध के लेखक–लक्ष्मीधर

419 1100–1150 ई दाय भाग कालविवेक एवं ——— के

वाहन

420 1100–1150 ई — प्रायश्चित प्रकरण एवं अन्य ग्रंथों के रचयिता भवदेव भट्ट

421 1110–1130 ई. — अपरार्क, शिलाहार राजा ने याज्ञवल्क्य स्मृति पर टीका

422 1114–1484 ई — भास्कराचार्य-सिद्धांतशिरोमणि (लीलावती एक अंश) के प्रणेता

423 1127–1138 ई — सोमेश्वर का मानसोल्लास या अभिलषितार्थ चिन्तामणि

424 1150–1160 ई. — कल्हण की राजतरंगिणी

425 1150–1180 ई. — हारलता एवं पितृदयिता के प्रणेता अनिरुद्ध भट्ट

426 1150–1200 ई. — श्रीधरकृत स्मृत्यर्थसार

427 1150–1300 ई. — गौतम एवं आपस्तम्ब नामक धर्मसूत्रों एवं गृहसूत्रों के टीकाकार हरदत्त

428 1200–1225 ई. — देवण्ण भट्ट की स्मृतिचंद्रिका

429 1150–1300 ई. — मनुस्मृति के व्याख्याकार कुल्लूक

430 1175–1200 ई. — धनंजय के पुत्र एवं ब्राह्मणसर्वस्व के प्रणेता हलायुध

431 1260–1270 ई. — हेमाद्रि की चतुर्वर्गचिंतामणि

432 1200–1300 ई. — वरदराज का व्यवहार निर्णय

433 1275–1310 ई. — पितृभक्ति, समय प्रदीप एवं अन्य ग्रंथों के प्रणेता श्रीदत्त

434 1300–1370 ई. — गृहस्थ रत्नाकर, विवादर रत्नाकर, क्रिया रत्नाकर आदि ग्रंथों के रचयिता चण्डेश्वर

435. 1300–1380 ई. — वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मणों के भाष्यो के संग्रहकर्ता–सायण

436. 1300–1380 ई. — पराशर स्मृति की टीका पराशर माधवीय तथा अन्य ग्रंथों के रचयिता एवं सारण के भाई–माधवाचार्य

437. 1360–1390 ई. — मदनपाल एवं उनके पुत्र के संरक्षण में मदन–पारिजात एवं महार्णव प्रकाश संग्रहीत किये गये

438. 1375–1440 ई. — याज्ञवल्क्य की टीका दीपकालिका, प्रायश्चित विवेक, दुर्गोत्सवविवेक एवं अन्य ग्रंथों के लेखक–शूलपाणि

439. 1375–1500 ई. — विशाल निबंध धर्मतत्त्वकालनिधि के लेखक एवं नागमल्ल के पुत्र पृथ्वीचंद्र

440. 1400–1500 ई. — तंत्रवार्तिक के टीकाकार सोमेश्वर की न्यायसुधा

441. 1400–1450 ई. — मिसरु मिश्र का विवादचन्द्र

442. 1425–1450 ई. — मदनसिंह देव राजा द्वारा संग्रहीत विशाल निबंध मदनरत्न

443 1425 1460 ई — शुद्धिविवेक श्राद्धविवेक के लेखक–रुद्रधर

44 1425–1490 ई. – शुद्धिचिन्तामणि, तीर्थचिन्तामणि के लेखक–वाचस्पति

i45 1450–1500 ई. – दण्डविवेक, गंगाकृत्यविवेक के लेखक–वर्धमान

i46 1490–1512 ई. – दलपति का व्यवहार सागर (नृसिंह प्रसाद का एक भाग)

:47 1490–1515 ई. – दलपति का नृसिंहप्रसाद–श्राद्धसार, तीर्थसार, प्रायश्चित

448 1500–1525 ई. – प्रताप रुद्रदेव राजा के संरक्षण में सग्रहीत सरस्वती विलास

449. 1500–1540 ई – शुद्धि कौमुदी, श्राद्धक्रियाकौमुदी के प्रणेता–गोविन्दानद

450. 1513–1580 ई. – प्रयोगरत्न, अन्त्येष्टि पद्धति, त्रिस्थली सेतु के लेखक–नारायण भट्ट

451. 1520–1575 ई. – श्राद्धतत्व, तीर्थतत्व, शुद्धितत्व, प्रायश्चित तत्व के प्रणेता–रघुनन्दन

452 1520–1589 ई. – टोडरमल के संरक्षण में टोडरानन्द ने कई सौख्यो में शुद्धि, तीर्थ, प्रायश्चित, कर्मविलाप एवं अन्य 15 विषयों पर ग्रंथ लिखे

453. 1560–1620 ई. – द्वैतनिर्णय या धर्मद्वैतनिर्णय के लेखक शंकर भट्ट

454. 1590–1630 ई. – वैजयंती (विष्णु धर्मसूत्र की टीका), श्राद्ध कल्पलता, शुद्धि चंद्रिका एवं दत्तकमीमांसा के लेखक नंद पडित

455. 1610–1640 ई. – निर्णय सिंधु तथा विवादताण्डव, शूद्र कमलकार एव अन्य 20 ग्रंथों के लेखक–कमलकार भट्ट

456. 1610–1640 ई. – मित्रमिश्र का वीर मित्रोदय, भाग–तीर्थप्रकाश, प्रायश्चितप्रकाश एवं श्राद्धप्रकाश आदि

457. 1610–1645 ई. – प्रायश्चित, शुद्धि, श्राद्ध आदि विषयों पर 12 मयूखो में (यथा–नीतिमयूख, व्यवहार मयूख) रचित भगवत भास्कर के लेखक नीलकण्ठ

458. 1650–1680 ई. – राजधर्म कौस्तुभ के प्रणेता अनंतदेव

459. 1700–1740 ई. – वैद्यनाथ का स्मृतिमुक्ताफल

460. 1700–1750 ई. – तीर्थेन्दुशेखर, प्रायश्चितेन्दुशेखर आदि अन्य 50 ग्रंथे के लेखक–नागेश भट्ट या नागोजिभट्ट

461. 1790 ई. – धर्मसिंधु के लेखक काशीनाथ उपाध्याय

462. 1730–1820 ई. – मिताक्षरा पर बालम्भट्टी नामक राजा के लेखक बालम्भट्ट

अध्याय तीन

संस्थापक

1	इक्ष्वाकु वंश	– मनु
2	सूर्य वंश	– मनु
3	चन्द्र वंश	– बुद्ध
4	मगध	– बिम्बसार, काल–545 ई.पू. लगभग
5	हर्यक वंश	– बिम्बसार, काल–545 ई.पू. लगभग
6	मौर्य वंश	– चन्द्रगुप्त मौर्य
7	प्राचीन मगध राज वंश	– वृहद्रथ, काल–723 ई.पू. लगभग
8	गुप्त साम्राज्य	– श्रीगुप्त, काल–240 ई.पू. लगभग
9	शुंग वंश	– पुष्यमित्र शुंग, काल–185 ई.पू.
10	कण्व वंश	– वासुदेव
11	आंध्र वंश या सातवाहन वंश	– सिमुक, काल–235 ई.पू. लगभग
12	कुषाण वंश	– कैडफिसिज प्रथम या कुलुजा कैडफिसिज या कोजोलॉफैडफिसिज प्रथम–काल 75 ई-
13	वाकाटक वंश	– विंध्यशक्ति, वास्तविक संस्थापक प्रवरसेन को माना जाता है
14	वर्धन वंश	– पुष्पभूति
15	प्रतिहार वंश	– नागभट्ट प्रथम
16	चालुक्य वंश	– पुलकेशिन प्रथम–काल 535 ई.
17	चोल वंश	– विजयादित्य या विजयालय
18	तुर्की वंश	– अलप्तगीन
19	तुर्की वंश (भारत में)	– कुतुबुद्दीन ऐबक
20	पाल साम्राज्य	– गोपाल, काल–750 ई.
21	मैत्रक वंश	– वलभी
22	मौखरी वंश	– यज्ञवर्मा, काल–छठी शताब्दी
23	गाहडवाल वंश	– चंद्रदेव, काल–1080 ई. लगभग

24. चंदेल वंश – यशोवर्मा/नन्नुक
25. कालचूरी वंश – लक्ष्मणराज, काल–10वीं शताब्दी
26. परमार वंश – उपेन्द्र, काल–820 ई. लगभग
27. चौहान वंश – विग्रहराज, काल–9वीं शताब्दी ई
28. राष्ट्रकूट वंश – दन्तिवर्मा/दन्तिदुर्ग
29. पल्लव वंश – त्रिलोचन
30. चालुक्य वंश – जयसिंह (बादामी/वातापी)
31. बेंगी वंश – विष्णु वर्धन, काल–615 ई. के लगभग
32. कल्याण वंश – तैल अथवा तैलप द्वितीय
33. अन्हिलवाड़ वंश – मूलराज प्रथम
34. गुर्जरप्रतिहार वंश – हरिचन्द्र
35. चौहान (अजमेर) – वासुदेव, काल–सातवीं शताब्दी लगभग
36. सेन वंश – सामंतसेन
37. शाही वंश – कल्लर
38. उत्पल वंश – अवंतिवर्मन
39. लोहर वंश – अज्ञात
40. कलचुरी वंश – कोकल्ल प्रथम
41. गोरवंश/गोरीवंश – शंसबानी
42. गुलाम वंश – कुतुबुद्दीन ऐबक
43. खलजी वंश – जलालुद्दीन फिरोज खलजी/याघ्रेशखां
44. तुगलक वंश – गियासुद्दीन तुगलकशाह
45. सैय्यद वंश – मलिक सुलेमान/खिज्रखां सैय्यद
46. लोदी वंश – बहराम लोदी
47. जौनपुर वंश (शर्कीवंश) – फिरोजशाह तुग़लक
48. मालवा का खलजी वंश – महमूद खां
49. अहमदाबाद वंश – अहमदशाह, काल–लगभग 1411 ई.
50. शाह वंश (बंगाल) – अलाउद्दीन हुसैन शाह, काल–लगभग 1493 ई.
51. चाक वंश (कश्मीर) – शाही मिर्जा
52. कपिलेन्द्र वंश (उड़ीसा) – कपिलेन्द्र
53. भोई वंश (उड़ीसा) – गोविन्द भोई
54. यादव वंश (देवगिरि) – भिल्लम
55. काकतीय (वारंगल) – चोल द्वितीय एवं रुद्र प्रथम
56. होयसल (द्वारसमुद्र) – सल
57 द्वितीय पांड्यवंश(मदुरा) – भारवर्मन सुंदर पांड्य

58.	सिसौदिया गुहिलौत वंश	– राणा हम्मीर (पुनः स्थापित)
59.	मारवाड वंश	– चुन्द
60.	आदिल शाही वंश (बीजापुर)	– यूसुस आदिल शाह
61.	गोलकुण्डा वंश	– कुतुबशाह
62.	अहमदनगर वंश	– मलिक अहमद
63.	बरीदशाही वंश	– अली बरीद
64.	बशर वंश	– फ्तेह उल्लाह इमादशाह
65.	संगम वंश	– हरिहर और बुक्का
66.	सालुव वंश	– नरसिंह सालुव
67.	तुलुव वंश	– वीर नरसिंह
68.	अरविंदु वंश	– तिरुमाल
69.	बहमनी वंश	– अलाउद्दीन हसन बहमन
70.	मुगल वंश	– जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर
71.	सूरवंश	– सरदार शेरशाह सूरी
72.	भोंसला वंश	– बालाजी
73	हैदराबाद राज्य	– निजाम-उल-मुल्क-आसफ-जाह–1724 ई.
74.	अवध राज्य	– सआदत खां–बुरहान-उल-मुल्क
75.	रुहेले	– मुहम्मद खां–वंगश पठान
76	अंग्रेजी साम्राज्य	– ईस्ट इण्डिया कम्पनी/रानी एलिजाबेथ/सर टामस रो
77.	वेस्टइण्डीज	– कोलम्बस
78.	इण्डिया	– वास्को-डी-गामा
79.	पुर्तगाली राज्य	– आल्मीड़ा 1505 ई.
80.	फ्रांसीसी राज्य	– कोलबर्ट (लुई चौदहवें के मंत्री) 1664 ई.
81.	कांग्रेस	– ए.ओ. ह्यूम
82.	गरम दल	– बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिनचद्र पाल
83.	अभिनव भारत (क्रांतिकारी दल)	– बी.डी. सावरकर
84.	अनुशीलन समिति (क्रांतिकारी दल)	– अरविन्द घोष, बरिन्द्रकुमार घोष, पुलिन बिहारी दास
85.	गदर दल (क्रांतिकारी दल)	– लाला हरदयाल
86	आजाद हिन्द फौज	– सुभाष चद्र बोस

87. होमरूल लीग — बाल गंगाधर तिलक
88. होमरूल लीग — श्रीमती ऐनी बेसेंट
89. मुस्लिम लीग — नवाब सलीम उल्ला खां
90. सत्याग्रह आंदोलन — मोहनदास कर्मचंद गांधी
91. खिलाफत आंदोलन — मौलाना मोहम्मद अली एवं मौलाना शौकत अली
92. असहयोग आंदोलन — मोहनदास कर्मचंद गांधी
93 स्वराज्य दल — मोतीलाल नेहरू एवं देशबंधु चितरंजन दास
94. सविनय अवज्ञा आंदोलन — मोहनदास कर्मचंद गांधी
95. 'भारत छोड़ो' आंदोलन — मोहनदास कर्मचंद गांधी
96. फॉरवर्ड ब्लाक — सुभाष चंद्र बोस
97. साम्यवादी दल — एम एन राय
98. ब्रह्म समाज — राजा राम मोहनराय
99. रामकृष्ण मिशन — स्वामी विवेकानन्द
100. आर्य समाज — स्वामी विवेकानन्द
101 थियोसोफिकल सोसाइटी — श्रीमती ऐनी बेसेंट
102. मोहम्मडन एंग्लो–ओरियंटल कॉलेज (अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय) — सैयद अहमद खां

कांग्रेस अध्यक्ष

103. बम्बई — 1885 — व्योमेश चंद्र बनर्जी
104. कलकत्ता — 1886 — दादाभाई नौरोजी
105. मद्रास — 1887 — बदरुद्दीन तैयबजी
106. इलाहाबाद — 1888 — जार्जयूल
107. बम्बई — 1889 — विलियम विडरवार्न
108. कलकत्ता — 1890 — फिरोजशाह महता
109. नागपुर — 1891 — एम.पी. आनन्द चार्लू
110. इलाहाबाद — 1892 — व्योमेश चंद्र बनर्जी
111. लाहौर — 1893 — दादाभाई नौरोजी
112 मद्रास — 1894 — अल्फेड वेब
113. पुणे — 1895 — सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
114 1896 आर मोहम्मद रहामतुल्ला सयानी

115 अमरावती – 1897 – सी. शंकरन् नायर

116. मद्रास – 1898 – आनन्द मोहन बसु

117. लखनऊ – 1899 – रमेश चंद्र दत्त

118. लाहौर – 1900 – एन.जी. चन्दावरकर

119. कलकत्ता – 1901 – दिनशा ई- वाचा

120. अहमदाबाद – 1902 – सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

121. मद्रास – 1903 – लाल मोहन घोष

122 बम्बई – 1904 – हेनरी कॉटन

123. वाराणसी – 1905 – गोपाल कृष्ण गोखले

124. कलकत्ता – 1906 – दादाभाई नौरोजी

125 सूरत – 1907 – राम बिहारी घोष

126. मद्रास – 1908 – राम बिहारी घोष

127. लाहौर – 1909 – मदन मोहन मालवीय

128. इलाहाबाद – 1910 – विलियम विडरबार्न

129. कलकत्ता – 1911 – विशन नारायण धर

130. बांकीपुर (पटना) – 1912 – आर.एन. मुधोलकर

131. कराची – 1913 – सैयद मोहम्मद बहादुर

132 मद्रास – 1914 – भूपेन्द्रनाथ बासु

133. बंबई – 1915 – एस पी. सिन्हा

134. लखनऊ – 1916 – अभिकाचरण मजूमदार

135. कलकत्ता – 1917 – एनी बेसेंट

136. बम्बई (विशेष) – 1918 – सैयद हसन इमाम

137 दिल्ली – 1918 – मदन मोहन मालवीय

138 अमृतसर – 1919 – मोतीलाल नेहरू

139 कलकत्ता (विशेष) – 1920 – लाला लाजपत राय

140 नागपुर – 1920 – सी. विजय राघवाचार्य

141 अहमदाबाद – 1921 – हकीम अजमल खां

142 गया – 1922 – चितरंजनदास

143 काकीनाड़ा – 1923 – मौलाना मोहम्मद अली

144 दिल्ली – 1923 – अब्दुल कलाम आजाद

145 बेलगांव – 1924 – मोहनदास कर्मचंद गांधी

46 कानपुर – 1925 – सरोजनी नायडू

47 गोवाहाटी 1926 एस श्रीनिवास अय्यगर

48 मद्रास 1927 एम ए. असारी

149. कलकत्ता — 1928 — मोतीलाल नेहरू
150. लाहौर — 1929 — जवाहरलाल नेहरू
151. कराची — 1931 — वल्लभभाई पटेल
152. दिल्ली — 1932 — रणछोड़दास अमृतलाल
153. कलकत्ता — 1933 — श्रीमती नेलीसेन गुप्ता
154. बम्बई — 1934 — राजेन्द्र प्रसाद
155. लखनऊ — 1936 — जवाहरलाल नेहरू
156. फैजपुर — 1937 — जवाहरलाल नेहरू
157. हरिपुरा — 1938 — सुभाषचंद्र बोस
158 त्रिपुरा — 1939 — सुभाषचंद्र बोस
159. रामगढ़ — 1940 — अबुल कलाम आजाद
160. मेरठ — 1946 — जे.पी. कृपलानी

स्वातन्त्र्योत्तर अध्यक्ष

161. जयपुर — 1948 — बी. पट्टाभि सीतारमैया
162. नासिक — 1950 — पुरुषोत्तमदास टंडन
163. दिल्ली — 1951 — जवाहरलाल नेहरू
164. हैदराबाद — 1953 — जवाहरलाल नेहरू
165. कल्याणी — 1954 — जवाहरलाल नेहरू
166. अबाड़ी — 1955 — यू.एन. टेबर
167 अमृतसर — 1956 — यू.एन. टेबर
168. इन्दौर — 1957 — यू.एन. टेबर
169. गोवाहाटी — 1958 — यू.एन. टेबर
170 नागपुर — 1959 — यू.एन. टेबर
171. बंगलौर — 1960 — इन्दिरा गांधी
172. भावनगर — 1961 — नीलम संजीव रेड्डी
173. पटना — 1962 — नीलम संजीव रेड्डी
174. बंगलौर — 1963 — नीलम संजीव रेड्डी
175. भुवनेश्वर — 1964 — कामराज नाडार
176. दुर्गापुर — 1965 — कामराज नाडार
177. जयपुर — 1966 — कामराज नाडार
178. बंगलौर — 1968 — एस. निजलिंगप्पा
179. फरीदाबाद — 1969 — एस. निजलिंगप्पा

180 बम्बई – 1969 – जगजीवनराम
181. कलकत्ता – 1972 – डॉ. शंकरदयाल शर्मा
182. चंडीगढ़ – 1975 – देवकान्त बरुआ
183 दिल्ली – 1978 – इंदिरा गांधी
184. कलकत्ता – 1983 – इंदिरा गांधी
185 बम्बई – 1985 – राजीव गांधी
186. तिरुपति – 1992 – पी वी नरसिंहराव
187. दिल्ली – 1996 – सीताराम केसरी
188. दिल्ली – 1997 – सोनिया गांधी
189. दिल्ली – 2000 – सोनिया गांधी

अध्याय चार

उत्खनन

1. सिंधु सभ्यता संसार की सबसे प्राचीनतम सभ्यता है।
2 सिंधु घाटी उत्खनन वर्ष 1924 ई. में हुआ।
3. वर्ष 1924 ई. में भारतीय पुरातत्त्व विभाग के महानिदेशक सर जान मार्शल थे।
4. सिंधु घाटी की खुदाई हुई–
   1. वर्ष 1921–1927 ई. राखलदास बनर्जी
   2. वर्ष 1927–1931 ई. जे.एच. मैकेन
   3. वर्ष 1963 ई जी.एफ. डेल्स
5. वर्ष 1863 ई. में नदी स्थली संस्कृति (मद्रास) खोजी गई है।
6. पाषाण संस्कृति के दो स्वतंत्र केन्द्र हैं–
   1. उत्तर में – सोन या सोहन संस्कृति
   2. दक्षिण में – मद्रास संस्कृति
7 मद्रास में मिले पूर्व पाषाण संस्कृति के लाक्षणिक प्रस्तर उपकरण हस्तकुठार– मद्रास कुठारों के नाम से विख्यात हुए।
8. मध्यपाषाण की सबसे प्रसिद्ध स्थली लंगनाज गुजरात में है।
9. लंगनाज में–हिरण, बारहसिंघा, गैंड़ा, जंगली सुअर और बैल आदि जानवरों के अवशेष मिले हैं।
10. मध्यपाषाण की बस्तियां–
    (क) दक्षिण में तिन्नैवेली के समीप
    (ख) पूर्व में वीरभानपुर (बंगाल) के समीप
11. किली गोलमोहम्मद (क्वेटा घाटी, पाकिस्तान) में पालतू पशु–भेड़, बकरी, पक्के मकान, कृषि की जानकारी मिलती है।
12. बुर्जहोम (श्रीनगर के समीप) नवपाषाण संस्कृति मिली है।
13 संगनकल्लू (बिलारी के समीप, दक्षिण में) एव पिकली हाल में नवपाषाण बस्तियां खोजी गई।
14. नवपाषाण संस्कृति के समकालीन सिधु सभ्यता में कांस्य संस्कृति थी।

15 हड़प्पा बस्तियों की खोज की–

1. श्री डब्लू.एफ फेयरसर्विस
2. बी.दे कार्दी
3. जे.एम. कजाल

16 कोट दीजी में गढ़ या कोट की पुष्टि होती है।

17 कालीबंगा (राजस्थान) में टीले पर बनी इमारत मिली है।

18 कालीबंगा से काली चूड़ियां मिली हैं।

19 हड़प्पा संस्कृति का विस्तार–

1. दक्षिण की ओर आबादी सघन
2. 11000 कि.मी. उत्तर-दक्षिण
3. 16000 कि.मी. पूर्व-पश्चिम

20 हड़प्पा का भवन–415 फुट X 105 फुट चबूतरे पर मिला है।

21 मोहन-जो-दाड़ो

(क) भवन 85 फुट X 97 फुट
आंगन–32 फुट

(ख) 276 फुट X 230 फुट X 78 फुट भवन
71 फुट X 71 फुट विशाल कक्ष

(ग) स्नानागार–180 फुट X 180 फुट X 394 फुट X 23 फुट X 8 फुट गहरा

22 सबसे समीप दक्षिणवर्ती हड़प्पा संस्कृति नर्मदा नदी के मुहाने पर है।

23 सिंधु घाटी से 550 लेखयुक्त मुद्राएं प्राप्त हुई हैं।

24 मोहन-जो-दाड़ो का

(क) क्षेत्रफल – ढाई वर्ग कि.मी.
(ख) जनसंख्या – 35,000 थी।

25 नगर के दो भाग थे –

(क) दुर्ग
(ख) बस्ती

26 मोहन-जो-दाडो मे एक विशाल तालाब मिला है–7 मी. X 12 मी. X 2.5 मी.

27 मुख्य मार्ग 10 मीटर चौडा था।

28 लोथल (महाराष्ट्र) एक व्यापारिक बन्दरगाह था।

29 लोथल का जहाजघाट–218 मी. X 37 मी. का था।

30 धान की भूसी मिली है–

(क) लोथल में, और
(ख) रंगपुर में।

31 सिंधु घाटी में चावल के दाने नहीं मिले

32. सिंधु सभ्यता के लोग–गेहूं (दो किस्म), जौ, तिल एवं फलियों के प्रयोग से परिचित थे।
33. मोहन-जो-दाडो एवं हड़प्पा में 350 मील का अन्तर है।
34 सिंधु सभ्यता के लोग घोडे से अपरिचित थे।
35. घरेलू जानवर थे–भेड, बकरी, गाय, कुत्ता, ऊंट, हाथी आदि।
36. सिंधु सभ्यता में 13.2 इंच = 1 फुट
37. सिंधु सभ्यता के लोग तांबा, कांसा और टीन के प्रयोग से परिचित थे।
38. मोहन-जो-दाड़ो से एक शकटिका (दो पहिए की गाड़ी) प्राप्त हुई है।
39. वर्तमान समय तक लेखयुक्त 2 हजार मुद्राएं खोजी जा चुकी हैं।
40. इतिहासकार विद्वान वेदरिख होज़नी ने हड़प्पा लिपि का संबंध भित्तिचित्रलिपि से जोड़ा है।
41. मुद्राओं पर अंकित वर्णों की संख्या लगभग 400 है।
42. बसाढ़ (प्राचीन बैशाखी) से 274 मिट्टी की मुद्रायें प्राप्त हुई हैं।
43. लोहे के अवशेष प्राप्त हुए हैं–

    1. बलूचिस्तान
    2. उत्तर-पश्चिम भारत
    3. गंगा-यमुना के दोआब
    4. पूर्वी भारत
    5 मध्य भारत
    6. दक्षिण भारत

44. पुरातात्विक साक्ष्य के अनुसार–लोहे का प्रयोग ई.पू. 1100 में और साहित्यिक साक्ष्य के अनुसार–लोहे का प्रयोग–ई.पू 700 में हुआ।
45. मास्की और गुज्जरी से प्राप्त अभिलेखों में ही अशोक का नाम मिलता है, शेष अभिलेखों में उसे प्रियदर्शी कहा गया है।
46. ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम 1837 ई. में प्रिंसेप नामक विद्वान ने पढा।
47. दो मध्य-पाषाणयुगी स्थल–

    (क) आदमगढ़ (होशंगाबाद के समीप, म.प्र.)
    (ख) बागोर (भीलवाड़ा के समीप, राजस्थान)

48. कोल्डीहवा–वेलनघाटी से दो प्रकार के चावल प्राप्त हुए, काल–ई.पू. छठी–ई.पू. पांचवीं शताब्दी
49. मेहरगढ़–यह बलूचिस्तान का सबसे प्राचीन स्थल है। यहां तांबे की जानकारी मिलती है।
50. बलूचिस्तान के व्यापारिक स्थल–(बन्दरगाह)

    (क) सुतकागेडोर दशक नदी के मुहाने पर

(ख) सोनकाकोह — शादीकौर के मुहाने पर
(ग) बालाकोट — विंदरा नदी के मुहाने पर

51 प्राचीन दृषद्वति नदी को अब चौतांग नदी कहते हैं।

52 सिंधु सभ्यता का विस्तार–

(क) पूर्व में — आलमगीरपुर, जिला मेरठ (उ.प्र.)
(ख) पश्चिम में — मकरान तट
(ग) उत्तर में — मांदा (जम्मू)
(घ) दक्षिण में — किमसागर संगम पर भगवराव तक था।

53 सिंधु सभ्यता के वर्तमान तक खोजे गए स्थल–350 हैं।

54 ब्रासिका जुंसी–सिंधु सभ्यता से प्राप्त नौ फसलो में एक।

55 सुरकोतदा से घोड़े की अस्थियां प्राप्त हुई हैं।

56 हड़प्पा युगोत्तर भारतीय संस्कृतियां–

1. झूकर संस्कृति — सिंधु में झूकर स्थान पर
2. कब्रिस्तान एच. संस्कृति — बहावलपुर–हड़प्पा में कब्रिस्तान में एक विशिष्ट मृदभांड प्रारूप के आधार पर
3. अहाड़ संस्कृति — आधुनिक उदयपुर के पास यह ताम्र–पाषाण संस्कृति है, इसे बनास नदी के समीप होने के कारण बनास संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है।
4. कायथ संस्कृति — इसके तीन भाग हैं। प्रथम यहीं है, द्वितीय –अहाड़ संस्कृति से मिलता है। तृतीय– मालवा ताम्र-पाषाण संस्कृति
5. जोखो संस्कृति — ताम्र-पाषाण संस्कृति के चौथे काल खण्ड में पाई गई।

57 नेवासा में घर का आकार–

1. 3 फुट X 7 फुट था।
2. 45 फुट X 20 फुट का सबसे बड़ा घर था।

58 दायामाबाद में तांबे की चार वस्तु मिली हैं।

59 दक्षिण भारत मे गोलघरों की छतें शंक्वाकार थीं।

60 भस्म टीला–पोंगल या मकर संक्रांति के आसपास एक स्थान पर जहां गोबर एकत्र किया जाता था उसे वार्षिक जला दिया जाता था, वहां यह टीला है।

61 असम में कोई नवपाषाणयुगीन साक्ष्य नहीं मिला है।

62 गंगा घाटी में ताम्रनिधियां मिली हैं–

1. कुल्हाडियां

2. मत्स्य भाले

3. शृंगिकायुक्त तलवार

अल्लाहपुर में हिरण के संकेत मिले हैं।

अतरजीखेड़ा में कपड़े के छापे के संकेत मिले है।

हस्तिनापुर में घोड़े की अस्थिया मिली हैं।

विद्वानों का एक वर्ग मानता है कि हड़प्पा सभ्यता का अन्त विदेशी
कारण हुआ।

विद्वानों के दूसरे वर्ग की मान्यता है कि प्राकृतिक आपदाओं के
सस्कृति का अन्त हुआ।

नवदाटोली में गोलाकार, वर्गाकार और आयताकार घर मिले है।

हडप्पा सभी सिंधु स्थलों से पहले खोजा गया था।

मोहन-जो-दाडो वर्तमान लरकाना, सिंधु प्रांत (पाकिस्तान) में है।

हडप्पा का उत्खनन विद्वान दयाराम साहनी के निर्देशन में हुआ।

सिंधु घाटी सभ्यता नगरीय थी।

हडप्पा वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मिन्टगुमरी में है।

सिंधु निवासियों का मुख्य अनाज गेहूं था।

सिंधु सभ्यता में नुकीले स्तंभ नहीं थे।

कपडे की छाप से ज्ञात होता है कि सिंधु निवासी सूती वस्त्र पह
थे।

हडप्पा का क्षेत्रफल सबसे अधिक है।

लोथल भोगबा और साबरमती नदियों के मध्य में है।

सिंधु सभ्यता 500 वर्षों तक अपनी चरमोत्कर्ष पर रही।

सिंधु निवासी पशुपति के उपासक थे।

सिंधु सभ्यता में अंतिम संस्कार में शव दफन करने की परम्परा

सिंधु निवासी मुद्रणकला से अनभिज्ञ थे।

लिपिभाव चित्रात्मक थी इसलिए इसे अनार्य सभ्यता भी कहते हैं

सिंधु सभ्यता के बर्तन काले, पीले तथा लाल थे।

सिंधु मुद्राओं पर गाय प्रदर्शित है।

सैन्धव लोग कबूतर और फाख्ता की उपासना करते थे।

सिंधु निवासी चित्रित बर्तन प्रयोग करते थे।

जल निकास व्यवस्था (नालियां) सिंधु सभ्यता की प्रमुखता है।

भवन निर्माण में सिंधु सभ्यतावासी आग में पकी हुई ईंट प्रयोग

सडकें चौड़ी-सीधी एवं समकोण पर काटती थीं।

सिंधु निवासी बैल की भी उपासना करते थे।

सिंधु आवास–

1. छत–सीधी एवं सपाट
2. रोशनदानयुक्त
3. भवन–तीन मंजिले
4. मुख्यद्वार मुख्यमार्ग पर नहीं
5. ढकी हुई नालियां

सिंधु लेखों का संकलन जी.आर. हंटर ने किया।
सिंधु लेख में सामान्यतः 18–20 चिह्न हैं।
सिंधु लिपि प्राक् वैदिक भाषा पर आधारित है। यह मत डॉ एस.आर. राव ने रखा।
अनुमान है कि सुमेर से 200 ई.पू. तक व्यापार समाप्त हो गया था।
सिंधु सभ्यतावासी चांदी और तांबे का प्रयोग आभूषणों में करते थे।
लोथल नगर के दो ओर दीवार थी।
सुमेर से सिंधु मुहर की छाप वाला कपड़ा मिलना यह सिद्ध करता है कि सिंधु सभ्यता मेसोपोटामिया को सूती वस्त्र का निर्यात करता था।
सिंधु मुहर पर तीन मुखों वाली मूर्ति के बाल सिंग के समान हैं।
सिंधु स्थलों से प्राप्त नवीनतम वस्तु हैं–पकी हुई मिट्टी की दवात।
1954 ई. में लोथल को डॉ. एस.आर. राव ने खोजा।
दक्षिण भारत में सुदूरतम् सिंधु स्थल है–भगत्रव
कालीबंगा से हल के प्रयोग के चिह्न मिले हैं।
कालीबंगा सूखी हुई (वर्तमान में) घग्घर नदी (राजस्थान) के किनारे है।
कालीबंगा के एक दुर्ग के अंदर एक चबूतरे पर अग्निकुण्ड बना है।
भटिण्डा (पंजाब) की तहसील मनसा के 21 स्थलों से सिंधु सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
सिंधु सभ्यता लिपि का सबसे लम्बा लेख पकी हुई मिट्टी की चौकोर मुहर पर मिला है।
सिंधु समाज में योद्धा वर्ग नहीं मिलता।
मोहन-जो-दाड़ो को अनेक बाढ़ों का सामना करना पड़ा।
सिंधु सभ्यता में केंद्रीय शासन तंत्र था।
मोहन-जो-दाड़ो के एक मकान से हड्डियों का ढांचा और तांबे की कुल्हाड़ी मिली है।
सिंधु सभ्यतावासी यज्ञ नहीं करते थे।
सिंधु निवासी भी आर्यों की भांति चार जातियों मे विभक्त थे।
आर्यों का भौगोलिक राज गंगा तक सीमित था।
बलिप्रथा का उल्लेख ऋग्वेद में है।

अभिलेख एवं मुद्राएं

गुप्तवंश के अभिलेख

117 प्राप्त गुप्त अभिलेखों की संख्या 42 है। इनका विभाजन निम्न है–

(क) 27 पाषाण पर, इनमें–

22 व्यक्तिगत दानपत्र

01 राजकीय हैं और

04 प्रशस्तियां हैं। ये प्रशस्ति-पत्र–2 समुद्रगुप्त के एवं 2 स्कंदगुप्त के हैं।

(ख) 15 अभिलेखों मे–

01 लौह स्तम्भ (कुतुबमीनार प्रांगण में स्थित)

14 दान-पत्र, इनमें–

03 भूमि संबंधी

10 मंदिरों के ब्राह्मणों को अनुमोदित और

01 वैयक्तिक दान-पत्र है।

118 समुद्रगुप्त के अभिलेख–

1. प्रयाग प्रशस्ति (स्तम्भ लेख) – इलाहाबाद जिला, उ.प्र.
2. एरण प्रशस्ति (शिलालेख) – सागर, जिला, म.प्र.
3. नालंदा-गया प्रशस्ति (शिलालेख) – गया, बिहार

119. रामगुप्त के अभिलेख–

1. 2 जैन प्रतिमाओं की पीठिकाओं पर अंकित अभिलेख।

120. चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के अभिलेख–

1. मथुरा स्तंभ लेख – मथुरा, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 61)
2. उदयगिरि गुहालेख – भिलसा, मध्य प्रदेश (गुप्त सम्वत् 61)
3. गढ़वा शिलालेख – जिला इलाहाबाद (प्रयाग), उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 88)
4. सांची शिलालेख – सांची, मध्य प्रदेश (गुप्त सम्वत् 93)
5. उदयगिरि का द्वितीय गुहालेख – भिलसा, मध्य प्रदेश (गुप्त सम्वत् अज्ञात)
6. मथुरा शिलालेख – मथुरा, उत्तर प्रदेश (खण्डित एवं तिथिविहीन)
7. महरौली लौह स्तभ – दिल्ली (तिथिविहीन)

गोविन्दगुप्त का अभिलेख–

मालवा के मन्दसौर में दुर्गभित्ति से प्राप्त अभिलेख।

कुमारगुप्त के अभिलेख–

1 भिलसद स्तंभ लेख – एटा, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 96)
2 गढ़वा का द्वितीय लेख – इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 98)
3 गढ़वा का तृतीय लेख – इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 98)
4 मथुरा जैन मूर्ति लेख – मथुरा, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 113)
5 उदयगिरि गुहालेख – भिलसा, मध्य प्रदेश (गुप्त सम्वत् 116)
6 तुमैन का शिलालेख – गुना जिला, मध्य प्रदेश (गुप्त सम्वत् 116)
7 धानौदह का ताम्रपत्र – राजशाही जिला, अब बंगला देश में (गुप्त सम्वत् 116)
8 कमरदण्डा शिवलिंग लेख – फैजाबाद, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 117)
9 कुलैकुरी लेख – बंगला देश (गुप्त सम्वत् 120)
10 दामोदर का प्रथम ताम्रपत्र – दीनाजपुर, बंगला देश (गुप्त सम्वत् 124)
11 दामोदर का द्वितीय ताम्रपत्र – दीनाजपुर, बंगला देश (गुप्त सम्वत् 128)
12 बैग्राम ताम्रपत्र – बोगरा जिला, बंगला देश (गुप्त सम्वत् 128)
13 मनकुवार बुद्ध मूर्ति लेख – इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 129)
14 सांची लेख – सांची, मध्य प्रदेश (गुप्त सम्वत् 131)
15 मथुरा द्वितीय जैन मूर्ति लेख– मथुरा, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 135)
16 मन्दसौर प्रशस्ति – मालवा, मध्य प्रदेश (मालवा सम्वत् 529)

स्कदगुप्त के अभिलेख–

1 बिहार स्तंभ लेख – पटना, बिहार (तिथिविहीन)
2 भितरी स्तंभ लेख – गाजीपुर, उत्तर प्रदेश (तिथिविहीन)
3 जूनागढ शिलालेख – काठियावाड़, सौराष्ट्र (गुप्त सम्वत् 136)
4 कहौम स्तंभ लेख – गोरखपुर, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 141)
5 सुपिया स्तंभ लेख – रीवां, मध्य प्रदेश (गुप्त सम्वत् 141)
6 इन्दौर ताम्रपत्र – बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 146)
7 गढ़वा का शिलालेख – इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 148)

कुमारगुप्त का अभिलेख–

वाराणसी के समीप सारनाथ से प्राप्त (गुप्त सम्वत् 154)

पुरुगुप्त का अभिलेख–

भीतरी स्तंभ लेख – गाजीपुर, उत्तर प्रदेश (तिथिविहीन)

कुमारगुप्त द्वितीय का अभिलेख–

1. भीतरी मुद्रा लेख — गाजीपुर, उत्तर प्रदेश (तिथिविहीन)
2. सारनाथ लेख — वाराणसी, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 154)
3 नालन्दा मुद्रा लेख

127. बुद्धगुप्त का अभिलेख–
1. सारनाथ प्रतिमा लेख — वाराणसी, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 157)
2. पहाड़पुर ताम्रपत्र — राजशाही, बंगलादेश (गुप्त सम्वत् 159)
3. दामोदर ताम्रपत्र — दीनाजपुर, बंगलादेश (गुप्त सम्वत् 163)
4. एरण स्तंभ लेख — सागर, मध्य प्रदेश (गुप्त सम्वत् 165)
5. राजघाट स्तंभ लेख — वाराणसी, उत्तर प्रदेश (गुप्त सम्वत् 159)
6. दामोदर ताम्रपत्र — दीनाजपुर, बंगलादेश (गुप्त सम्वत् 169)

128. वैन्यगुप्त का अभिलेख–
गुणेधर ताम्रपत्र — कोमिल्ला जिला, बंगलादेश (गुप्त सम्वत् 188)

129. भानुगुप्त का शिलालेख–
एरण स्तंभ लेख — सागर, मध्य प्रदेश (गुप्त सम्वत् 191)

130. विष्णुगुप्त का अभिलेख–
दामोदर ताम-पत्र — दीनाजपुर, बंगला देश (गुप्त सम्वत् 224)

131. गुप्तकालीन मुद्राएं–
1. लेनिनग्राद (रूस) से प्राप्त 'गुप्त अक्षरों' से युक्त, जिस पर 'धये' लिखा है, प्राप्त हुई है।
2. चन्द्रगुप्त प्रथम की स्वर्ण मुद्रा, जिस पर चन्द्रगुप्त तथा कुमार देवी का चित्र अंकित है।
3. समुद्रगुप्त की गरुड़ ध्वजधारी मुद्रा।
4 समुद्रगुप्त की वीणाधरी मुद्रा।
5. कांच की स्वर्ण मुद्रा।
6. चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की रजत मुद्रा।
7. कुमारगुप्त प्रथम की अश्वारोही मुद्रा
8. स्कंधगुप्त–राजा-रानी एवं लक्ष्मी मुद्रा।
9. विष्णुगुप्त की धनुर्धारी स्वर्ण मुद्रा।
10. वैन्यगुप्त की आभूषणयुक्त स्वर्ण मुद्रा।
11. चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की सिंह–वध मुद्रा।
12. कुमारगुप्त प्रथम की गैंड़ा-वध मुद्रा।
13. कुमारगुप्त प्रथम की गजारोही मुद्रा।
14 समुद्रगुप्त की परशु मुद्रा।
15. समुद्रगुप्त की अश्वमेध मुद्रा।

16. समुद्रगुप्त की व्याघ्र मुद्रा।
17. चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की धनुर्धर मुद्रा।
18. चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की पर्यंक मुद्रा।
19 चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की छत्र मुद्रा।
20. चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की चक्रविक्रम मुद्रा।
21. चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की अश्वारोही मुद्रा।
22. कुमारगुप्त प्रथम की धनुर्धर मुद्रा।
23. कुमारगुप्त प्रथम की तलवार मुद्रा।
24. कुमारगुप्त प्रथम की व्याघ्र-वध मुद्रा।
25 कुमारगुप्त प्रथम की मयूर मुद्रा।
26. कुमारगुप्त प्रथम की अप्रतीत मुद्रा।
27 कुमारगुप्त प्रथम की छत्र मुद्रा।
28. कुमारगुप्त प्रथम की वीणा मुद्रा।
29. कुमारगुप्त प्रथम की राजा-रानी मुद्रा।
30. गुप्त मुद्राओं का तौल एवं प्राप्त संख्या–

1. चन्द्रगुप्त प्रथम	– 119 ग्रेन	– 10 मुद्राएं	
2. कांच	– 116 ग्रेन	– 15 मुद्राएं	
3. समुद्रगुप्त	– 118 ग्रेन	– 173 मुद्राएं	
4. चन्द्रगुप्त द्वितीय	– 121 ग्रेन		
	125 ग्रेन	– 961 मुद्राएं	
	132 ग्रेन		
5. कुमारगुप्त प्रथम	– 124 ग्रेन	– 129 ग्रेन	– 961 मुद्राएं
6. स्कंदगुप्त	– 130 ग्रेन	– 144 ग्रेन	–1 मुद्रा

अध्याय पांच

वंशावली एवं इतिहास

	मगध	— बृहद्रथ।
	हर्यकवंश	— क्षेत्रोज→बिंबसार→अजातशत्रु→दर्शक→उदयभद्र→शिशुनाग।
	मौर्यवंश	— चन्द्रगुप्त मौर्य→बिन्दुसार→अशोक→तिस्म→कुणाल अथवा सुयशस्→जालौक→तीवर→दशरथ→सम्प्रति→देववर्मन् अथवा सोमशर्मन्→शतधनुस्→वृहद्रथ।
	सातवाहनवंश	— सिमुक→कृष्ण→शातकर्णी प्रथम→वेदिश्री→सतिश्री→शातकर्णी द्वितीय→हाल→शातकर्णी तृतीय→पुलुमायि द्वितीय→शिवपुत्र पुलुमायि→श्री शिवखण्ड शतकर्णी→श्रीयन→स्वामी साकेशन→ पुलुमायि चतुर्थ।
	कुषाण वंश	— कैडफिसिज प्रथम→कैडफिसिज द्वितीय→कनिष्क प्रथम।
	नागवंश	— शेषनाग→भोगिन्→रामचंद्र→धर्मवर्मा→वंगर→भूतनंदी→शिशुनदी →यशनन्दी→पुरुषदत्त→उत्तमदत्त→कामदत्त→ भवदत्त→शिवदत्त।
7	गुप्तवंश	— श्रीगुप्त→घटोत्कच→चंद्रगुप्त प्रथम→समुद्रगुप्त→रामगुप्त→ चंद्रगुप्त द्वितीय→कुमारगुप्त→स्कंदगुप्त→नरसिंहगुप्त बालादित्य→ कुमारगुप्त द्वितीय→बुद्धगुप्त→तथागुप्त→ बालादित्य द्वितीय→कृष्णगुप्त→हर्षगुप्त→जीवितगुप्त→ कुमारगुप्त तृतीय→दामोदरगुप्त→महासेनगुप्त→देवगुप्त→ माधवगुप्त→आदित्यसेन गुप्त→देवगुप्त तृतीय→विष्णुगुप्त द्वितीय→जीवितगुप्त द्वितीय।
3	वाकाटक वंश	— विंध्यशक्ति→प्रवरसेन→पृथ्वीसेन प्रथम→नरेन्द्र सेन→पृथ्वीसेन द्वितीय।
	मैत्रक वंश	— वलभी→धरसेन प्रथम→ध्रुवसेन प्रथम→गृहासेन→धरसेन द्वितीय →शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य→खारागृह→धरसेन तृतीय→ध्रुवसेन द्वितीय→धरसेन चतुर्थ→शीलादित्य चतुर्थ।
10	मौखरी वंश	— यज्ञवर्मा→हरिवर्मा→आदित्यवर्मा→ईश्वरवर्मा→ईशानसेन→ सर्ववर्मा→अवन्तिवर्मा→ग्रहवर्मा
1	वर्धन वंश	— नरवर्धन→(अज्ञात)→आदित्यवर्धन→प्रभाकरवर्धन→हर्षवर्धन

आयुध राजकुल	— वज्रायुद्ध→इन्द्रायुध→चक्रायुध
शुग वंश	— पुष्यमित्र→अग्निमित्र→वसुजेष्ठ अथवा सुज्येष्ठ→वसुमित्र→ आद्रक अथवा ओद्रक→पुलिन्दक→घोष→वज्रमित्र→भागवत→ देवभूति अथवा देवभूमि।
काव्य (कण्व)वंश	— वसुदेव→भूमिमित्र→नारायण→सुशर्मन्।
गुर्जर प्रतिहार (उज्जैन)	— नागभट्ट प्रथम→ककुस्थ अथवा कककुफ→देवराज वत्सराज →नागभट्टी द्वितीय→रामभद्र→मिहिरभोज प्रथम→महेन्द्रपाल→ मिहिर भोज द्वितीय→महीपाल प्रथम→महेन्द्रपाल द्वितीय→देवपाल →विनायकपाल द्वितीय→महीपाल द्वितीय→राज्यपाल→ त्रिलोचन पाल→यशपाल।
गाहडवाल वंश	— यशोविग्रह→महीचन्द्र→चन्द्रदेव→मदनपाल→गोविन्दचंद्र→ विजयचन्द्र→जयचन्द्र→हरिश्चंद्र।
चहमान वंश (शाकम्भरी)	— वासुदेव→चंद्रराज प्रथम→दुर्लभराज→गूवक प्रथम →चन्द्रराज द्वितीय→गूवक द्वितीय→चंदन→वाक्पतिराज प्रथम →सिंहराज→विग्रहराज द्वितीय→दुर्लभराज→गोविन्दराज द्वितीय →वाक्पतिराज द्वितीय→वीर्यराम→चामुण्डराज→सिंहघाट→ दुर्लभराज तृतीय→वीर सिंह→विग्रहराज तृतीय→पृथ्वीराज प्रथम→अजयराज→अर्णोराज→जुगदेव→विग्रहराज चतुर्थ→ पृथ्वीराज द्वितीय→सोमेश्वर→पृथ्वीराज तृतीय।
पालराजकुल	— गोपाल→धर्मपाल→देवपाल→विग्रहपाल प्रथम→रायाणपाल→ राज्यपाल→गोपाल द्वितीय→विग्रहपाल द्वितीय→महीपाल प्रथम →नयपाल→कुमारपाल→गोपाल तृतीय→मदनपाल।
सेनराज कुल	— सामन्तसेन→हेमन्तसेन→विजयसेन→बल्लालसेन→ लक्ष्मणसेन→विश्वरूपसेन→केशवसेन।
त्रिपुरी के कलचुरी राजकुल	— कोकल्ल प्रथम→शंकरनाग→बालहर्ष→युवराज प्रथम→ लक्ष्मणराज→युवराज द्वितीय→कोकल्ल द्वितीय→लक्ष्मीकर्ण→ यशकर्ण→गयकर्ण→नरसिंह→जयसिंह→विजय सिंह।
चदेल राजकुल	— नान्नुक→वाक्यपति→जयशक्ति अथवा जेजा→विजय शक्ति→ शाहिल→हर्ष→यशोवर्मन्→धंगदेव→गंडदेव→विद्याधर→ विजयपाल→देववर्मन्→कीर्तिवर्मन्→सल्लक्षणवर्मन्→ जयवर्मन्→पृथ्वीवर्मन्→मदनवर्मन्→परमर्दिदेव।
मालवा का परमार राजकुल	— उपेन्द्र→वैरिसिंह प्रथम→सियक प्रथम→वाक्यपति प्रथम→ वैरिसिंह द्वितीय→सियक द्वितीय→मुंज→सिंधुराज→भोज→ जयसिंह→उदयादित्य→लक्ष्मण देव अथवा जगद्देव→नरवर्मन्

→यशोवर्मन्→जयवर्मन→विंध्यवर्मन्→सुभटवर्मन्।

23 गुजरात चालुक्य– मूलराज प्रथम→चामुंडराज→वल्लभराज→दुर्लभराज→ राजकुल भीम प्रथम→कर्ण→जयसिंह→कुमार पाल→अजय पाल→मूलराज द्वितीय→भीम द्वितीय।

24 कल्याणी का – तैल द्वितीय→सत्याश्रय→विक्रमादित्य पंचम एवं अय्यण चालुक्यराजवंश (सम्मिलित रूप से शासक)→जयसिंह द्वितीय→सोमेश्वर प्रथम →विक्रमादित्य→सोमेश्वर द्वितीय→विक्रमादित्य→सोमेश्वर तृतीय→जगदेव मल्ल→तैल तृतीय→सोमेश्वर चतुर्थ।

25 चोल राजकुल – विजयालय→आदित्य→परांतक→(तंजावूर) गंडरादित्य→ (तंजावूर) परांतक द्वितीय→उत्तर चोल→राजराज→राजेन्द्र चोल→ राजाधिराज प्रथम→राजेन्द्र द्वितीय→राजेन्द्र तृतीय या वीर राजेन्द्र→अधिराजेन्द्र।

26 चालुक्य चोलवंश–कुलोत्तुंग प्रथम→विक्रम चोल→कुलोत्तुंग द्वितीय→राजराज द्वितीय→राजाधिराज द्वितीय→कुलोत्तुंग तृतीय→राजराज तृतीय→ राजेन्द्र तृतीय।

27 राष्ट्रकूट वंश – दन्तिदुर्ग→कृष्ण प्रथम→गोविंद द्वितीय→ध्रुव (धारावर्ष)→गोविंद तृतीय→अमोघवर्ष→कृष्ण द्वितीय→इन्द्र तृतीय→गोविन्द चतुर्थ→ अमोघवर्ष तृतीय→कृष्ण तृतीय→खोटिख→कर्क द्वितीय।

28 पल्लव वंश – सिंहविष्णु→महेन्द्रवर्मन्→नरसिंहवर्मन् प्रथम→महेन्द्रवर्मन् द्वितीय →राजसिंह→परमेश्वरन द्वितीय→नंदिवर्मन् पल्लवमल्ल→ दंतिवर्मन्→नंदिवर्मन् तृतीय→नृपतुंग वर्मन्→अपराजित।

29 यामिनी वंश – सुबुक्तगीन→महमूद गजनवी एवं इस्माइल(दोनों भाई)→ मुहम्मद (गजनवी का पुत्र)→मसूद प्रथम→मजइद→मादूद→ मसूद द्वितीय→अली→अब्दुलरशीद→फर्रूखजाद→इब्राहीम→ मसूद तृतीय→शेरजाद→अरसैन→बहरामशाह→खुसरवशाह→ खुसरव मलिक।

30 शंसबनी वंश – इजुद्दीन हसन→कुतुबुद्दीन हसन→सैफुद्दीन सूरी→अलाउद्दीन हुसैन→सैफुद्दीन मुहम्मद→गियासुद्दीन मुहम्मद→मुईजुद्दीन मुहम्मद→कुतुबुद्दीन ऐबक (गुलाम था)।

31 ऐबक वंश – कुतुबद्दीन ऐबक→आरामशाह

32 इल्तुतमिश वंश– शमसुद्दीन इल्तुतमिश→नासिरुद्दीन→रुकुनुद्दीन फिरोज→रजिया →मुईजुद्दीन बहराम→अलाउद्दीन मसूद→महमूद→बहरामउद्दीन बलबन→बुगराखां→कैकुबाद→शमसुद्दीन कयूमर्स।

33 खिलजी वंश – याघ्रेशखां→जलालुद्दीन फिरोज→रुकुनुद्दीन इब्राहिम→अलाउद्दीन

मुहम्मद→शिहाबुद्दीन उमर→कुतुबुद्दीन मुबारक→नासिरुद्दीन खुसरव।

तुगलक वंश — अज्ञात→गियासुद्दीन तुगलक→फखरुद्दीन→फिरोज→ गियासुद्दीन द्वितीय→अबूबक्र→मुहम्मद-बिन-फिरोज→ हुमायूं खां अलाउद्दीन सिकदर→नासिरुद्दीन महमूद।

सैय्यद वंश — मलिक सुलेमान→मुईजुद्दीन मुबारकशाह→मुहम्मदशाह→ अलाउद्दीन आलमशाह।

लोदी वंश — बहराम लोदी→बहलोल लोदी→निजाम→इब्राहिम

शर्की वंश — मलिकसरर (हिजड़ा)→मलिककरनकूल→इब्राहिम→महम्मूदशाह→ भिक्खन मुहम्मदशाह→हुसैनशाह।

सगमवंश — हरिहर एवं बुक्का→हरिहर द्वितीय→देवराय प्रथम→विजय बुक्का अथवा वीर विजय→देवराय द्वितीय→विरुपाक्ष।

सलुव वंश — नरसिंह सलुव।

तुलुव वंश — वीर नरसिंह→कृष्णदेवराय→अच्युतराय→सदाशिव।

मुगल राजकुल — बाबर→हुमायूं→अकबर→जहांगीर→शाहजहां→औरंगजेब।

सूर राजवंश — शेरशाह→इस्लामशाह (जलाल खां)→फिरोजशाह→मुहम्मद आदिलशाह।

भोसला वंश — बालाजी→शिवाजी→शम्भाजी→राजाराम→शाहू।

पेशवा — पेशवा बालाजी विश्वनाथ→पेशवा बाजीराव→पेशवा बालाजी बाजीराव→पेशवा माधवराय नारायन→पेशवा नारायनराव।

बगाल के गवर्नर — लाइव→हॉलबैल→वेन्सिटार्ट→क्लाइव→बेरेलस्ट→कार्टियर→ वारेन हेस्टिंग्ज→सर जान मैक्करसन→अर्ल कार्निवालिस→ सर जान शोर→सर ए. क्लार्क (स्थानापन्न)→अर्ल आफ मिन्टो→ मार्क्विस आफ हेस्टिंग्ज→एमहर्स्ट→विलियम लीटर बर्थ बेली (स्थानापन्न)→लार्ड विलियम बैंटिंक→अर्ल आफ ऑकलैण्ड→ अर्ल एलनबरो→सर हेनरी हार्डिंग→अर्ल आफ डलहौजी।

गवर्नर-जनरल तथा वायसराय — लार्ड केनिंग→लार्ड एल्गिन प्रथम→सर जान लारेन्स→ अर्ल आफ मयो→अर्ल आफ नार्थबुक→अर्ल आफ लिटन प्रथम→ मार्क्विस आफ रिपन→अर्ल आफ डफरिन→मार्क्विस आफ लेंसडाउन→अर्ल आफ एलिगन द्वितीय→लार्ड कर्जन→अर्ल आफ मिन्टो द्वितीय→बैरन हार्डिंग आफ पेन्सहर्स्ट→बैरन चैम्सफर्ड→अर्ल आफ रीडिंग→लार्ड आफ इर्विन→लार्ड आफ वैलिंगटन→मार्क्विस आफ लिनलिथगो।

क्राउन के प्रतिनिधि — मार्क्विस आफ लिनलिथगो→लार्ड बेवल→लार्ड माउंटबेटन→ चक्रवर्ती राजगोपालाचारी।

स्वतंत्र भारत के जनक – मोहनदास कर्मचंद गांधी।

स्वतंत्र भारत के गवर्नर जनरल – आचार्य राजगोपालाचारी (प्रथम एवं अंतिम)।

भारत गणराज्य के राष्ट्रपति – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद–डॉ. एस. राधाकृष्णन→डॉ. जाकिर हुसैन→ वारहगिरि वेंकटगिरि→फखरुद्दीनअली अहमद→नीलम सजीव रेड्डी→ज्ञानी जैल सिंह→आर. वेंकटरमण→डॉ. शंकरदयाल शर्मा→के.आर. नारायणन (वर्तमान)।

भारत गणराज्य प्रधान मंत्री – पं. जवाहरलाल नेहरू→लालबहादुर शास्त्री→इंदिरा गांधी→ मोरारजीभाई देसाई→चरणसिंह→इंदिरा गांधी→राजीव गांधी→ विश्वनाथप्रताप सिंह→चंद्रशेखर→पी.वी. नरसिंहराव→ अटल विहारी वाजपेयी→एच.डी. देवेगोडा→इन्द्रकुमार गुजराल→ अटल विहारी वाजपेयी (वर्तमान)।

कार्यवाहक प्रधान मंत्री – गुलजारी लाल नन्दा
पहली बार पं० नेहरू की मृत्यु के उपरांत
दूसरी बार लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के उपरांत

विशेष

धृतराष्ट्र के पुत्र एवं पुत्री – दुर्योधन, युयुत्सु, दुश्शासन, दुस्सह, दुशशाल, जलसंघ, सम, सह बिंध, अनुविन्द, दुर्धर्ष, सुबाहु, दुष्प्रप्रघर्षण, दुर्मर्षण, दुर्मुख, दुष्कर्ण, कर्ण, विविंशति, विकर्ण, शल, सत्व, सुलोचन, चित्र, उपचित्र, चित्राक्ष, चारुचित्र, शरासन्, दुर्मद, दुर्विगाह, विवित्सु, विकयनन, ऊर्णनाभ, सुपान, नंद, उपनंद, चित्रबाण, चित्रवर्मा, सुवर्मा, दुर्विरोचन, आयोबाहु, महाबाहु, चित्रांग, चित्रकुण्डल, भीमवेग, भीमबल, बलाकी, बलवर्धन, उग्रायुध, सुषेण, कुण्डोदर, महोदर, चित्रायुध, निषंगी, पाशी, वृन्दारक, दृढवर्मा, दृढ़क्षत्र सोमकीर्ति, अनूदर, दृढ़संध, जरासंध, सत्यसंध, सद:सुवाक, उग्रश्रवा, उग्रसेन सेनानी, दुष्पराजय, अपराजित, पण्डितक, विशालाक्ष, दुराधर, दृढ़हस्त, सुहस्त, वातवेग, सुवर्चा, आदित्यकेतु, बह्वाशी, नागदत्त, अग्रयायी, कवची, क्रथन, दण्डी, दण्डाधार, धनुर्ग्रह, उग्र, भीमरथ, बीरबाहु, अलोलुप, अभय, रौद्रकर्मा, दृढ़रथाश्रय, अनाधृष्य, कुण्डभेदी, बिराली, विचित्र कुण्डलों से सुशोभित प्रमथ, प्रमाथी, दीर्घरोमा दीर्घबाहु, महाबाहु व्यूढोरू कुण्डाशी तथा बिरजा

पुत्री—दु:शाला।

'4 पाण्डु के पुत्र — युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल एवं सहदेव।

55 दशरथ के पुत्र— राम, भरत, लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न।

इतिहास

कौटिल्य का वास्तविक नाम—विष्णुगुप्त था। चणक उनके पिता का नाम था इसलिए उन्हें चाणक्य कहते हैं। वे कुटल गोत्र में पैदा हुए इसलिए उन्हें कौटिल्य कहते हैं।

2 कौटिल्य मौर्य साम्राज्य के वास्तविक संस्थापक, चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु एवं प्रधानमन्त्री थे।

3 मौर्य साम्राज्य से पूर्व 16 महा—जनपद थे।

4 चाणक्य ने सभी 16 जनपदों सहित एक बृहत्तर भारत को चन्द्रगुप्त मौर्य के अधीन संगठित किया।

5 मगध—वर्तमान में दक्षिण बिहार के प्रदेश।

5 मगध—राजधानी राजगृह थी (पाली भाषा में—राजगह)।

7 बिंबिसार के पुत्र अजात शत्रु ने 493—461 ई.पू. तक शासन किया।

8 लिच्छवि मगध के उत्तरी भाग में रहते थे।

9 लिच्छवि की राजधानी वैशाली थी।

10 अजात शत्रु का पुत्र उदय या उदयी मगध की राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र ले गया था।

11 मगध के दूसरे नाम हैं—

1. मगधपुर
2. वसुमति
3. वृहदथपुर
4. कुशाग्रपुर
5. बिम्बिसारपुरी

12 सिकन्दर के अंतिम आक्रमण में—

1. 30 हजार पैदल
2. 4 हजार अश्वारोही
3. 300 रथ
4. 200 हाथियों ने भाग लिया

13 सिकन्दर मकदूनियां के राजा फिलिप्स का पुत्र था।

अरस्तू सिकन्दर का गुरु था।
चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी उसका पुत्र बिन्दुसार था।
ऋषभ सम्राट भरत के पिता थे।
पार्श्वनाथ के पिता--बनारस के राजा अश्वसेन थे।
पार्श्वनाथ का विवाह सम्राट नरवर्मा की पुत्री प्रभावती से हुआ था।
पार्श्वनाथ 23वें तीर्थंकर और कैवल्य के नाम से प्रसिद्ध हुए।
अशोक ने अपने शासन के 13वे वर्ष में कलिंग पर आक्रमण किया
धर्म महापात्र नामक पद का आविष्कार अशोक ने किया था।
पाटलिपुत्र का शासन 30 सदस्यों की एक समिति के हाथों में था।
पुष्यमित्र मौर्य सेना का सेनापति था।
पुष्यमित्र ने 36 वर्षों तक शासन किया।
अयोध्या के शिलालेख पुष्यमित्र शुंग के दो अश्वयज्ञ की पुष्टि करते
शुगवंश ने 112 वर्ष तक शासन किया।
पुष्यमित्र के बाद अग्निमित्र ने 17 वर्ष तक शासन किया।
शुगवंश का 73 ई.पू. में साम्राज्य का अंत हुआ।
वासुदेव अंतिम शुंग राजा का मन्त्री था।
शुगवंश के 112 वर्षों के शासन में 45 वर्ष कण्ववंश के भी हैं।
प्राकृत भाषा का विकास सातवाहन या अंध्रवंश में हुआ।
सातवाहन ब्राह्मण थे।
सातवाहन सैनिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे।
सातवाहनों की राजधानी--श्रीकृष्णकुलम (कृष्णा नदी तट पर) थी
सातवाहनों का सर्वश्रेष्ठ शासक था--गौतमीपुत्र शतकर्णी (70 ई.पू.-
सातवाहन शासन काल में--

1. एक स्वर्ण सिक्का = 35 चांदी के सिक्के
2. एक कार्षापण = 146.4 ग्रेन (चांदी का सि
3. एक रत्ती = 1.38 ग्रेन

अमरावती स्तूप का ढोल 20 फुट ऊंचा है।
कुषाण काल में--

1. गांधार कला का उदय
2. बौद्ध मूर्ति का आगमन हुआ।

कुषाण शिव के अनुयायी थे।
कुषाण शासकों ने स्वर्ण एवं चांदी के सिक्के जारी किये।
कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि--78 ई. है।
कनिष्क शक सम्वत् (78 ई.) का संस्थापक।

कनिष्क के राज्य की राजधानी पुरुषपुर थी।

कनिष्क बौद्ध धर्म का अनुयायी था।

कनिष्क ने चतुर्थ बौद्ध सभा का आयोजन किया था जिसमें 500 बौद्ध अनुय
आमंत्रित थे।

वसुमित्र चतुर्थ बौद्ध सभा का अध्यक्ष था।

'महाविभाष'—बौद्ध धर्म की पवित्र पुस्तक है।

कनिष्क के शासन काल में एक भी विद्रोह नहीं हुआ।

दण्डनायक एवं महादण्डनायक—कुषाण साम्राज्य की देन है।

मथर—कनिष्क का मंत्री।

बौद्ध विद्वान अश्वघोष के सम्पर्क के उपरांत कनिष्क ने बौद्ध धर्म ग्रहण किय

कुषाण साम्राज्य की राजभाषा—संस्कृत थी।

कुषाण साम्राज्य का व्यापार—रोम से था।

शक सम्वत् एवं गुप्त सम्वत् में 241 वर्षों का अन्तर है।

गुप्त विष्णु के उपासक थे।

गुप्त साम्राज्य 300 ई—650 ई. तक था।

गुप्त कौन थे ? यह विवादित है। गुप्तों का गौत्र धारण बताया जाता है।
अग्रवाल वैश्यों का एक विशिष्ट गौत्र है।

गुप्त इतिहास की प्रमुख प्रशस्तियां हैं—

1. प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख — समुद्रगुप्त
2. बिलसड स्तंभ लेख — कुमारगुप्त
3. भीतरी स्तंभ लेख — स्कंदगुप्त

गुप्त इतिहास का प्रमुख नाटक साहित्य—कौमुदी महोत्सव, देवीचंद्र गुप्तम्

समुद्रगुप्त का दूसरा नाम कांच था।

समुद्रगुप्त का दक्षिण विजय अभियान तीन शिलाओं में विभक्त था—

1. ग्रहण (शत्रु पर अधिकार)
2. मोक्ष (शत्रु को मुक्त करना)
3. अनुग्रह (शत्रु पर दया, राज्य लौटाना)

समुद्रगुप्त के साथ अधीनता में तीन विधिया अपनाई गई—

1. आत्मनिवेदन (गुप्त सम्राट के समक्ष उपस्थिति)
2. कन्योपायन (अपनी पुत्रियों का गुप्त राजघराने में विवाह)
3. गुरुत्भद्रंक (मुक्ति के लिए गरुड़ अंकित शासनादेश प्राप्त कर

चन्द्रगुप्त द्वितीय समुद्रगुप्त एवं दत्तदेवी का पुत्र था।

चन्द्रगुप्त के अन्य नाम—

1. देवराज

2. देवगुप्त

चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के शासन काल में चीनी यात्री फाह्यान (399-41 ई) गोवी मरु प्रदेश की मुसीबतें झेलता हुआ खोतान, पामीर, स्वात तथा गाधा के रास्ते भारत पहुंचा था।

चीनी यात्री फाह्यान पेशावर की पहाड़ियों को पार करके उत्तर--पश्चिमी मार्ग पजाब, मथुरा, कन्नौज, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कुशीनगर, वैशाली, पाटलिपुत्र ए काशी में भ्रमण करता रहा।

फाह्यान ताम्रलिप्त (मिदिनापुर, बंगाल) में तामलुक से सिंघल और जावा ओर जाने वाले जहाज में सवार होकर अपने गृहराष्ट्र के लिए निकल गया।

स्कदगुप्त ने इन्द्रपुर (बुलंदशहर जिले में इन्दौर ग्राम) में सूर्य मन्दिर मे नित दीप जलाने के लिए अर्थदान दिया था।

स्कदगुप्त की उपाधियां--

1. क्रमादित्य
2. शक्रादित्य
3. विक्रमादित्य
4. क्षितिपशतपति (सौ राजाओं का स्वामी)

प्रवरसेन ने सात यज्ञ किये।

प्रवरसेन अपनी राजधानी चानक से पुरीक ले गया था।

606 ई. में हर्ष का राज्याभिषेक 16 वर्ष की अवस्था में हुआ।

हर्ष अपनी राजधानी थानेश्वर से कन्नौज ले आया।

इत्सिंग 672–688 ई. तक भारत में रहा।

हर्ष की मृत्यु 647 ई. में हुई।

युवान च्वांग हर्ष के शासन में भारत में आया था।

प्रतिहारवंश ने 300 वर्षों तक मुस्लिम आक्रमण को रोके रखा।

जेजक भुक्ति--बुंदेलखण्ड का प्राचीन नाम है।

चदेलवंश की राजनीतिक राजधानी--महोत्सवनगर (वर्तमान महोबा) थी सास्कृतिक राजधानी खजुराहो थी।

पल्लववंश के समय कांची विश्वविद्यालय सबसे बड़ा शिक्षा का केन्द्र था।

चोलवंश के पास नौसेना थी।

चोलवंश का राजचिह्न–चीता था।

चोल शिव के उपासक थे।

गोपाल को उस क्षेत्र के प्रमुख व्यक्तियों ने अपना राजा चुना था।

राष्ट्रकूटों ने दीर्घकाल तक शासन किया।

का सबसे महान् सम्राट गोपाल का पुत्र धर्मपाल था जिसने 770–8

ई तक शासन किया।
अंतिम चन्देल शासक परमल, जिसने 1182 ई. में पृथ्वीराज चौहान के स
आत्मसमर्पण किया।
मलिक कफूर, खुसरो और हेमू–हिन्दू थे।
मराठों के पेशवा ब्राह्मण थे।
ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अफगानिस्तान से अजमेर वर्ष 1192 ई. में आये
एकेश्वरवाद मुसलमानों का धार्मिक सिद्धान्त है।
कबीरदास ने 20 हजार दोहे लिखे।
अरब के रेगिस्तान में मुस्लिम सम्प्रदाय की उत्पत्ति हुई।
इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद मक्का (अरब) के निवासी थे।
हजरत मुहम्मद 622 ई. में मक्का छोड़कर मदीना चले गए।
632 ई. में हजरत मुहम्मद का इन्तकाल हो गया।
पैगम्बर मुहम्मद के उत्तराधिकारी खलीफा कहलाये।
प्रथम खलीफा था–अबूवक्र।
अबूवक्र सुन्नी था, अत: उसका वंश उमय्यद कहलाया।
शिया वर्ग का प्रथम खलीफा था–अबुल अब्बास।
अब्बासियों के 500 वर्ष के शासन में 37 खलीफा हुए।
यमीनीवंश गजनवीवंश के नाम से जाना जाता है।
सुबुक्तगीन अलप्तगीन का गुलाम था जो बाद में दामाद बना।
गजनवी ने अपने सिक्कों पर केवल 'अमीर महमूद' अंकित करवाया।
गजनवी के कश्मीर आक्रमण के समय दिद्दा रानी नामक महिला वहां शासन
रही थी।
गजनवी ने 'सोने की चिड़िया' पर प्रथम आक्रमण–1000 ई. में और :
आक्रमण 1027 ई. मे किया।
महमूद गजनवी ने 1024 में सोमनाथ पर आक्रमण किया।
वर्ष 1030 ई. में महमूद गजनवी का इन्तकाल हो गया।
महमूद गजनवी कट्टर सुन्नी था।
गौरी का पूरा नाम था–शिहाबुद्दीन उर्फ मुईजुद्दीन मुहम्मद गौरी।
गौरी ने भारत पर प्रथम आक्रमण 1175 ई. में किया।
महमूद गजनवी और गौरी के आक्रमणों में 148 वर्षों का अंतर था।
गौरी ने भारत में प्रवेश के लिए गोमल दर्रे का प्रयोग किया।
वर्ष 1193 ई. में दिल्ली गौरी के शासन की राजधानी बनी।
15 मार्च, 1206 ई में सिंधु नदी के तट पर दमयक नामक स्थल पर श
नवाज के समय कुछ लोगों ने गौरी का कत्ल कर दिया।

116 दिल्ली का प्रथम मुसलमान शासक था--कुतुबुद्दीन ऐबक।
117 भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक था--कुतुबुद्दीन ऐबक।
118 गौरी के योग्यतम गुलाम थे--

1. कुतुबुद्दीन ऐबक
2. ताजुद्दीन यिल्दिज
3. नासिरुद्दीन कुबाचा

119. गौरी के इन्तकाल के 3 माह बाद जून, 1206 ई. में कुतुबुद्दीन ऐ राज्याभिषेक करवाया।
120 ऐबक अपनी दानशीलता के कारण--'लाखबख्श' (लाखों का दान देने कहलाया।
121. ऐबक ने दिल्ली में हिन्दू एवं जैन मंदिरों को तोड़कर उनके अवशेषों पर उल-इस्लाम' नामक मस्जिद बनवाई।
122. अजमेर में संस्कृत विश्वविद्यालय के स्थान पर 'ढाई दिन का झोपडा' मस्जिद वर्ष 1126 ई. में बनवाई।
123. दिल्ली प्रथम सुल्तान इल्तुतमिश था।
124. इल्तुतमिश ने सुल्तान का पद वंशानुगत बनाया।
125. इल्तुतमिश ऐबक का गुलाम था।
126. इल्तुतमिश 'शम्सीवंश' का था और वह इल्बारी तुर्क था।
127. इल्तुतमिश पहला तुर्क सुल्तान था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाये।
128. इल्तुतमिश के चांदी के टंके का वजन 175 ग्रेन था।
129. रजिया प्रथम मुस्लिम महिला सुल्तान थी--काल 1236-40 ई.।
130 रजिया मर्दों वाली पोशाक पहनती थी।
131. रजिया का जमालुद्दीन याकूत नामक हब्शी से विशेष अनुराग था।
132. बलबन का मूल नाम बहाउद्दीन था।
133. बलबन ने अपने--आप को पौराणिक तुर्की वीर तूरान के अफ्रासीयाल व बताया था।
134. बलबन ने दरबार में सुल्तान का अभिवादन करने के लिए पैबोस और का नियम जारी किया।
135. बलबन ने प्रतिवर्ष ईरानी त्यौहार नौरोज प्रारंभ किया।
136. बलबन की गुप्तचर व्यवस्था उसके निरंकुश शासन का मुख्य आधार
137. कुरान के नियम धार्मिक थे और शरा कहलाते थे।
138. गैर-मुसलमान जिम्मी कहलाते थे।
139. इल्तुतमिश दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने खलीफा से सुल्तान की प्राप्त की और अपने सिक्कों पर बगदाद के खलीफा का नाम खुदवाय

140 जजिया कर गैर-मुसलमानों से वसूल किया जाता था।

141 दिल्ली सल्तनत के वित्तीय स्रोत–

1. खराज
2. उश्र
3. जजिया
4. खम्स
5. जकात

142 दिल्ली सल्तनत के शिक्षा संस्थान–

1. एक मस्जिद से लगा हुआ मकतब
2. मदरसा

143 जलालुद्दीन फिरोज दिल्ली का प्रथम तुर्की सुल्तान था जिसने उदार निरंकुशवाद का आदर्श अपने सामने रखा।

144 दक्षिण भारत पर पहला तुर्की आक्रमण अलाउद्दीन खिलजी ने किया।

145 अलाउद्दीन खिलजी ने चार अध्यादेश जारी किए–

1. धर्मस्वों तथा माफी की भूमि जब्त कर ली थी
2. गुप्तचर विभाग का पुनर्गठन
3. मदिरा तथा मादक द्रव्यों पर प्रतिबंध
4. अमीरों के सामाजिक सम्मेलनों तथा विवाह संबंधों पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

146 खुसरवशाह नासिरुद्दीन भारतीय मुसलमान था।

147 गियासुद्दीन तुगलक ने राजकीय ऋण वसूल करने के लिए शारीरिक यातनाएं देने की प्रथा बंद करवायी।

148 गियासुद्दीन तुगलक ने डाक-व्यवस्था को सुसंगठित किया।

149 गियासुद्दीन तुगलक से शेख निजामुद्दीन औलिया ने कहा था–'हुनूज दिल्ली दूर अस्त' (दिल्ली अभी बहुत दूर है)।

150 मुहम्मद तुगलक ने दिवाने कोही (कृषि विभाग) स्थापित किया।

151 मुहम्मद तुगल ने सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन किया।

152 मुहम्मद तुगलक ने इब्नबतूता को अपना राजदूत बनाकर चीन के मंगोल सम्राट के दरबार में भेजा।

153 फीरोज तुगलक ने 24 कष्टप्रद करों को समाप्त कर दिया।

154 फीरोज तुगलक दिल्ली का प्रथम सुल्तान था जिसने अपने-आपको खलीफा का नाइब घोषित किया।

155 फीरोज तुगलक पहला दिल्ली सुल्तान था जिसने अन्य धर्मावलंबियों को मुसलमान बनाने का साधन अपनाया।

156. फीरोज तुगलक का प्रधानमंत्री तैलंगाना ब्राह्मण था, वह बाद में मुसलमान नाम था–खानेजहां मकबूल।
157. सिकन्दर लोदी की सफलता का श्रेय उसकी गुप्तचर व्यवस्था को है
158. सिकन्दर लोदी ने नाज से चुंगी हटा दी।
159. सिकन्दर लोदी ने आगरा को अपनी राजधानी बनाया।
160 बाबर की सफलता तोपखाना थी।
161. शेरशाह सूरी ने 'दाम' नामक नये सिक्के चलवाये।
162. शेरशाह सूरी ने मालगुजारी की नयी व्यवस्था रैयतवाड़ी प्रारंभ की।
163. शेरशाह सूरी का चांदी का सिक्का 180 ग्रेन का था जिसमें 175 ग्रे चांदी थी।
164 अकबर ने राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किये।
165. अकबर ने दीन-ए-इलाही नामक नया धर्म चलाया। प्रतिष्ठित हिन्दुओं बीरबल एकमात्र हिन्दू था जो दीन-ए-इलाही का सदस्य बना।
166. अकबर ने सूर्य-उपासना प्रारंभ की।
167. अकबर के दरबार में तानसेन सहित 36 उच्चकोटि के गायक थे।
168. अकबर की मृत्यु के उपरांत उसे आगरा से पांच मील दूर सिकन्दरा दिया गया।
169. मुगल बादशाहों के पास नौसेना नहीं थी।
170. अकबर ने मनसबदारी प्रथा प्रारंभ की।
171. अकबर नक़द वेतन देता था।
172. घोड़े पर दो निशान लगाये जाते थे–

(क) सरकारी निशान सीधे पुट्ठे पर

(ख) मनसबदार का निशान बायें पुट्ठे पर

173. अकबर की टकसालों का अधिकारी चौधरी कहलाता था।
174. चांदी का सिक्का रुपया कहलाता था।
175. औरगजेब ने सर्वप्रथम असम पर विजय प्राप्त की।
176. औरंगजेब ने हिन्दू ज्योतिषियों को पदच्युत कर दिया।
177. औरंगजेब ने 12 अप्रैल, 1679 ई. को हिन्दुओं पर जजियाकर पुन
178. औरंगजेब के शासन काल में हिन्दुओं को प्रयाग में गंगा-यमुना में स्ना 6 रुपये 4 आने देने पड़ते थे।
179. औरंगजेब ने रैयतवाड़ी प्रथा बन्द कर दी।
180. मराठों की शासन व्यवस्था अष्टांग थी।
181. शिवाजी की आय का मुख्य साधन चौथ थी, दूसरा साधन सरदेशमुख
182 शिलदार शिवाजी सेना में सुसज्जित सैनिक था।

बालाजी विश्वनाथ ने जमींदारी प्रथा पुन: लागू की।
क्लाइव ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के नौकरों पर निजी व्यापार पर रोक लगायी थी।
कालीकट के तट पर वास्कोडिगामा की भेंट हिन्दू राजा जमोरिन से हुई।
अग्रेजों ने भारत से सर्वप्रथम नील का व्यापार आरंभ किया।
पुलिस तथा सेना विभाग की स्थापना लार्ड कार्नवालिस ने की थी।
सर जोन शोर ने भारतीय रियासतों में हस्तक्षेप न करने की नीति अपनाई।
लार्ड हेस्टिंग्स ने महालवारी प्रथा आगरा और अवध में प्रारंभ की।
लार्ड विलियम बैंटिक ने अंग्रेजी को भारत में शिक्षा का माध्यम बनाया।
लार्ड मैटकाफ ने समाचार-पत्रो से प्रतिबंध हटाया।
महालवारी प्रणाली 1820 ई में प्रारंभ हुई और इस प्रणाली में ग्राम–प्रधानो के माध्यम से राजस्व वसूल किया जाता था।
रैयतवाड़ी प्रथा मुंबई और मद्रास प्रेसीडेंसी मे लागू की गई।
रैयतवाडी प्रथा में सरकार एवं किसान का सीधा संबंध था। भूमि पर किसानो का स्वामित्व था।
रैयतवाड़ी से किसानों को लाभ नहीं हुआ क्योंकि सरकार कभी भी कर लगा सकती और भूमि छीन सकती थी।
स्थायी बन्दोबस्त 1793 ई. में लागू हुआ। इसे लार्ड कार्नवालिस ने लागू किया।
भारत में कम्पनी की व्यावसायिक गतिविधियां 1833 ई. में पूर्णत: समाप्त हो गई।
भारत में प्रथम रेलमार्ग 1853 ई. में मुंबई से थाना तक बना।
अग्रेजों की आर्थिक शोषण नीति को दादाभाई नौरोजी ने उजागर किया।
अकाल रोकने एवं अकाल पीड़ितों को सहायता देने के लिए 'फेमीन कोड' 1883 मे लागू किया गया।
अवध में गदर का नेतृत्व बेगम हरजत महल ने किया।
गदर का सिपाही मंगल पाण्डे 34वीं एन.आई. बटालियन का था।
नामधारी सिखों ने पंजाब में 1872 ई. में विद्रोह कर दिया।
काग्रेस का प्रथम अधिवेशन पूना में हुआ।
वर्ष 1905 में बंगाल विभाजन हुआ।
मुस्लिम लीग 1906 में बनी।
जलियांवाला बाग कांड 13 अप्रैल, 1919 ई. में हुआ।
सुभाष चंद्र वर्ष 1943 में भारत छोड़कर चले गये।
चौधरी रहमत अली एवं उनके साथियों ने मुस्लिम पृथक राज्य के लिए पाकिस्तान शब्द का प्रयोग किया।
कैप्टन मोहनसिंह आजाद हिन्द फौज के प्रथम सेनापति थे।

1757-1856 तक के आन्दोलन,
विप्लव एवं सैनिक विद्रोह

211. संन्यासी विद्रोह – बंगाल मे
212. चुआर तथा हो का विद्रोह– मिदनापुर (बंगाल) एवं छोटा नागपुर
213. कोल विद्रोह – छोटा नागपुर
214. सथाल विद्रोह – राजमहल जिला (बंगाल)
215. अहोम विद्रोह – असम
216. खासी विद्रोह – पूर्वी भारत या पूर्वांचल
217. पागलपंथी तथा फरैजियों का विद्रोह – उत्तरी बंगाल
218. नील विद्रोह – खानदेश जिला (भील आदिवासी) पश्चिमी भारत
219. कोलों का विद्रोह – पश्चिमी भारत
220. कच्छ का विद्रोह – कच्छ तथा काठियावाड
221 बघेरा विद्रोह – ओरबा मण्डल (पश्चिमी भारत)
222. सूरत का नमक आंदोलन– सूरत
223. रमोसी विद्रोह – रमोसी आदिवासी (पश्चिमी घाट)
224. कोल्हापुर तथा सावंतबाड़ी विद्रोह – कोल्हापुर राज्य
225. विजयनगरम् के राजा का विद्रोह – दक्षिणी भारत
226. दीवान बेला टम्पी का विद्रोह – दक्षिणी भारत
227. बहावी आंदोलन – रायबरेली

कृषक आंदोलन

228 1855–56 का संथाल विद्रोह
229 1860 में नील कृषकों की हड़ताल (बंगाल)
230. 1878 में मराठा कृषकों का विद्रोह
231 चम्पारन तथा केरा सत्याग्रह
232 की पूर्व सध्या पर किसान आदोलन

अधिनियम एवं प्रस्ताव

233. 1773 का रेग्युलेटिंग एक्ट
234. 1781 का सशोधनात्मक एक्ट
235. 1784 का पिट का इंडिया एक्ट
236. 1786 का अधिनियम
237. 1793 का चार्टर एक्ट
238. 1813 का चार्टर एक्ट
239. 1833 का चार्टर एक्ट
240. 1853 का चार्टर एक्ट
241 1858 का भारतीय स्वच्छ प्रशासन अधिनियम
242. 1861 का भारतीय परिषद अधिनियम
243 1892 का भारतीय परिषद अधिनियम
244. 1909 का मिन्टो-मारले सुधार अधिनियम
245 1919 का मांटेग्यू-चैम्सफोर्ड सुधार अधिनियम
246. 1935 का भारत सरकार अधिनियम
247. 1940 का अगस्त प्रस्ताव
248. 1942 का क्रिप्स प्रस्ताव
249. 1942 का भारत छोड़ो प्रस्ताव
250. 1945 का बेवल प्रस्ताव
251. 1946 का शिष्टमंडल मंत्रिमंडल प्रस्ताव
252. 1947 का भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम

शिक्षा आयोग

253 हन्टर शिक्षा आयोग, 1882–83
254. भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904
255. सैडलर विश्वविद्यालय आयोग, 1917–18
256 हार्टीग समिति, 1929
257. शिक्षा की सार्जेंट योजना, 1944
258. राधाकृष्णन आयोग, 1948–49
259. विश्वविद्यालय आयोग, 1953
260. कोठारी शिक्षा आयोग, 1964–66 (डॉ. डी.एम. कोठारी)
261. शिक्षा की राष्ट्रीय नीति, 1968

ऐतिहासिक कालक्रम–एक दृष्टि

1 24वीं-17वीं शती ई.पू. मे सिंधु घाटी सभ्यता
2. 563–486 ई.पू. – गौतम बुद्ध
3. 545–413 ई.पू. – हर्यकवंश
4. 413–345 ई.पू. – शैशुनागवंश
5. 345–317 ई.पू. – नंदवंश
6. 327–325 ई.पू. – सिकन्दर का आक्रमण
7. 317–180 ई.पू. – मौर्यवंश
8. 317–293 ई.पू. – चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्यकाल
9 293–268 ई.पू. – बिन्दुसार का राज्यकाल
-10. 268–232 – अशोक
11 180–68 ई.पू. – शुंगवंश
12. 68–22 ई.पू. – कण्ववंश
13. प्रथम शताब्दी ई.पू. – भारत पर शको के आक्रमण
14. 320 ई. – गुप्त साम्राज्य का उदय
15. 320–413 ई. – चन्द्रगुप्तविक्रमादित्य
16 606–647 ई. – हर्ष का शासन
17. 711 ई. – सिंध पर अरब का आक्रमण
18. 1191–92 ई. – तराइन का युद्ध
19. 1206–1526 ई. – दिल्ली सल्तनत
20. 1221 ई. – भारत पर मंगोलों के आक्रमण
21. 1398 ई. – तैमूर का आक्रमण
22 1469–1539 ई. – गुरु नानक
23. 1526 ई. – पानीपत का प्रथम युद्ध
24. 1526–1707 ई. – मुगल साम्राज्य
25 1556 – पानीपत का द्वितीय युद्ध
26 1608 ई. – ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना
27. 1664 ई. – फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना
28. 1690 ई. – अंग्रेजों द्वारा कलकत्ता की स्थापना
29. 1739 ई. – नादिरशाह द्वारा दिल्ली पर अधिकार
30. 1748–1758 ई. – अहमदशाह अब्दाली का भारत पर आक्रमण
31. 23 जून,1757 ई. – प्लासी का युद्ध एवं अंग्रेजों द्वारा बगाल का अधिग्रहण
32 1764 ई बक्सर का युद्ध

33	1772–1833 ई.	– राजा राममोहन राय
34	1799	– खालसा पंथ की स्थापना–गुरू गोविंद सिंह
35	1807 ई.	– दिल्ली क्षेत्र में किसान विद्रोह
36	1815 ई.	– आर्य समाज की स्थापना
37	1825–1917 ई	– दादाभाई नौरोजी
38	1828 ई.	– ब्रह्म समाज़ की स्थापना
39	1838–1894 ई.	– बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय
40	1854 ई.	– बम्बई में भारत की प्रथम कपड़ा मिल स्थापित
41	1856–1920 ई.	– बाल गंगाधर तिलक
42	1857 ई.	– कलकत्ता, बंबई और मद्रास विश्वविद्यालयों की स्थापना
43	10 मई, 1857 ई.	– सैनिक विद्रोह/गदर
44	1 नवंबर, 1857 ई.	– ईस्ट इंडिया कम्पनी की परिसमाप्ति
45	1859–1862 ई.	– नील विद्रोह
46	1861–1941 ई.	– रवीन्द्रनाथ ठाकुर
47	1862–1902 ई.	– स्वामी विवेकानंद
48	1869–1948 ई	– मोहनदास कर्मचंद गांधी
49	1870 ई.	– पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना
50	1 जनवरी, 1877 ई.	– महारानी विक्टोरिया भारत की साम्राज्ञी घोषित
51	1879–1880 ई.	– रम्पा में कृषक विद्रोह
52	25 दिसंबर, 1885 ई	– भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना
53	1889–1964 ई.	– जवाहरलाल नेहरू
54	1891–1956 ई.	– भीमराव अंबेडकर
55	1897–1946 ई.	– सुभाष चंद्र बोस
56	16 अक्तूबर, 1905 ई	– बंगभंग
57	1911 ई.	– जमशेदपुर में पहले भारतीय लोहा तथा इस्पात कारखाने का निर्माण
58	1913 ई.	– रवीन्द्रनाथ टैगोर को नोबेल पुरस्कार
59	1918 ई.	– मद्रास में पहले ट्रेड यूनियन संगठन की स्थापना
60	मई, 1920 ई.	– अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना
61	अगस्त, 1921 ई.	– मोपला विद्रोह
62	1925 ई.	– भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना
63	1929 ई.	– सी.वी. रमन को नोबेल पुरस्कार
64	26 जनवरी 1930 ई	स्वाधीनता दिवस का पहली बार मनाया जाना

55 1934 ई — कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना
56 1937 — अंग्रेज शासकों द्वारा प्रांतीय सरकारो
67 18-23 फरवरी, 1946 — नौसैनिक पोत 'तलवार' पर विद्रोह
68 15 अगस्त, 1947 ई — भारतीय स्वाधीनता की उद्घोषणा
69 30 जनवरी, 1948 ई. — महात्मा गांधी की हत्या
70 1948 ई. — रिजर्व बैक का राष्ट्रीयकरण
71 26 जनवरी, 1950 ई. — भारत के सविधान का अंगीकरण
72 1949 ई. — द्रविड़ मुन्नेत्र कडगम की स्थापना
73 1950 ई. — योजना आयोग की स्थापना
74 1951 ई. — भारतीय जनसंघ की स्थापना
75 1951-52 से 1955-56 — प्रथम पंचवर्षीय योजना
76 25 अक्तूबर, 1951 — प्रथम राष्ट्रव्यापी आम चुनाव
77 1954 ई. — भारत में फ्रांसीसी अधिकृत प्रदेशो क
78 1955 ई — प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की से
प्रथम राजकीय यात्रा
79 1956-57 से 1960-61 — द्वितीय पंचवर्षीय योजना
80 1957 — द्वितीय आम चुनाव
81 अप्रैल, 1957 — केरल में पहले कम्युनिस्ट मंत्रिमडल
82 दिसंबर, 1961 — गोवा की मुक्ति
83 1961-62--1965-66 — तृतीय पंचवर्षीय योजना
84 फरवरी, 1962 — तीसरे आम चुनाव
85 1962 — भारत-चीन सीमा संघर्ष
86 1963 — नागालैंड की स्थापना
87 27 मई, 1964 ई. — पं. जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु
88 1964-66 ई. — लालबहादुर शास्त्री का प्रधानमंत्रित
89 अप्रैल-सितंबर, 1965 — भारत-पाक संघर्ष
91 11 जनवरी, 1966 — लालबहादुर शास्त्री का निधन
92. 1966 — इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री नियुक्त
93. 1969 — चौदह बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण
94. 3-17 सितंबर, 1971 — भारत-पाक मे सैनिक संघर्ष एव
स्थापना
95. 3 जुलाई, 1972 — भारत एवं पाकिस्तान में शिमला स
96. अप्रैल, 1975 — प्रथम भारतीय भू-उपग्रह 'आर्यभट्ट'
97. जून, 1975 — गोवा भारत को समर्पित

)8 26 जून, 1975 — देश मे आपातकाल की घोषणा
)9 मार्च, 1977 — आम चुनाव एवं मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने
100 1979 ई. — मदर टेरेसा को नोबेल पुरस्कार
101 जुलाई, 1979 — प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई का त्यागपत्र
102 जुलाई, 1979 — चरणसिंह प्रधानमंत्री बने
103 जनवरी, 1980 — इंदिरा गांधी पुन: प्रधानमंत्री बनीं
104 1982 — दिल्ली में नौवें एशियाई खेल
.05 1984 — ऑपरेशन ब्लू स्टार
106. 31 अक्तूबर, 1984 — प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या
107. 31 अक्तूबर, 1984 — राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने
108. 1984 — भोपाल गैस त्रासदी
109. दिसंबर, 1989 — विश्वनाथप्रताप सिंह प्रधानमंत्री बने
110. 1991 — चन्द्रशेखर प्रधानमंत्री बने
111 21 मई, 1991 — पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या
112. 1991 — पी.वी. नरसिंहराव प्रधानमंत्री बने
113. 6 दिसंबर, 1992 — अयोध्या में विवादास्पद ढांचा ध्वस्त
114. 1993 — जे.आर.डी. टाटा का निधन
115. 1994 — पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह का निधन
116. 1994 — एश्वर्या राय को 'विश्व सुंदरी' का सम्मान
117. 1995 — पूर्व प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई का निधन
118. 1995 — 15 अगस्त से भारत में इंटरनेट सेवा आरंभ
119. 1996 — अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने (13 दिन)
120. 1996 — एच.डी देवेगौडा प्रधानमंत्री बने
121. 1997 — इन्द्रकुमार गुजराल प्रधानमंत्री बने
122. 1998 — कोंकण रेलवे लाइन पर आवागमन शुरू
123 1998 — अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने
124. 1998 — परमाणु विस्फोट (भूमिगत), पोखरण (राजस्थान)
125. 1999 — भारतीय मूल के अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन को नोबेल पुरस्कार
126. 1999 — प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की बस द्वारा ऐतिहासिक लाहौर यात्रा
127. 1999 — कलकत्ता-ढाका बस सेवा शुरू
128. 1999 — कारगिल समर में पाकिस्तान को शिकस्त दी
129. 1999 — अटल बिहारी वाजपेयी पुन: प्रधानमंत्री बने

130. 1999	– भारतीय विमान का अपहरण-कंधार में पटाक्षेप
131. 1999	– पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा का निधन
132. 1999	– भारत रत्न से सम्मानित–जयप्रकाश नारायण, प्रो. अमर्त्य सेन, पं. रविशंकर, गोपीनाथ बोरदोलोई
133. 1999	– युक्ता मुखी को 'विश्व सुदरी' सम्मान
134. 2000	– अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा
135. 2000	– रूसी परिसंघ के राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा
136. 2000	– हरियाणा की श्रीमती मल्लेश्वरी ने भारोत्तोलन में सिडनी ओलम्पिक में भारत के लिए एकमात्र कांस्य पदक जीता
137. 2000	– भारत गणराज्य में तीन नए राज्यों का गठन, यथा–छत्तीसगढ़, उत्तरांचल व झारखंड।
138. 2000	– स्वतंत्रता सेनानी मनमंथनाथ गुप्त का निधन
139. 2000	– हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार–केदारनाथ अग्रवाल, यशपाल जैन–का निधन
140. 2000	– 24 वर्षों तक प० बगाल के एकछत्र मुख्यमंत्री रहे ज्योति बसु का स्वेच्छा से त्यागपत्र

स्वतंत्र भारत की प्रथम अनुभूतियां

1 प्रथम उप-प्रधानमंत्री श्री वल्लभ भाई पटेल।
2. प्रथम परमवीर चक्र कुमायूं रेजीमेंट के मेजर सोमनाथ को।
3. प्रथम भारतीय कमाण्डर-इन-चीफ ले० जनरल के.एम. करिअप्पा बने।
4. प्रथम प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति हीरालाल कानिया बने।
5. प्रथम कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी का देश में आगमन वर्ष 1952 में।
6. प्रथम भारतीय महिला श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित संयुक्त राष्ट्र संघ की अध्यक्षा बनीं।
7. प्रथम वायुसेनाध्यक्ष एअर मार्शल सुब्रतो मुखर्जी बने।
8. प्रथम परमाणु अनुसंधान रिएक्टर 'अप्सरा' है।
9. प्रथम नौसेना अध्यक्ष एडमिरल रामदास कटारी बने।
10. प्रथम भारतीय जिन्होंने इंग्लिश चैनल तैर कर पार की–मिहिर सेन।
11. प्रथम महिला न्यायाधीश–श्रीमती अन्ना चांडी, केरल उच्च न्यायालय।
12. प्रथम महिला, जिन्होंने इंग्लिश चैनल तैर कर पार की–श्रीमती आरती शाह।
13. प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार–श्री जी. शंकर कुरुप।
14 प्रथम भारत निर्मित कम्प्यूटर जादवपुर में लगा

15 प्रथम भारत निर्मित रॉकेट रोहिणी का थुम्बा केंद्र से वर्ष 1967 में प्रक्षेपण।

16 प्रथम मौसम संबंधी सूचनाए देने वाला–'मेनका' का थुम्बा से वर्ष 1968 में प्रक्षेपण।

17 प्रथम भारतीय क्रिकेट दल का कप्तान–अजित वाडेकर जिन्होंने वेस्ट इंडीज से टैस्ट शृंखला जीती।

18 प्रथम दादा साहेब फाल्के पुरस्कार–श्रीमती देविका रानी।

19 प्रथम फील्ड मार्शल जनरल मानेकशाह।

20 प्रथम परमाणु विस्फोट (भूमिगत) 1974, पोखरन (राजस्थान) में।

21 प्रथम उपग्रह–आर्यभट्ट।

22 प्रथम मैट्रो रेल (भूमिगत) सेवा कलकत्ता में।

23 प्रथम अंटार्कटिका अभियान का नेतृत्व–श्री एस.जेड. कासिम ने किया।

24 प्रथम अंतरिक्ष यात्री–स्क्वाड्रन लीडर राकेश शर्मा।

25 प्रथम समुद्री अभियान–'तृष्णा' नामक नौका पर मेजर के.एस राव के नेतृत्व में सफल।

26 प्रथम क्रिकेट खिलाड़ी, जिसने 10 हजार रन टेस्ट क्रिकेट में बनाए–सुनील मनोहर गावस्कर।

27. प्रथम ओलंपिक हॉकी स्वर्ण पदक वर्ष 1948 में।

28. प्रथम शतरंज खिलाड़ी जो विश्व जूनियर शतरंज चैम्पियन–विश्वनाथ आनन्द।

29. प्रथम खिलाडी, जिसने प्रथम तीन टेस्ट क्रिकेट मैचों में शतक बनाये– मु० अजहरुद्दीन।

30. प्रथम खिलाड़ी, जिसने क्रिकेट के तीर्थ लार्ड्स (इंग्लैंड) के मैदान में तीन शतक बनाये–दिलीप वेंगसरकर।

31. प्रथम रंगीन चलचित्र सोहराव मोदी निर्मित–'झांसी की रानी'।

32. प्रथम सरस्वती सम्मान–डॉ. हरिवंशराय बच्चन।

33. प्रथम भारतीय महिला विश्व सुंदरी कु० रीता फरिया।

34. प्रथम भारतीय महिला ब्रह्मांड (मिस यूनीवर्स) कु० सुष्मिता सेन।

प्रमुख हत्यारे

1. नाथूराम गोडसे – महात्मा गांधी का हत्यारा
2. बेअंत सिह – इंदिरा गांधी का हत्यारा
3 सतवंत सिंह – इंदिरा गांधी का हत्यारा
4. नलिनी – राजीव गांधी की हत्यारिन

पंचवर्षीय योजना

प्रथम	– 1951
द्वितीय	– 1956
तृतीय	– 1961
चतुर्थ	– 1969
पचम्	– 1974
षष्ठम्	– 1980
सप्तम्	– 1985
अष्टम्	– 1.4.1992
नवम्	– 1998

उपराष्ट्रपति

1.	डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन	– 1951–62
2.	डॉ. जाकिर हुसैन	– 1962–67
3.	वाराहगिरि वैंकटगिरि	– 1967–69
4.	गोपाल स्वरूप पाठक	– 1969–74
5.	बी.डी. जत्ती	– 1974–79
6.	मोहम्मद हिदायतुल्ला	– 1979–84
7.	आर. वेंकटरमण	– 1984–87
8.	डॉ. शंकरदयाल शर्मा	– 1987–92
9.	डॉ. के.आर. नारायणन	– 1992–97
10.	कृष्णकात	– 1997 वर्तमान

लोकसभाध्यक्ष

1.	गणेश वासुदेव मावलांकर	– 1952–56
2.	अनंतशयनम् आय्यंगर	– 1956–62
3.	सरदार हुकम सिंह	– 1962–67
4.	नीलम संजीव रेड्डी	– 1967–69
5.	गुरुदयालसिंह ढिल्लो	– 1969–75

6 बलिराम भगत – 1976–77
7. नीलम सजीव रेड्डी – 1977 (मार्च से जुलाई)
8. कवडूर सदानंद हेगडे. – 1977–1979
9. बलराम जाखड़ – 1980–89
10. रविराय – 1989–91
11. शिवराज पाटिल – 1991–96
12. पी.ए. संगमा – 1996–98
13. जी.एम.सी. बालयोगी – 1998

मुख्य न्यायाधीश

1 हीरालाल जे. कानिया – 1950–51
2. एम. पतंजलि शास्त्री – 1951–54
3. मेहरचंद महाजन – 1954–54
4. बी.के. मुखर्जी – 1954–56
5. एम.आर. दास – 1956–59
6. भुवनेश्वर प्रसाद सिन्हा – 1959–64
7. पी.वी. गजेन्द्र गाडकर – 1964–66
8. ए.के. सरकार – 1966
9 के. सुब्बाराव – 1966–67
10. के.एन. वांशु – 1967–68
11. एम. हिदायतुल्ला – 1968–70
12. जे.सी. शाह – 1970–71
13. एम.एम. सिकरी – 1971–73
14. ए.ए. राय – 1973–77
15. एम.एच. बेग – 1977–78
16. वाई.वी. चन्द्रचूड़ – 1978–85
17 पी.एन. भगवती – 1985–86
18. आर.एस. पाठक – 1986–89
19. ई.एस. वेंकटरमन – 1989–89
20. सव्यसाची मुखर्जी – 1989–90
21. रंगनाथ मिश्र – 1990–91
22. के.एन. सिंह – 1991–91
23. एम.एच. कानिया – 1991

24. एस.सी आनन्द
25. एम.एम. पुंछी
26. आदर्श सेन आनन्द

अध्याय छः

युद्ध

1. ऋग्वेद में दस राजाओं के युद्ध का वर्णन है। राजा सुदास के नेतृत्व में भरत संघ के त्रित्सुगण का युद्ध स्थानीय लोगों से हुआ।
2. प्रथम महायुद्ध रावण और राम के बीच 'लंकापुरी' में हुआ और राम ने रावण को पराजित किया।
3. द्वितीय महायुद्ध कौरव और पाण्डवों के बीच 'कुरुक्षेत्र' में हुआ और पाण्डवों ने कौरवों को परास्त किया।
4. मगध सम्राट अजात शत्रु का युद्ध कोसल सम्राट प्रसेनजित (पालीनाम–पसेनदी) से हुआ और मगध विजयी हुआ।
5. मगध बनाम लिच्छविय युद्ध में मगध विजयी। यह युद्ध 16 वर्ष तक चला।
6. पुरु (पोरस) एवं सिकन्दर में युद्ध झेलम नदी के तट पर हुआ। पुरु पराजित हुआ। यह युद्ध 326 ई.पू. के लगभग हुआ।
7. चन्द्रगुप्त बनाम घनानन्द युद्ध में चन्द्रगुप्त मौर्य विजयी हुआ।
8. चन्द्रगुप्त बनाम सेल्यूकस निकेटर युद्ध लगभग 305 ई.पू. में उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में हुआ। यह युद्ध लगभग 2 वर्ष तक चला और चन्द्रगुप्त विजयी हुआ।
9. 260 ई.पू. में अशोक ने कलिंग विजय की।
10. पुष्यमित्र शुंग का प्रथम युद्ध विदर्भ के साथ हुआ। विदर्भ राजा यज्ञसेन ने पुष्यमित्र की अधीनता स्वीकार कर ली।
11. 206 ई.पू. में सिल्यूसिड राजा ने एक अज्ञात भारतीय राजा सुभगसेन को पराजित किया।[1]
12. कनिष्क ने पामीर पार करके चीन के राजा पानचाऊ के पुत्र पानयंग को पराजित किया।
13. समुद्रगुप्त ने सर्वप्रथम आर्यवृत्त के इन नृपतियों को पराजित करके अपने साम्राज्य में मिलाया–'रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, गणपति नाग, नागसेन, नन्दिन्, अच्युत, बल वर्मन।

---

[1] थापर, रोमिला, भारत का इतिहास, पृ 70, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ 1985

14 समुद्रगुप्त का दक्षिण अभियान--कोशल का महेन्द्र, महाकान्तार का व्याघ्रराज, कोसल का मन्तराज, पिष्टपुर का महेन्द्र, गिरिकोट्टू का स्वामीदत्त, एंडरपल्ल का दमन, कांची का विष्णुगोप, अवमुक्त का नीलराज, वेंगी का हस्तिवर्मन पालक्क का उग्रसेन, देवराष्ट्र का कुबेर, कुस्थलपुर के धनंजय--को पराजित करके पूर्ण किया।

15 समुद्रगुप्त को जो कर प्रदान, आज्ञाकरण एवं प्रणाम करने लगे वे प्रत्यन्तराज्य निम्नलिखित हैं--
समतट (दक्षिण-पूर्वी बंगाल), दवाक (ढाका अथवा चिटगांव और टिपरा पहाडी प्रदेश), कामरूप (असम), नेपाल, कर्तृपुर आदि।

16 समुद्रगुप्त के समक्ष आत्म-समर्पण किया--मालव, आर्जुनायन, यौधेय, मद्रक आभीर, प्रार्जन, सनकानीक, काक, खरपरिक आदि।

17 चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य एवं शक संग्राम लगभग सन् 388--409 के मध्य हुआ और शक पराजित हुए।

18 यशोधर्मन ने मिहिर कुल को 532 ई. में पराजित किया।

19 कीर्तिवर्मन ने 567--68 ई. में बनवासी के कदम्बों को पराजित किया।

20 मंगलेश ने कलचुरियों को पराजित किया।

21 पुलकेशी द्वितीय ने हर्ष को पराजित करके 'परमेश्वर' की उपाधि पाई।

22 विनयादित्य ने अपने शासन के 11वें वर्ष (691 ई.) में पल्लवों एवं कलभ्रो पर विजय प्राप्त की।

23 विनयादित्य ने 694--95 ई. में मालवों एवं चोलो पर विजय प्राप्त की।

24 712 ई. में मुहम्मद-बिन-कासिम ने सिंधु पर सफल आक्रमण किया। यह अरबो का प्रथम आक्रमण था।

25 गुर्जर प्रतिहार, राष्ट्रकूट और पालवंश में 200 वर्षों तक त्रिपक्षीय युद्ध चला। यह युद्ध 6 चरणों में हुआ। इसका प्रथम चरण वर्ष लगभग 779--80 ई. में हुआ और अंतिम युद्ध 9वीं शताब्दी के अंतिम दशक में हुआ लेकिन 10वीं शताब्दी के आरंभ में ये तीनों महाशक्तियों काल के गर्त में समा गईं।

26 महमूद गजनवी ने 1000 ई. में भारत पर आक्रमण किया।

27 27 नवंबर, 1001 ई को महमूद ने जयपाल पर आक्रमण कर उसे पराजित किया।

28 1006 ई. में महमूद ने मुल्तान पर विजय प्राप्त की।

29 1009 ई. में महमूद ने वैहन्द के मैदान में आनन्दपाल को पराजित किया।

30 1014 ई. में महमूद ने थानेश्वर विजित किया।

31 1015--1021 ई. के मध्य महमूद ने दो बार कश्मीर विजित करने का असफल प्रयास किया।

32 1018 ई. में महमूद ने मथुरा को लूंटा।

1018 ई. में महमूद ने कन्नौज पर आक्रमण किया और अधिकार कर लिया।
1019 ई. में महमूद ने चंदेलो पर आक्रमण कर उन्हें लूटा।
1025 ई. में महमूद ने अन्हिलबाड़ पर अधिकार कर लिया।
1027 ई. में महमूद ने सिंध के जाटो पर आक्रमण किया।
1175 ई. में मुहम्मद गौरी ने मुल्तान पर आक्रमण किया।
1178 ई. में गौरी को अन्हिलबाड़ के राजा भीम द्वितीय ने पराजित किया।
1179 ई. में गौरी ने पेशावर गजनवी शासन छीना।
1181 ई. में गौरी ने लाहौर पर अधिकार किया।
1185 ई. में गौरी ने स्यालकोट जीता।
1189 ई. में गौरी ने भटिण्डा पर अधिकार कर लिया।
1191 ई. में तराइन के प्रथम युद्ध में गौरी पृथ्वीराज चौहान से पराजित हुआ।
1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में गौरी ने पृथ्वीराज को पराजित किया।
1193 ई. में गौरी ने बुलंदशहर, मेरठ तथा दिल्ली को जीता।
1194 ई. में गौरी ने अलीगढ जीता।
1194 ई. में कन्नौज पर गौरी का अधिकार।
1195–96 ई. में गौरी ने ग्वालियर पर अधिकार किया।
1202–03 ई. में गौरी ने बुन्देलखण्ड पर अधिकार किया।
1202–03 ई. में गौरी ने बिहार जीता।
1204–05 ई में गौरी ने बंगाल जीता।
1286 ई. में मंगोलों ने बलबन पर आक्रमण किया, परंतु दिल्ली पर मंगोलो का प्रभुत्व स्थापित नहीं हो सका।
दक्षिण भारत पर प्रथम तुर्की आक्रमण अलाउद्दीन खिलजी ने किया।
1299 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात जीता।
1301 ई. में (जुलाई) रणथम्भौर को अलाउद्दीन खिलजी ने हम्मीर देव चौहान से जीता।
26 अगस्त, 1303 ई. को राणा रतन सिंह को पराजित कर अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ को विजित किया।
अलाउद्दीन खिलजी पहला दिल्ली सुल्तान था जिसने दक्षिण विजय योजना क्रियान्वित करते हुए सर्वप्रथम 1294 ई. में देवगिरि के राजा रामचन्द्र देव को पराजित किया।
1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने तैलगाना को लूटा और कब्जा कर लिया
1309–10 ई. मे अलाउद्दीन खिलजी ने होयसल के राजा बीर बल्लाल को पराजित किया।
1296 ई. में मंगोलों ने अलाउद्दीन खिलजी पर आक्रमण किया।

61 अमीर तिमूर ने 1398 ई. में मुल्तान पर अधिकार किया।

62 18 दिसंबर, 1398 ई. को मल्लू इकबाल के बुलन्दशहर भाग जाने के उपरांत अमीर तिमूर ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया।

63 1519 ई. के प्रारंभ में बाबर ने भारत पर प्रथम आक्रमण किया।

64 सितंबर, 1519 ई. में पुन: बाबर ने भारत पर आक्रमण किया।

65 1520 ई. में तीसरे आक्रमण में बाबर ने बाजौर को विजित कर लिया।

66 21 अप्रैल, 1526 ई. को पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहीम लोदी को पराजित करके दिल्ली पर अधिकार कर लिया।

67 मार्च, 1527 ई. में खानुवा में राणा सांगा और बाबर में 20 घण्टे तक युद्ध हुआ और राणा सांगा पराजित हुआ।

68 7 अप्रैल, 1526 ई. को बाबर मेवात को पराजित कर राजधानी अलवर मे पहुंचा।

69 6 मई, 1526 ई. को बाबर का मुकाबला घाघरा के तट पर अफगानों से हुआ और अफगान पराजित हुए।

70 26 जून, 1539 ई. को कर्मनासा नदी के समीप चौसा नामक स्थान पर हुमायू और शेरशाह सूरी की सेनाएं एकत्र हो गईं। इस युद्ध में हुमायूं पराजित हुआ।

71 17 मई, 1540 ई. को बिलग्राम में हुमायूं पुन: शेरशाह सूरी से पराजित हुआ।

72 22 जून, 1555 ई. को सिकन्दर सूर हुमायूं द्वारा पराजित हुआ। यह युद्ध सरहिन्द के निकट हुआ।

73 पानीपत का द्वितीय युद्ध 5 नवंबर, 1556 ई. को अकबर और हेमू के मध्य हुआ और अकबर विजयी हुआ।

74 29 मार्च, 1561 ई. को अकबर ने सारंगपुर से तीन मील दूर मालवा के शासक बाजबहादुर को पराजित किया।

75 1569 ई. में अकबर ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया और वहां के शासक राजा सूरज राय ने 18 मार्च, 1569 ई. को दुर्ग मुगलों को समर्पित कर दिया।

76 1572-73 ई. में अकबर ने सम्पूर्ण गुजरात विजित कर लिया था।

77 18 जून, 1576 ई. को हल्दीघाटी का युद्ध हुआ। इसमें अकबर और राणा प्रताप आमने-सामने थे परंतु अकबर 19 जनवरी, 1597 ई. को राणा प्रताप की मृत्यु के उपरांत ही मेवाड़ पर आधिपत्य स्थापित कर सका।

78 1646 ई. में शिवाजी ने सर्वप्रथम बीजापुर के तोरण नामक पहाड़ी किले को विजित किया।

79. 25 जनवरी, 1656 ई. में जावली पर आक्रमण कर शिवाजी ने दुर्ग जीत लिया।

80 1657 ई. में शिवाजी ने कोंकण पर अधिकार कर लिया।

81 15 अप्रैल, 1663 ई. में शिवाजी ने शाइस्ता खां पर रात्रि में आक्रमण किया और शिवाजी की प्रतिष्ठा बढ़ी।

पानीपत का तृतीय युद्ध 14 जनवरी, 1761 ई. को मराठों तथा अहमदशाह अब्दाली के मध्य हुआ और मराठा पराजित हुए।
प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746–48 ई) में अंग्रेज और फ्रांसीसी आमने-सामने थे। अंग्रेजी सेना ने फ्रांसीसी सेना को पराजित कर दिया।
द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749–54 ई.) पुनः अंग्रेज और फ्रांस की सेना के मध्य हुआ। इसमें निर्णय नहीं हो सका और दोनों में संधि हो गई।
तृतीय कर्नाटक युद्ध (1757–63 ई.) में हुआ। यह सप्तवर्षीय युद्ध अंग्रेज और फ्रास के मध्य हुआ। इसमें अंग्रेजो ने फ्रांसीसियों का उन्मूलन ही कर दिया।
अंग्रेजों और सिराजुद्दौला में प्लासी का युद्ध हुआ। यह युद्ध 23 जून, 1757 ई मे हुआ।
10 जून, 1763 ई. में मीर कासिम और अंग्रेजों के मध्य बक्सर का युद्ध हुआ।
अंग्रेजों और मराठों के मध्य प्रथम युद्ध 1775–82 ई में हुआ।
द्वितीय मैसूर युद्ध (1780–84 ई.)–अंग्रेजों एवं हैदरअली, निजाम और मराठों की संयुक्त सेना से हुआ।
17 अप्रैल, 1774 ई. को अंग्रेजों और रुहेलों के युद्ध में रुहेल पराजित।
तृतीय मैसूर युद्ध टीपू बनाम अंग्रेज था।
चतुर्थ मैसूर युद्ध (1799 ई.)–टीपू और अंग्रेजों के युद्ध में टीपू मारा गया।
द्वितीय मराठा युद्ध(1803–05 ई.)–अंग्रेज और मराठों में हुआ।
अप्रैल, 1804 ई. में अंग्रेजों एवं होल्कर के मध्य युद्ध हुआ, अंग्रेज विजयी।
प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1766–69 ई.)–निजाम और अंग्रेजों में हुआ और संधि हुई।
द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780–84 ई.)–हैदरअली एवं अंग्रेजों के मध्य हुआ और संधि हुई।
तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790–92 ई)–टीपू और अंग्रेजों में हुआ और संधि हुई।
1814–16 ई. में अंग्रेज बनाम नेपाल युद्ध हुआ और संधि हुई।
तृतीय मराठा युद्ध (1817–18 ई.) अंग्रेजों से हुआ और संधि हुई।
24 फरवरी, 1824 ई. को अंग्रेज बनाम बर्मा का प्रथम युद्ध हुआ। 15 दिसबर, 1824 ई. को बर्मा पराजित।
द्वितीय बर्मा युद्ध में अंग्रेजों ने अक्तूबर, 1852 ई. में बर्मा को पराजित कर दिया।
द्वितीय बर्मा युद्ध अधिक नहीं चला और अंग्रेजों ने 1 जनवरी, 1885 ई को बर्मा को अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया।
प्रथम सिख युद्ध (1845–46 ई.)–रणजीत सिंह और अंग्रेजों के मध्य हुआ। सिख पराजित और संधि हुई

104. द्वितीय सिख युद्ध (1848–49 ई.) में अंग्रेज विजयी और पंजाब का अंग्रेजी साम्राज्य में विलय।
105. प्रथम अफगान–अंग्रेज युद्ध 1839–42 ई. में हुआ।
106. द्वितीय अफगान–अंग्रेज युद्ध 1878–80 ई. मे हुआ।
107. तृतीय अफगान–अंग्रेज युद्ध 1921 ई. में हुआ।
108. 10 मई, 1857 ई. को अंग्रेजों के प्रति सैनिक विद्रोह। विद्रोह दबा दिया गया।
109. प्रथम महायुद्ध–1914–18 ई.।
110 द्वितीय विश्वयुद्ध–1942 ई.।
111. 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया और चीन द्वारा एकतरफा युद्ध विराम की घोषणा।
112. 1965 ई. में पाक–भारत युद्ध, पाक पराजित।
113. 1971 ई. में पाक–भारत युद्ध, पाक पराजित एवं बंग्लादेश का उदय।
114. 1999 ई. में पाक–भारत युद्ध (कारगिल में), पाक पराजित।

साम्राज्य विस्तार

115. समुद्रगुप्त का साम्राज्य विस्तार–

(क) नौ नृपपतियों पर अधिकार–

1. रुद्रदेव (रुद्रसेन प्रथम वाकाटक)
2. मतिल (बुलंदशहर से मिली मुद्रा पर अंकित मतिल)
3. नागदत्त (संभवत: कोई नागराज)
4 चन्दवर्मन् (प्रमाणिकता सिद्ध नहीं)
5. गणपतिनाग (पद्मावती का राजा)
6. नागसेन (नागकुलीय)
7. नन्दिन् (नागकुलीय)
8. अच्युत् (सभवत: अच्यु है जिसका नाम बरेली, अहिच्छत्र, से प्राप्त मुद्रा पर अंकित)
9. बलवर्मन् (प्रमाणिकता सिद्ध नहीं)

(ख) दक्षिण विजय–

1. कोशल का महेन्द्र
2. महाकान्तार का व्याघ्रराज
3 कोशल का
4 विष्टपर का महेन्द्र

5. गिरिकोट्टूर का स्वामिदत्त
6. एंडरपल्ल का दमन
7. कांची का विष्णुगोप
8. अवमुक्त का नीलराज
9. वेंगी का हस्तिवर्मन्
10. पालक्क का उग्रसेन
11. देवराष्ट्र का कुबेर
12. कुस्थलपुर का धनंजय

(ग) आज्ञाकरणप्रत्यंतराज्य–

1. समतट (दक्षिण-पूर्वी बंगाल–कोमिल्ला राजधानी)
2. दवाक (ढाका)
3. कामरूप (असम)
4. नेपाल (नैपाल)
5. कर्तृपुर (कुमायूं-गढ़वाल, रुहेलखण्ड आदि)

(घ) आत्म-समर्पित गणराज्य–

1. मालव
2. आर्जुनायन
3. यौधेय
4. मद्रक
5. आभीर
6. प्रार्जुन
7. सनकानीक
8. काक
9. खरपरिक

(ङ) परराष्ट्र संबंध–

1. चीन
2. अफगानिस्तान (शाहि)

116 चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने अपने पिता के साम्राज्य का विस्तार किया–

1. वाकाटक वंश से वैवाहिक संबंध
2. शकों को पराजित किया
3 मालवा, गुजरात एवं सौराष्ट्र के उर्वर क्षेत्र एवं पत्तनो पर अधिकार।

अध्याय सात

नगर

1. लोथल – निरंतर उत्खननों के पश्चात गलियों, सडकों, भवनों, कमरों, बरामदों, ऊंचे चबूतरो तथा नगर के अन्य अवशेष प्राप्त हुए हैं। यह नगर साढ़े तीन कि.मी लंबा था। एक गोल मुद्रा भी प्राप्त हुई है। यह वर्तमान–अहमदाबाद (गुजरात) जिले में है और सिंधुघाटी से संबंधित है।
2 रंगपुर – यह सौराष्ट्र में स्थित है। यहां तीन स्तरों में तीन पृथक संस्कृतियां–माइक्रोलिथिक, चैलेकोलिथिक और पूर्व चैलेकोलिथिक –के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो सिंधु घाटी के समय के हैं। अंतिम स्तर पर तांबे, कांसे आदि का उपयोग अधिक। लोहा नहीं मिला।
3. कालीबंगान – राजस्थान में घग्घर नदी के तट पर, गंगानगर जिले में, कालीबंगान स्थित है। योजनाबद्ध नगर-निर्माण था। मोहनजोदड़ो के समान निवास, सड़क आदि हैं।
4. कौशाम्बी – उत्तर वैदिक काल में कुरुओं के राजा निचक्षु ने हस्तिनापुर नगर के बाढ़ में बह जाने के कारण प्रयाग (इलाहाबाद) से लगभग आठ मील पश्चिम की ओर–कौशम्बी नामक शहर बसाया।
5 अयोध्या – पांचाल राज्य से आगे पूर्व में एक कौशल राज्य था। अयोध्या इसी राज्य की राजधानी थी। भगवान राम का जन्म-स्थल भी यहीं माना जाता है।
6. इन्द्रप्रस्थ – पाण्डवों की राजधानी। वर्तमान दिल्ली का एक भाग महाकाव्य के समय में बसाया हुआ।
7. कुरुक्षेत्र – वर्तमान हरियाणा राज्य का एक नगर। महाकाव्य के युग में कौरव-पाण्डवों का युद्ध-स्थल।
8. काशी – वर्तमान वाराणसी के पास का क्षेत्र। बौद्ध और जैन धर्म ग्रंथों में काशी का विशद विवरण है अश्वसेन काशी के सम्राट थे

इसके उत्तर तथा दक्षिण भाग में वरण तथा असी नदियो के बहने के कारण इसका नाम वाराणसी पडा।

- यह सूरसेन राज्य की राजधानी थी। मथुरा कृष्ण की जन्मभूमि है। यमुना नदी के तट पर बसा यह नगर अपने वैभव, समृद्धि और ज्ञान-विज्ञान के लिए प्रसिद्ध है। मथुरा अपनी कला-शैली के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां के राजा यादव वंश के थे।
- मालवा राज्य के उत्तरी अवन्ति भाग के राज्य की राजधानी उज्जैन या उज्जयिनी थी। उज्जैन बौद्ध धर्म का प्रसिद्ध केंद्र बन गया था।
- यह लिच्छवि गणराज्य की राजधानी थी। वर्तमान मुजफ्फरपुर जिले के बसाड़ नामक ग्राम, जो गंडक नदी के तट पर बसा है, प्राचीन वैशाली के अवशेष हैं। तत्कालीन समय में यह श्रेष्ठ शिक्षा, विद्या, कला, सामाजिक संस्कारों, धार्मिक समारोह व कार्यों के लिए प्रसिद्ध था। वैशाली के समीकरणों पर विद्वानो के मतभेद हैं। होये महोदय--छपरा के चरेन्द्र से, कनिंघम ने मुजफ्फरपुर जिले में बसाढ़ से--समीकृत करते हैं। बसाढ़ से ही विद्वान इसका सही समीकरण करते हैं। रामायण के अनुसार अलम्बुषा अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न इक्ष्वाकु नामक नरेश के पुत्र विशाल ने विशाला (वैशाली) की स्थापना की थी। बालकांड में उल्लेख है कि राम ने गंगा के उत्तरी तट पर खडे होकर दूर से वैशाली नगर को देखा। वैशाली ने विश्व को प्रथम नगरवधू--'आम्रपाली' प्रदान की।
- बौद्ध धर्म के समय के अनेक स्तूप हैं। स्तूप पर अनेक अर्द्ध-चित्र और प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। यहां पुरुषों की जो प्रतिमाए हैं, उनमें विविध भंगिमाओं से सौष्ठव आ गया। इससे अर्द्धचित्र सजीव हो उठे हैं। स्त्रियां तन्वंगी हैं और त्रिभगी मुद्रा में खडी हुई उत्कीर्ण की गई हैं।
- वर्तमान वाराणसी से 11 कि.मी. दूर सारनाथ स्थित है। तत्कालीन समय में बौद्ध मूर्तिकला का केन्द्र बन गया था। इसका प्राचीन नाम इस्पितनमिगदाय (ऋषिपतन मृगदाव) है।
- चंद्रगुप्त मौर्य की राजधानी। प्राचीन समय में यह गगा और सोन नदी के संगम पर स्थित था। यह लगभग 16 कि.मी. लबा और 3 कि.मी चौड़ा था। 64 प्रवेशद्वार थे। 570 बुर्ज थे। ग्रीक साहित्य में वर्णित पालिबोथा श्ब्द का समीकरण विद्वान

पाटलिपुत्र से करते हैं।

15	कन्नौज	– हर्ष की राजधानी। सन् 643 ई में एक धार्मिक सम्मेलन का आयोजन कन्नौज में हुआ। महोत्सव 23 दिन तक चला। महमूद गजनवी ने 1018 ई में आक्रमण किया।
16	अजमेर	– अजयराज चौहान ने अजयमेरु (अजमेर) नामक नगर बसाया। इसे अपनी राजधानी बनाया।
17	महोबा	– चंदेल वंश के संस्थापक राजा मुन्नक ने पहले अपनी राजधानी खजुराहो को बनाया। परंतु बाद में उसने महोबा को अपनी राजधानी में रूपांतरित कर दिया। महोबा के आल्हा-ऊदल की कहानी प्रसिद्ध है। वर्तमान में महोबा जिला है।
18	भुवनेश्वर	– यहां प्रसिद्ध लिंगराज मंदिर है। इस मंदिर का शिखर 55 मीटर ऊंचा है। यह 9-13वीं सदी के मध्य की इमारत है। केसरी राज्य के अंतर्गत इसका निर्माण हुआ। उड़ीसा राज्य की राजधानी है। यह राजपूत युग का है।
19	जगन्नाथपुरी	– यहां प्रसिद्ध विष्णु मंदिर है। इसका निर्माण अनन्तवर्मन ने करवाया। राजपूत युग।
20	कोणार्क	– रथ के आकार में बना सूर्य मंदिर राजपूत कला का उत्कृष्ट नमूना है। कोणार्क भुवनेश्वर के पास उड़ीसा राज्य में स्थित है।
21	सोमनाथ	– सौराष्ट्र में सोमनाथ में एक प्रसिद्ध मंदिर था। महमूद गजनवी ने 1025 ई. में आक्रमण करके इसे नष्ट कर दिया। भारत के केंद्रीय प्रशासन ने इसे पुनर्निर्मित करवाया है।
22	मुल्तान	– मुल्तान के दक्षिण मे सिंधु स्थित था। यहा शिया संप्रदाय के अनुयायी करमाथी मुसलमान शासन करते थे। महमूद गौरी ने आक्रमण करके उसे करमाथी राज्य में मिला लिया।
23	तराइन	– भठिंडा (पंजाब) के पास तराइन नामक एक गांव है जहा सन् 1191 ई. में पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गौरी के मध्य युद्ध हुआ। इसमें गौरी विजयी हुआ।
24	बुलंदशहर	– कुतुबुद्दीन ऐबक ने डोर राजपूतों को हराकर बरन अथवा बुलंदशहर पर अधिकार कर लिया। यह दिल्ली से 72 कि मी दूर है। इल्तुतमिश यहां का शासक बनाया गया। बरन कृष्ण कालीन है। तत्कालीन साहित्य में इसका उल्लेख मिलता है।
25	कोल	– अलीगढ़ का प्राचीन नाम कोल था। यहां गौरी के आक्रमण के बाद डोर राजपूतों ने अपनी स्वतंत्रता के लिए विद्रोह कर दिया जिसे कुतुबुद्दीन ऐबक ने दबाया।

- लगभग 1196 ई. मे गौरी ने ग्वालियर पर आक्रमण कर दिया। उसने विजय का विचार त्याग कर ग्वालियर के राजा सुलक्षणपाल से संधि कर ली।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने सन् 1202-03 ई. में चंदेल राजा परमर्दी देव की सैनिक राजधानी कालिजर पर आक्रमण किया।
- इख्तियारुद्दीन अपनी सेना लेकर 1204-05 ई. में बंगाल की एक राजधानी नदिया पहुंच गया। वह इतनी तेजी से बढ़ा था कि उसके केवल 18 सैनिक ही नदिया तक पहुंच सके। लूटपाट करके वह लखनौती की ओर बढ़ गया।
- इल्तुतमिश ने सन् 1228 ई. में लाहौर अपनी सेनाएं भेजकर लाहौर अपने अधिकार में कर लिया। कुबाचा को मुल्तान से भी भागना पड़ा।
- सन् 1226 ई. में इल्तुतमिश ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया। उस समय रणथम्भौर पर चौहानों का अधिकार था।
- आधुनिक पाटन पर 1299 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने उलुगखां तथा नसरत खां की अधीनता में एक सेना भेजी।
- सन् 1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ को जीतने का संकल्प किया। उसने 28 जनवरी को दिल्ली से चित्तौड के लिए कूच किया। इस आक्रमण का मुख्य उद्देश्य राणा रतनसिंह की अनुपम पत्नी पद्मिनी को प्राप्त करना था। विजय के पश्चात् यहां का नाम खिजराबाद रखा गया।
- मुहम्मद-बिन-तुगलक अपनी राजधानी दिल्ली से हटाकर देवगिरि (दौलताबाद) ले गया। यह स्थान सल्तनत के केंद्र में स्थित था। उसने यह कार्य 1326-27 ई. में किया।
- सन् 1336 ई. में दक्षिण के एक हिन्दू हरिहर ने विजयनगर की नींव रखी।
- आगरा के निकट फिरोज तुगलक ने फिरोज नामक नगर की स्थापना की।
- इस का संस्थापक फिरोज तुगलक था। जब बहलोल लोदी ने जौनपुर पर आक्रमण किया तब हुसैन जौनपुर पर राज्य कर रहा था।
- अजन्ता की गुफाएं मुम्बई में फदरपुर से लगभग 7 कि.मी दूर औरंगाबाद से लगभग 100 कि.मी. उत्तर में स्थित हैं। सन् 1819 ई. में जेम्स अलेक्जेंडर ने शिकार करते हुए इस

स्थान को देखा था।

अमरकंटक – कालीदास ने अपने नाटक मेघदूत में इसका वर्णन किया है। यह एक पहाड़ी क्षेत्र है जो नागपुर क्षेत्र के गोंडवाना में मेखल पहाड़ियों का एक भाग है। मार्कण्डेय पुराण में इसे सोमपवर्त कहा गया है। यह रीवां मे स्थित शहडोल रेलवे स्टेशन से 40 कि.मी. दूर है।

अहिच्छत्र – महाभारत के अनुसार यह उत्तर पाचाल की राजधानी था। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति मे अच्युत राजा का उल्लेख है। इसकी मुद्राएं भी प्राप्त हुई हैं। यह नगर आधुनिक बरेली (उ.प्र.) जिले मे स्थित रामनगर है।

0 उदयगिरि – उदयगिरि एक पहाडी है जो खण्डगिरि पहाड़ी के साथ बालकाश्मशिला का एक कटिबंध निर्मित करती है। खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में उदयगिरि का उल्लेख है। इसका शिखर 110 फुट ऊंचा है। इसमें 44 गुफाएं हैं। इसकी तलहटी में एक वैष्णव मंदिर भी है।

1 एल्लोरा – एल्लोरा या एलोरा औरंगाबाद से 25 कि.मी. दूर महाराष्ट्र के दक्षिण में स्थित है। यह बौद्ध गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है। महात्मा बुद्ध, धर्मचक्र, प्रवर्त और प्रवचन मुद्रा रूप में अंकित है।

2 कन्याकुमारी – हिन्द महासागर के तीर पर स्थित कन्याकुमारी आधुनिक समय के 'विवेकानंद रॉक' के लिए प्रसिद्ध है। इसे गंगेकोण्डचोलपुरम भी कहा जाता है। यहां कन्याकुमारी का प्रसिद्ध मंदिर भी है।

3 कपिलवस्तु – दिव्यादान में कपिलवस्तु का संबंध कपिल ऋषि से माना है। यह शक्यों की राजधानी तथा महात्मा बुद्ध का जन्म-स्थल है। डॉ. स्मिथ के अनुसार, यह नेपाल सीमा पर बस्ती जिले के उत्तर में पिपरावा है।

4 कम्बोज – कम्बोज पश्चिमोत्तर भारत में गांधार के निकट आधुनिक राजोरी और हजारी जिले में था। यह स्थल सुडौल तथा वेगवान अश्वों के लिए प्रसिद्ध था। यह षोडश महाजनपदों मे से एक था। इसका उल्लेख पाणिनि के अष्टाध्यायी, पातंजलि ने महाभाष्य तथा अशोक के पांचवें शिलालेख में मिलता है।

5 कर्ण-सुवर्ण – यह मुर्शिदाबाद जिले में गंगा के पश्चिमी तट पर स्थित था। यह आधुनिक रांगामाटी है। यहां से कुशाण तथा गुप्त कालीन मुद्राएं तथा महिषासुरमर्दिनी अष्टभुजी देवी की एक पाषाण

प्रतिमा प्राप्त हुई है।

- भारत के पूर्वी समुद्री तट पर महानदी और गोदावरी नदियो के मध्य स्थित था। कलिंग को अशोक के भीषण आक्रमण का सामना करना पड़ा था। यहां के हाथी श्रेष्ठ थे तथा अशोक का हृदय परिवर्तन कलिंग विजय के बाद ही हुआ।
- अतिप्राचीन तीर्थ-स्थल रहा है। यह मद्रास से दक्षिण-पश्चिम मे लगभग 70 कि.मी. पलार नदी के तट पर है। यह चोल साम्राज्य की राजधानी था। यहां मीनाक्षी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है।
- महात्मा बुद्ध का निर्वाण स्थल। इसकी गणना कपिलवस्तु तथा पावा के साथ की जा सकती है। चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार उसके समय यह नगर उजड़ चुका था तथा यह शालवन हिरण्डवती नदी के तट पर स्थित था।
- यह कर्णाट देश का एक जिला है। विद्वानों के एक वर्ग के अनुसार कुन्तल भीमा और वेदवती के बीच स्थित है जिसमे महाराष्ट्र के कन्नड़ जिले, मद्रास और मैसूर राज्य के कुछ भाग सम्मिलित थे। अजन्ता के एक लेख के अनुसार वाकाटक नरेश पृथ्वीषेण प्रथम ने कुन्तलेश्वर पर विजय प्राप्त की थी।
- कोशल या कोसल षोडश महाजनपदों में से एक था। यह कुरु और पांचाल के पूर्व में और विदेह के पश्चिम में स्थित था। रामायण में इसकी महत्ता का बखान है।
- मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले तथा झांसी से 160 कि.मी. दूर दक्षिण में स्थित है। इसकी अन्तरराष्ट्रीय ख्याति है। यहा मूर्ति–कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। सबसे प्राचीन मंदिर चौखण्ड योगिनी का है। चंदेल राजाओं ने पहले इसे अपनी राजधानी बनाया था।
- षोडश जनपदों में एक। अशोक के पंचम शिलालेख से ज्ञात होता है कि इसे पश्चिमोत्तर पंजाब तथा निकटवर्ती प्रदेश गांधार कहा जाता था। यह सिंधु नदी के दोनों ओर अवस्थित था। इसकी प्राचीन राजधानी पुष्करावती थी।
- यह बिहार प्रांत में है। इसके उत्तर में–साहबगंज और दक्षिण में प्राचीन गया नगर है। वायुपुराण के अनुसार यहां गयासुर ने तपस्या की थी। इसे महाभारत का एक पुण्य स्थल माना जाता है। गया पर्वत पर अशोक ने एक 100 फुट ऊंचा

पाषाण स्तूप बनवाया था।

54. गिरनार – इसे गिरिनगर भी कहा जाता है। रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में सुराष्ट्र की राजधानी गिरिनगर को बताया है।

55. गिरिव्रज – इसे राजगृह भी कहा जाता है जो मगध की प्राचीन राजधानी था। रामायण के आदिकाण्ड में इसके निर्माता वसु बताये जाते हैं।

56. चम्पा – आधुनिक भागलपुर के निकट चम्पा स्थित है। पूर्व काल में चम्पा अगो की राजधानी थी तथा इसका नाम मालिनी था। बाद मे चम्पा नामक एक राजा हुआ जिसने इसका नाम चम्पा रख दिया।

57. चित्रकूट – इलाहाबाद से दक्षिण-पश्चिम में 140 कि.मी. दूर बांदा जिले में एक चित्रकूट पहाड़ी है। रामायण के अयोध्याकाण्ड में इसे भारद्वाज आश्रम से 20 मील दूर स्थित कहा गया है। चित्रकूट में मंदाकिनी तथा मालिनी नामक नदियां बहती थीं। महाभारत में भी इसका उल्लेख है।

58. तंजौर – यह एक प्राचीन नगर है जो आधुनिक समय में कावेरी नदी के तट पर मद्रास से 385 कि.मी. दक्षिण-पश्चिम में है। प्राचीन काल में इसे चोल, नायक तथा मराठों की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। विशाल मंदिर बृहदेश्वर, जिसमें 217 फुट ऊंचा शिवलिंग है। एक अन्य मंदिर चण्डेश्वर भी प्रसिद्ध है।

59. तक्षशिला – भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर एक ऐतिहासिक नगर था। प्रारंभ में इसकी राजधानी गांधार थी। रामायण के अनुसार भरत के पुत्र तक्ष द्वारा इसकी स्थापना की गई थी। पाणिनिने भी इसका उल्लेख किया है। बिन्दुसार के शासनकाल में अशोक तथा अशोक के शासन में कुणाल यहां का राज्यपाल था।

60 ताम्रलिप्ति – पूर्वी समुद्र तट का विशाल एवं प्राचीन बंदरगाह। आधुनिक तामलुक नगर (बंगाल) इसी के अवशेषों पर 1840 ई. में पुरातत्त्व विभाग ने ताम्रलिप्ति का उत्खनन किया था। महाभारत में इसका उल्लेख है। टालमी ने इसे टेमेलाइटीज कहा है। अभिधान चिंतामणि में इस नगर को तामलिप्त, तमालिनी, स्तम्बपुर तथा विष्णुगृह कहा जाता था।

61. थानेश्वर – संस्कृत साहित्य में वर्णित एक प्रख्यात नगर है। दिल्ली तथा प्राचीन इन्द्रप्रस्थ नगर के उत्तर में अंबाला और करनाल के

बीच स्थित था। इसी के निकट कुरुक्षेत्र है। यह शिव का पवित्र स्थान था। तृतीय मराठा युद्ध के पश्चात् यह भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य का अंग हो गया।

– इसे कुशस्थली भी कहा जाता है। स्कंदपुराण के अनुसार यह एक तीर्थस्थल है। योगिनितन्त्र में भी इसका उल्लेख है। कृष्णा का निवास-स्थान। हिन्दुओं का मत है कि द्वारका की तीर्थयात्रा मुक्ति का चौथा साधन है।

– सातवीं शताब्दी का एक विश्वविख्यात बौद्ध विद्यापीठ था। यह राजगृह के निकट था। यहां हस्तलिखित ग्रंथों का एक विशाल तिमंजिला पुस्तकालय था।

– इसका उल्लेख पुराणों में वर्णित नासिकी या नौसिक तथा रामायण में जनस्थान के रूप में है। लक्ष्मण के द्वारा यहा शूर्पणखा की नाक काट लिए जाने के कारण इसका नाम नासिक पड़ा। यह मुंबई से 120 कि.मी. पश्चिम-उत्तर में है। उत्खनन में यहां हड़प्पा युगोत्तर संस्कृति के अवशेष मिले हैं।

– वर्तमान में गोरखपुर जिले में छोटी गंडक नदी के तट पर स्थित है। यहां महावीर ने अपने पार्थिव शरीर को छोड़ा था।

– प्रयाग का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद मे मिलता है। यहां गगा-यमुना (सित-असित) का मिलन होता है। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति प्रसिद्ध है। प्रयाग को तीर्थराज कहा जाता है। यह आधुनिक इलाहाबाद है।

– वर्तमान में उड़ीसा राज्य में है। ब्रह्मपुराण के अनुसार यह पवित्र नगर समुद्र तट पर स्थित है। योगिनितन्त्र में इसे पुरुषोत्तम कहा गया है। यह जगन्नाथ के हिन्दू मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। इसका आकार शंख के समान है, जिसके केंद्र मे जगन्नाथ मंदिर स्थित है।

तिषपुर – महाभारत में उल्लिखित असम के आधुनिक प्रांत का प्राचीन नाम प्राग्ज्योतिषपुर है। यह कामाख्या देवी के मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। युवान च्वांग ने इस नगर को 'का-मो-तो' कहा है। यहां बौद्ध धर्म लोकप्रिय नहीं था तथा यहां के निवासी कृष्ण के अनुयायी थे–युवान।

– अग्निपुराण के अनुसार प्रभास का दूसरा नाम सोमनाथ था। महाभारत के अनुसार यह सौराष्ट्र का देवनगर माना जाता था। इसे उदधितीर्थ कहा गया है। यह व्यापारिक केंद्र था।

बंदरगाह होने के कारण इसके आगे पट्टन[1] शब्द भी लगा है। सोमनाथ के शिव मंदिर को लूटने के लिए विदेशी आक्रमण हुए। महमूद गजनी के आक्रमण के समय सोमनाथ गुजरात की राजधानी था।

प्रवरपुर – इस नगर को कश्मीर की राजधानी श्रीनगर से समीकृत किया जाता है। ब्राह्मण पुरोहित अभी भी इसे प्रवरपुर कहते हैं। ललितादित्य ने इस नगर को जलाने की आज्ञा दी थी परन्तु सचिवों ने चतुराई से इसे जलने से बचा लिया था। प्रवरसेन द्वितीय ने यहां एक शिव मंदिर बनवाया था।

बदरीनाथ – उत्तर प्रदेश के पर्वतीय भूभाग गढ़वाल में स्थित बदरीनाथ हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। यहां नर-नारायणी की प्रतिमा है जिसकी बदरीनारायण के नाम से पूजा की जाती है। यहा आद्य शंकराचार्य द्वारा स्थापित 'ज्योतिष्पीठ' मठ है।

बादामी – बीजापुर जिले के वातापी नामक प्राचीन नगर को बादामी कहा जाता है। प्राचीन काल में यह चालुक्यों की राजधानी था। बादामी को नरसिंह वर्मन ने नष्ट कर दिया था।

बोधगया – आधुनिक गया से 6 मील दक्षिण में नौरंजना नदी के तट पर बोधगया स्थित है। यहां बोधिवृक्ष के नीचे सिद्धार्थ गौतम को बोधि प्राप्त हुई थी जिससे वे बुद्ध कहे जाने लगे।

बोरोबुदूर – जावा द्वीप का सर्वाधिक प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप, जिसे 750-854 ई. में शैलेन्द्र राजवंश के एक शासक ने बनवाया था। इसके निर्माता का नाम और सही तिथि ज्ञात नहीं है। इसे संसार का आठवां आश्चर्य (अजूबा) माना जा सकता है।

भृगुकच्छ – भृरुकच्छ (समुद्री दलदल), भरुकच्छा, भीरुकच्छा का समीकरण आधुनिक भचौंड़ से किया जाता है। टोलमी द्वारा दिया गया नाम–वैरीगाजा–भृगुकच्छ का यूनानी अपभ्रंश है। भृगुकच्छ संस्कृत शब्द है। इसका अर्थ है–ऊंचा तट प्रदेश। यहां विभिन्न सम्प्रदायों के दस देव मंदिर थे।

भुवनेश्वर – यह खुर्द तहसील में स्थित एक गांव है, जो कटक से 30 कि.मी. दूर दक्षिण में और पुरी से 48 कि.मी. उत्तर मे है। यह बलियन्ती नदी के तट पर स्थित है। यहां कुचला के वृक्ष बहुत हैं। यहां के सबसे बड़े सरोवरो में बिन्दु सागर सबसे

---

[1] पट्टन वह तट जहां बंदरगाह हो और वहां से आयात निर्यात होता हो।

बड़ा है। यहां का प्रधान मंदिर लिंगराज का मंदिर स्थापत्य कला का अद्वितीय नमूना है।

महाबलिपुरम – यह मद्रास से दक्षिण में लगभग 56 कि.मी. दूर है। यहा प्राकृतिक और कृत्रिम गुफाएं हैं। यहां से कुछ मूर्तियां भी प्राप्त हुई हैं।

मिथिला – मिथिला विदेह की राजधानी थी। भविष्यपुराण के अनुसार निमि के पुत्र मिथि ने मिथिला की स्थापना की। रामायण मे इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। राजा दशरथ के मिथिला नरेशों से मैत्रीपूर्ण संबंध थे।

रामेश्वरम् – बंगाल की खाड़ी में स्थित यह एक पवित्र द्वीप है। यहां का रामनाथस्वामी का मंदिर सुविख्यात है। अनुश्रुतियों के अनुसार इसे राजा राम ने तब स्थापित किया था जब वे लंका के राजा रावण के चंगुल से अपनी पत्नी सीता को मुक्त कराने लका गए थे। मंदिरों में एक शिवलिंग, अन्नपूर्णा, पार्वती तथा हनुमान की मूर्तियां हैं।

लुंबिनीग्राम – अशोक के रुम्मिनिदेई अभिलेख में लुंबिनीग्राम का वर्णन प्राप्त होता है। इसका नाम रुम्मिनिदेई मंदिर के नाम पर पड़ा। अशोक ने लुंबिनीग्राम को करों से मुक्त कर दिया था।

विदिशा – विदिशा के कई नाम मिलते हैं। जो वेदिस, वैदिश या वैदश आदि-आदि हैं। भिलसा से 3 कि.मी. दूर मध्य प्रदेश में बेतवा तथा वेस नदी के कांठे में बेसनगर का प्राचीन नाम विदिशा है। कालीदास ने मेघदूत में विदिशा का बहुत सुंदर वर्णन किया है। बाण की कादम्बरी के अनुसार शूद्रक नामक राजा विदिशा पर शासन कर रहा था। यह नगर हाथीदांत की कलात्मक वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध था।

वाराणसी – गंगा की दो सहायक नदियों वरुणा और अस्सी के मध्य मे स्थित है वाराणसी। अथर्ववेद में इसका सर्वप्रथम उल्लेख किया है। सामान्यतः इसे काशी के नाम से ही पुकारते हैं। वाराणसी का मुख्य आकर्षण विश्वनाथ मंदिर है। सूती कपड़े के लिए वाराणसी कौटिल्य के समय में भी प्रसिद्ध था।

वृन्दावन – भगवान कृष्ण की लीलाओं की रंगभूमि वृन्दावन मथुरा से 9 कि.मी. दूरी पर स्थित है। यहां पर वृन्दा (राधा के 16 नामो में से एक) ने तप किया तथा अपना भौतिक शरीर त्यागा।

श्रावस्ती कोसल जनपद के प्रमुख नगर श्रावस्ती का आधुनिक समानार्थक

सहेठमहेठ है। यह उत्तर प्रदेश में गौंडा और बहराइच जिलो की सीमा पर स्थित है। विष्णुपुराण के अनुसार इस नगर का निर्माण राजा श्रावस्त या श्रावस्तक द्वारा कराया गया।

85 सांची – सांची भोपाल से 32 कि.मी. दूर पूर्वोत्तर में है। इसका प्राचीन नाम काकानाद था। अब बौद्ध स्तूपों के लिए प्रसिद्ध है।

86 साकेत – टालमी इसे सागेद कहता है। यवन ने साकेत पर घेरा डाला था। अभिधानचिन्तामणि में साकेत, कोसल और अयोध्या को एक माना है।

87 शाकल – इस नगर का आधुनिक स्यालकोट से समीकरण किया जाता है। बौद्ध ग्रंथों में शाकल को सागल तथा यूनानी लेखो मे संगल कहा जाता है।

88 हस्तिनापुर – मेरठ जिले मे गंगा के तट पर स्थित है। पाणिनि ने इसे हस्तिनापुर (प्राचीन कुरु-पाचाल का एक भाग) लिखा है। महाभारत के अनुसार हस्तिन नामक व्यक्ति ने इस नगर की नींव डाली। यह कौरवों की राजधानी थी। भगवतपुराण मे इसका नाम गजाह्वय है। ललितविस्तार में इसको महानगर कहा है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को हस्तिनापुर का निवासी कहा गया है।

89 अन्तरजीखेड़ा – गंगाघाटी में हड़प्पा संस्कृति के विस्तार के चिह्न अन्तरजीखेडा में भी प्राप्त हुए हैं। यहां उत्खनन में लौहयुक्त स्तर मिले हैं। यहां कपड़े के छापे मिले हैं। इसके अतिरिक्त यहां विशेष रूप से दरांतियां मिली हैं। इसकी तिथि ईसापूर्व 1025 के लगभग मानी जाती है। उत्खनन के पहले स्तर पर शायद गेहूं और जौ के अतिरिक्त चावल भी मिले हैं। प्राचीन कुरु पांचाल का एक भाग। वर्तमान में यह एटा जिला उत्तर प्रदेश में है।

90 आदमगढ – वर्तमान में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद के पास इसका अस्तित्व है। इसकी तिथि ईसापूर्व 5000 के आसपास निर्धारित की गई है। ये स्थल मध्य पाषाण युग के हैं। यहां मवेशी एव भेड-बकरियों के पालन के साक्ष्य मिले हैं।

91 अमरी – यह सिंधुघाटी सभ्यता का सिंधु नदी के मुहाने पर स्थित था। यहां सिंधु पूर्व सभ्यता निक्षेप के ऊपर सिंधु सभ्यता निक्षेप मिलते हैं।

92 आलमगीरपुर – यह सिंधु घाटी सभ्यता के समय का है और वर्तमान में मेरठ के पास है। यह प्राचीन काल मे प्रसिद्ध कुरु पांचाल प्रदेश में था।

अहाड – आधुनिक उदयपुर (राजस्थान) के निकट अहाड़ स्थित है। यह ताम्र-पाषाणयुगीन है। इसे 'अहाड़ संस्कृति' कहा जाता है। यहा चावल की खेती होती थी और संभवत: बाजरा भी पैदा होता था। इस संस्कृति का आरंभ लगभग ईसापूर्व 2000 है। इसका टीला 15 सौ फुट X 8 सौ फुट का है। इसके 15 संरचनात्मक निर्माण चरण साक्ष्य मिलते हैं। मकानों में तंदूर भी मिले हैं जिनकी संरचना वर्तमान के तंदूरों जैसी है।

अल्लाहपुर – सिंधु सभ्यता की मृद्भांड स्तर की वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। यहा लौह प्राप्त है। यहां हिरण से निकट परिचय के संकेत हैं।

आटवी प्रदेश – यह प्रदेश संभवत: बुंदेलखण्ड से लेकर उडीसा तक विस्तृत था। अशोक के 13वें शिलालेख में आटवी जातियों का उल्लेख है।

अरिकामेडू – भारत के पूर्वी तट पर स्थित अरिकामेडू संगम साहित्य काल का महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह था।

आर्जुनायन – यहां से समुद्रगुप्त के सिक्के प्राप्त हुए हैं। यह गणतंत्र था और यहां के प्रशासक ने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर ली थी। कुछ ऐसे सिक्के भी प्राप्त हुए हैं जिनमें इन्हें गण कहा गया है।

आभीर – यह गणराज्य था। इसने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर ली थी। यहां राजा का उल्लेख मिलता है।

अवन्ति – यहां का राजा शूद्र था।

अन्तरवेदी – इन्दौर ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि यहां दो क्षत्रियों ने एक सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया और एक ब्राह्मण द्वारा नित्य दीप जलाने की व्यवस्था की। यह गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में है।

आयुध – यह कन्नौज के पास है। राजपूतों के त्रिराज्य संघर्ष में यहा के दो भाई–इन्द्र और चक्र–आपस में ही युद्धरत थे। यह एक छोटा-सा क्षेत्रीय राज्य था।

इन्द्रपुर – स्कंदगुप्त का एक ताम्रपत्र इन्दपुर (आधुनिक ग्राम इन्दौर) से मिला है। इसमें एक तेलियों की श्रेणी का उल्लेख मिलता है, जो सूर्य मंदिर में दीप जलवाती थी। यह उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जनपद में है।

उरुवेला – गौतम ने यहां पांच ब्राह्मणों से भेंट कर उन्हें दीक्षा दी थी।

उतनूर – यह रायचूर दोआब में स्थित है। यहां उत्खनन के बाद नवपाषाण संस्कृति के संकेत मिले हैं। इसकी तिथि ईसा पूर्व

2300–900 के मध्य है।

105. एरण – यहां से बुद्धगुप्त का स्तंभ लेख प्राप्त हुआ है जिसकी प्रस्तुति विष्णु की स्तुति से आरंभ हुई है।

106. कुशीनगर – ईसा पूर्व 600–300 के मध्य यह एक सम्पन्न एवं महत्त्वपूर्ण नगर था।

107. कुरु – प्राचीन 16 महाजनपदों में से एक यह आधुनिक मेरठ एवं दक्षिण-पूर्व हरियाणा के क्षेत्र में था। जातकों के अनुसार इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी।

108. कुम्भ्रहार – यह आधुनिक पटना के समीप है। प्राचीन काल में यहां चन्द्रगुप्त मौर्य का राजप्रासाद था। उत्खनन में 40 पाषाण स्तंभ मिले हैं। भवन के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। भवन की लंबाई 140 फुट और चौडाई 120 फुट है।

109. कन्हेरी – यहां अशोक कालीन चैत्यगृह है। यह महाराष्ट्र में है।

110. कार्ले – यहां अशोक कालीन बौद्ध चैत्यगृह है। यह आधुनिक पुणे (पूना) के समीप है।

111. कोकण – नहपान सम्राट के राज्य का एक भाग। यह महाराष्ट्र में पूना के पास है।

112. कोचीन – पश्चिमी तट पर एक प्राचीन बन्दरगाह।

113. कोषिक्कोड़ – आधुनिक कालीकट। यह एक प्राचीन बन्दरगाह है।

114. कावेरीपत्तनम् – पूर्वी तट पर प्रसिद्ध बन्दरगाह। यह चोल साम्राज्य की राजधानी थी।

115. करुर – चेरों की प्राचीन राजधानी। इसे वाञ्जि या वाञ्जिपुरम नाम से भी जाना जाता था। वर्तमान में जिला तिरुचिरापल्ली के अंतर्गत है। यहां से रोमन सुराहियों के टुकड़े प्राप्त हुए हैं।

116. कांचीपुरम – यह पल्लवों की राजधानी था। यहां एक आरभिक कलश शवाधान केंद्र प्रकाश मे आया है। काली और लाल मिट्टी के बर्तन आदि प्राप्त हुए हैं।

117. कहौन – यहां से प्राप्त स्कदगुप्त के अभिलेख से ज्ञात होता है कि भद्र नामक व्यक्ति ने पांच जैन तीर्थंकरों की मूर्ति की स्थापना करवाई थी।

118. कायथ – मालवा (मध्य प्रदेश) के समीप कायथ में आद्य-ऐतिहासिक काल के अवशेष मिले हैं। इसकी तिथि ईसा पूर्व 2200-2000 के मध्य निर्धारित की गई है।

119. गोवर्धन – सातवाहन संस्कृति का प्रसिद्ध केंद्र। वर्तमान में नासिक के समीप है

गुलबर्गा – यहां महापाषाणकालीन कब्रें मिली हैं। इसके समीप हनुम सागर नामक स्थल पर एक हजार स्मारक पत्थर प्राप्त हुए हैं।

छब्रोली – मौर्ययुगीन संस्कृति के अवशेष मिले हैं। यह दक्षिण में अमरावती के समीप है।

जम्भियग्राम – घोर तपस्या के बाद महावीर को जम्भियग्राम के समीप ऋजुपालिक सरिता के तट पर 'कैवल्य' प्राप्त हुआ।

जूनागढ़ – यहां से रुद्रदामा का अभिलेख मिला है। इसमें अशोक के एक गवर्नर का नाम योनराज तुफास्क मिलता है। यह यूनानी नाम है।

तोसली – कलिंग विजय के बाद अशोक द्वारा इसको राजधानी बनाया गया।

नागार्जुनी – अशोक के पुत्र दशरथ ने नागार्जुनी पहाड़ियों में आजीविको को 3 गुफाएं प्रदान कीं।

नदिवर्धन – यहां प्रवरसेन प्रथम का एक पुत्र गौतमीपुत्र शासक था। यह वर्तमान नागपुर के समीप है।

नौरा – पल्लव साम्राज्य का एक प्रसिद्ध पश्चिमी बंदरगाह। वर्तमान मे कैन्ननौर के समीप।

नाचनाकुठारा – गुप्त कालीन शिव मंदिर के लिए प्रसिद्ध। यह बघेलखण्ड मे है।

नागोदा – गुप्त कालीन प्रसिद्ध शिव मंदिर है तथा एक मुख शिवलिंग है। यह मध्य प्रदेश में है।

नेवासा – यहां पटसन, हल्के रत्नों के ढेर सारे मनके मिले हैं। पालतू जानवरों में गाय, बैल, बकरी, भेड़, सूअर और घोड़े शामिल हैं। यह महाराष्ट्र में है।

नागार्जुनकोंडा– दक्षिण भारत के दोआब में स्थित। यहाँ नवपाषाण संस्कृति तथा परवर्ती चरणों में ताम्रपाषाण तत्त्वों के संकेत मिले हैं। इसकी लिपि ईसापूर्व 2300–900 के मध्य मानी गई है।

हड़प्पा संस्कृति के नगर

आम्री बस्ती – सिंधु और गंगा के मध्य उपजाऊ मैदान में स्थित चौथी सहस्राब्दी ईसापूर्व के प्रारंभ में आम्री, कुल्ली, घुंडई, कोटदीजी आदि ग्राम-बस्तियों को हड़प्पा संस्कृति के इतिहास की दहलीज माना जाता है। ये बस्तियां किसी एकीभूत प्रशासन प्रणाली का

अंग न होकर, एक-दूसरे से स्वतंत्र आवासीय विरचनाएं थीं और सदियों तक हड़प्पा संस्कृति के नगरों के साथ घनिष्ठ संपर्क के दौर में भी विकास के एक ही चरण में बनी रहीं।

विशाल पत्थरों से निर्मित दुर्गभित्तियों से घिरी आम्री की बस्ती (डाडू जिला, पाकिस्तान) लगभग 8 हजार वर्गमीटर के क्षेत्रफल में फैली हुई थी। इसमें नियमित, योजनाबद्ध निर्माण के निशान नहीं पाये गये हैं। अधिकांश इमारतें दोमंजिला, कच्ची ईंटों तथा पत्थरों से निर्मित और छोटे-छोटे कमरों (2.5 X 1.5 मीटर) से घिरे भीतरी अहाते (औसत आकार 5 X 5 मीटर) से युक्त हैं। बस्तियों के इलाकों में सिंचाई नहरों, बांधों, सीढ़ीनुमा खेतों और कब्रगाहों के अवशेष मिले हैं।

133. कोटदीजी — हमारी शती के बीसवें वर्ष में विश्व संस्कृति के क्षेत्र में एक महानतम खोज हुई–सिंधु सभ्यता की। प्राचीन सभ्यताओं के इतिहास में इसे हड़प्पा संस्कृति के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसके अवशेष सर्वप्रथम सिंधु नदी की सहायक नदी रावी के बाएं तट पर स्थित हड़प्पा में पाये गये।

वर्तमान पाकिस्तान मे खैरपुर के निकट कोटदीजी की खुदाई में शहरी आवासीय इमारतों के और परकोटे से घिरे एक बड़े वास्तु-सामुच्चय के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिनकी तिथि 28-26 शती आंकी गई है। कोटदीजी संभवतः हड़प्पा नगर का आदिरूप था।

134. लोथल — प्राकृतिक विपदाओं के कारण हड़प्पाई लोगों ने शनैः-शनै दक्षिण की ओर बढ़ना प्रारंभ किया। वे एक दिशा में न जाकर चारों ओर फैलते चले गये। यही कारण है कि अरब सागर के किनारे-किनारे हड़प्पाई बस्तियों की एक लंबी शृंखला मिलती है।

इसी शृंखला के क्रम में सबसे महत्त्वपूर्ण नाम है लोथल। वर्तमान में अहमदाबाद से 83 कि.मी. दक्षिण में प्राचीन काल का लोथल नाम बंदरगाह नगर था।

लोथल हस्त उद्योग व्यापार का एक प्रसिद्ध केंद्र था। खंभात की खाड़ी के काफी अंदर ऐसी जगह अवस्थित है जहा जहाज छोटे-मोटे ज्वारों के समय माल उतार सकते थे। यह प्राकृतिक स्थिति लोथल के उत्कर्ष में बड़ी सहायक सिद्ध हुई। यहां प्राचीन विश्व के सबसे बड़े नौकाघाट पोतनिर्माण गोदी

और नौकाओं के आने-जाने योग्य नालियों और जलद्वार पाये गये हैं जो उनके निर्माताओं के उच्चस्तरीय इंजीनियरी ज्ञान एवं कौशल का परिचय देते हैं।

उल्लेखनीय है कि लोथल में अल्पमूल्य रत्नों के मनको और कंठहारों का उत्पादन सुविकसित था और यह आज भी इस इलाके का मुख्य उद्योग है। इससे परम्पराओं की सातत्य का अतिरिक्त प्रमाण मिलता है।

लोथल निवासियों को बाढ़-प्रकोप के कारण उसे चार बार स्थापित करना पड़ा। फलस्वरूप प्रत्येक बाढ़ के बाद जिन चबूतरों पर इमारतें खड़ी की जाती थीं उनकी ऊंचाई हर बार बढ़ती गई। अनुमानतः 1000 ई.पू. में लोथल का अस्तित्व समाप्त हो गया और इसके निवासी देशांतरण कर काठियावाड के भीतरी भागों और गंगा घाटी की ओर चले गए।

– हड़प्पा संस्कृति के नगरों में रंगपुर का अपना विशिष्ट स्थान है। यह सिंध से सौराष्ट्र के व्यापार मार्ग पर स्थित है। दूसरी ओर ये मकरान तट पर स्थित सुतकंगदोर, जो नदी मार्ग के द्वारा अरब सागर से जुड़ता था, व्यापार का मुख्य केंद्र था। यहा से बलूचिस्तान की बस्तियों के साथ व्यापक स्तर पर व्यापार होता था। यह पहाड़ियों के बीच बसा हुआ नगर था। इसके चारों ओर परकोटे के घेरे इसे सुरक्षा प्रदान करते थे।

– अर्वाचीन उत्खननों की शृंखला में घग्घर नदी तट पर एक नवीन, प्राचीन अवशेषों का भण्डार मिला। पुरातत्त्ववेत्ताओ के एक दल ने उत्तरी राजस्थान की घग्घर और चौटांग नदियो को, जो आज मात्र सूखे नाले रह गये हैं और जिनके किनारे बहुसंख्या में प्राचीन बस्तियों के अवशेष मिले हैं, पौराणिक सरस्वती और दृषद्वती बताया है। कालीबंगन इसी शृंखला मे एक है।

अपने क्षेत्रफल और अभिन्यासात्मक संरचना के लिहाज से, जिसमें दुर्ग भी सम्मिलित है, कालीबंगन मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से टक्कर लेता प्रतीत होता है।

कालीबंगन शब्द का अर्थ है--काली चूडियां। खुदाई मे सर्वप्रथम यहां काली चूडियां मिलीं जिसके कारण इसे कालीबगन नाम दिया गया।

हड़प्पा संस्कृति के नगरों में सबसे विशद और सर्वांगीण

अध्ययन के लिए इतिहास-छात्र के पास अर्वाचीन समय में केवल हड़प्पा और मोहनजोदडो नगर ही हैं।

महानगर और राजधानी के विभाजन में कराची से 320 कि.मी उत्तर में सिंधु नदी के दाए तट पर स्थित मोहनजोदाडो और रावी नदी के बाएं तट पर स्थित हड़प्पा राजधानी नगरों की कोटि में आते हैं और संरचना के आधार पर कालीबंगन महानगरों की श्रेणी में।

हड़प्पाई बस्तियों को पांच भागों में विभक्त किया जा सकता है—

1 राजधानी नगर
2. बन्दरगाह नगर
3 दुर्गरहित नगर बस्तियां
4 ग्राम

राजधानी नगर—उपलब्ध संकेतों के आधार पर हड़प्पा नगर और मोहनजोदाडो नगर स्थायी तौर पर सारे देश के प्रशासन का केन्द्र थे। नगर शत्रुओं के आक्रमण से सुरक्षित था और प्रशासनिक नियंत्रण बनाए रखने के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध थीं।

राजधानी नगर मे एक दुर्ग और घरेलू तथा विदेशी एव हस्तशिल्पकारों के व्यापार केन्द्र थे। दुर्ग में विशाल अन्न भण्डार और अनाज की सफाई, कुटाई, पिसाई आदि के चबूतरे पाये गये हैं। संभवत: यह हडप्पाई समाज में श्रम का सामाजिक संगठन की ओर इशारा है। पुरातात्त्विक खोजों से स्पष्ट है कि हड़प्पा में गेहूं, जौ, चना और धान की खेती होती थी। मुहर लगे सूती कपड़ों के अवशेष कताई-बुनाई की श्रेष्ठता को प्रदर्शित करते हैं।

खंडहरों से प्राप्त सोने, चांदी, मणियों तथा फायन्स के आभूषणों, तांबे के बर्तन, धातु के उपकरण और कांस्य के सामान एक विकसित अर्थव्यवस्था की ओर इंगित करते हैं।

बंदरगाह नगर—मोहरों पर अंकित मस्तूलदार पोतों के चित्र स्पष्ट करते हैं कि जहाजरानी व्यवस्था अपनी उत्कृष्टता पर थी। जहाजरानी के पोतों की भारवहन क्षमता 5 से 60 टन के मध्य रही होगी। ये पोत कराची से बसरा तक 2000 कि मी का रास्ता दो महीने में तय कर लेते थे

एक जनश्रुति के अनुसार सागर देवी बनुवती सिकोतरीमती लोथल की संरक्षिका थी। प्राचीन विश्व के सबसे बडे पोत-निर्माण उद्योग की विद्यमानता के भौतिक प्रमाण भी यहां पाये गये हैं। आयताकार (218 X 37 मी) पोतनिर्माण गोदी, नौकाघाट, पत्थर के लंगर आदि इसके उदाहरण हैं। मस्तूल में छेदयुक्त खिलौना नौका से तत्कालीन पोतों की आकृति का पूर्ण आभास मिलता है।

प्रमुख नगर

138 श्री नगर – प्राचीनतम् नगर

महाभारत – सुबाहु की राजधानी–श्रीपुर

केदारखण्ड – श्रीक्षेत्र

1894 ई. – गोहाना की बाढ में नष्ट

नामकरण–अलकनन्दा नदी के मध्य एक पवित्र शिला पर श्रीजी का प्राकृतिक यंत्र है, उसी से यह नगर कभी श्रीक्षेत्र के नाम से कभी श्रीपुर के नाम से तो कभी श्रीनगर के नाम से विख्यात हुआ।

शिवलिंग–श्रीक्षेत्र के चारों ओर शिवलिंग हैं–

श्रीक्षेत्र के पूर्व में – धास्येश्वर

पश्चिम में – बिल्लेश्वरी

उत्तर में – किलकिलेश्वर

दक्षिण में – अष्टवक्र महादेव

भौगोलिक स्थिति–देवलगढ़ पट्टी कठलस्पू में अलकनन्दा नदी के बामकूल पर बसा हुआ है।

समुद्र तट से 2,706 फुट ऊँचा।

139 पौड़ी – 1840 ई. मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पौडी गाव में ही पौड़ी नगर बसाया।

समुद्र तट से 5,390 फुट ऊँचा।

140. लैन्सडौन – 1887 ई. में कार्लोडांडा नामक पर्वत पर लार्ड लैन्सडौन के नाम पर छावनी बनाई गई।

समुद्र तट से 5,500–6,000 फुट ऊँचा।

141. टिहरी – 1815 ई- तक छोटा ग्राम, इसी वर्ष ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सहायता से महाराज सुदर्शनशाह ने इसे अपनी राजधानी

बनाया।

भागीरथी एवं भिलंगना नदी के संगम पर बसा है।

समुद्र तट से 2,100 फुट ऊँचा।

प्राचीन नाम–गणेश प्रयाना। यहां गंगा के किनारे रक्तवर्ण एक गणेश की शिला है। प्राचीन काल मे गणेश मन्दिर था जो सम्वत् 37 में गंगा की बाढ़ में बह गया।

घण्टाघर 1897 ई. में महाराजा कीर्तिशाह ने महारानी विक्टोरिया की डायमण्ड जुबली की याद में बनवाया था।

142 उत्तरकाशी – पुराणो में इसे सौम्यकाशी कहा गया है।

गढ़वाली इसे बारहाट कहते हैं।

समुद्र तट से 3,000 फुट ऊँचा। समतल भूमि।

इसे वाराणसी भी कहते हैं। इसके उत्तर में असी गंगा और पश्चिम में वरुण नदी बहती है। तरुण से असी के मध्य जो क्षेत्र है वह वाराणसी के नाम से प्रसिद्ध है। यह तरुणावत् पर्वत की गोद में है।

प्राचीन त्रिशूल है। ऊँचाई 20 फुट, जड में गोलाई 3 फुट। त्रिशूल का ऊपरी भाग लोहे का है और नीचे का भाग ताम्बे का है तथा ढका हुआ है। प्राचीन लिपि में तीन–चार पंक्तियां लिखी हुई हैं।(केदारखण्ड–अध्याय 83/14)।

143. हिमदाव – इसे अब हिऊंदाव कहते हैं, टिहरी गढ़वाल में एक पट्टी का नाम है। उसी पट्टी में एक सघन वन लिए हुए विसोन नाम का पर्वत है। उसकी एक खोह मे वशिष्ट गुफा और वशिष्ट कुण्ड है। वहां एक शिवलिंग स्थापित है।

गढ़वाल के बावन गढ़

क्रम	गढ़	परगना	जाति	विशेष
1	नागपुरगढ़	नागपुर	नागवंशी या नाग जाति	अन्तिम राजा भजन सिंह
2	कोलीगढ़	बछणस्यूं	बछवाण विष्ट	
3	रवाड़गढ़	बदरीनाथ के मार्ग में	रवाड़ी जाति	
4	फल्याणगढ़	फल्दाकोट	फल्याण जाति के ब्राह्मण	

5	बांगरगढ़	बांगर	नागवंशी राणा	
6	कुईलीगढ़	कुईली	सजवाण	इसे जौरासीगढ भी कहते हैं
7	भरपूरगढ़	भरपूर	सजवाण	अन्तिम राजा थोकदार गोविन्द सिंह
8	कुजणीगढ़	कुजणी	सजवाण	– वही–
9	सिलगढ़	सिलगढ़	सजवाण	अन्तिम राजा सबल सिंह
10	मुंगरागढ	खाई	रावत जाति	यहां रौतेले रहते हैं।
11	रैकागढ़	रैका	रमोला	अन्तिम राजा जयचन्द्र
12	मोल्यागढ़	रमोली	रमोला	
13	उप्पुगढ़	उदयपुर	चौहान	
14	नालागढ़	देहराइन		अब इसे नालागढ़ी कहते हैं
15	सांकरीगढ़	खवाई	राणा	
16	रामीगढ़	शिमला प्रांत	राणा	
17	बिराल्टा	जौनपुर	रावत	अंतिम राजा थोकदार सिंह
18.	चांदपुरगढ़	तैलीचांदपुर	सूर्यवंशी राजा भानुप्रताप	
19.	चौण्डागढ़	शीली चांदपुर	चौंडाल	
20.	तोपगढ़		तोपाल	तुलसिंह प्रतापी ने तोप ढलवाई, इसी से तोपल जाति प्रसिद्ध हुई
21.	राणीगढ़	राणीगढ़ पट्टी	खासी	
22.	सलाणगढ़	सलाण	पडियार (परिहार)	अन्तिम राजा विनोद सिंह
23.	बधाणागढ़	बधाण	बधाणी	यह पिण्डर नदी के ऊपर है
24.	लोहाबगढ़	लोहाब	नेगी	
25.	दशोलीगढ़	दशोली		
26.	कण्डारीगढ़	नागपुर	कण्डारी	अन्तिम राजा नरवीर सिंह
27.	धौनागढ़	इडवालस्यूं	धौन्याल	
28.	रतनगढ़	कुजणी	धमादा	
29.	एरासूगढ़	श्रीनगर के ऊपर		
30.	इडियागढ़	खाई बड़कोट	इडिया	
31.	लंगूरगढ़	लंगूर पट्टी		यहां भैरव का मन्दिर प्रसिद्ध
32.	बागगढ	गंगा सलाण	बाड़ूगीनेगी	इसे बागड़ी भी कहते हैं
33	गढ़कोटगढ	मल्ला ढांगू	[illegible]	

34. गढतांगगढ़	टकनौर	भोटिया	
35. बनगढ़ गढ़	बनगढ़		
36. भरदार गढ़	भरदार		
37 चौंदकेटगढ़	चौंदकोट	चौंदीकोटी	
38. नयालगढ़	कटूलस्यूं	नयाल	अन्तिम राजा सरदार भग्गु हुआ
39. अजमीरगढ़	अजमीर पट्टी	पयाल	
40. कांडागढ	रावतस्यूं	रावत	
41. सावली गढ़	सावली खाटली		
42. बदलपुरगढ़	बदलपुर		
43. संगेलागढ	नैलचामी में	संगोलाविष्ट	
44. गुजड़गढ़	गुजड़		
45. जौरगढ़	जौनपुर		
46. देवलगढ़	देवल		
47. लोदगढ़		लोदी	
48. जौलपुरगढ़			
49. चम्पागढ़			
50. डोडराक्वारागढ़			
51. भुवनागढ़			
52. लोदनगढ़			

निर्माण

1. पाटलिग्राम दुर्ग का निर्माण अजातशत्रु ने कराया था।
2. विजयप्रासाद का निर्माण कलिंगराज खारवेल ने 35 लाख रजत मुद्राओं से करवाया था।
3. पारदर्शी वस्त्रों का चित्रण गुप्तकालीन मूर्तिकला की प्रमुख विशेषता है।
4. एकमुखी और चतुर्मुखी शिवलिंग गुप्तकाल की देन है।
5. अर्धनारीश्वर की रचना गुप्तकाल में हुई।
6 अजंता की गुफाएं गुप्तकाल का प्रतिनिधित्व करती हैं।
7 अजंता में

8 अजन्ता–

1. जलगांव से 64 कि.मी.
2. औरंगाबाद से 104 कि.मी. दूरी पर है।

9 अजन्ता का निर्माण–

1. छेनी के प्रयोग द्वारा
2. गुफाओं का निर्माण कार्य 1000 ई. तक चला
3. 30 गुफाओं में
4. 5 मंदिर हैं
5. अंतिम गुफा का निर्माण आठवीं सदी में प्रारंभ हुआ।

10 एलोरा गुफाएं–

1. 34 गुफाएं हैं।
2. 12 बुद्ध, 17 हिन्दू, 5 जैन गुफाएं हैं।
3. हिन्दू गुफाएं–8–9वीं सदी की हैं।
4. जैन गुफाएं 12-13वीं सदी की हैं।
5. इन्द्रसभा एवं जगन्नाथ गुफाएं प्रमुख हैं।

11 अमरावती–

1. गंटूर से 64 कि.मी. दूर है।
2. खण्डहर शेष हैं।
3 एक स्तूप 100 फुट ऊंचा है।

12 सारनाथ–

1. स्तूप 128 फुट ऊंचा है।

13 नागार्जुन कुण्ड–

1. मछेला से 25 कि.मी. दूर है।
2. प्राचीन नाम श्रीपर्वत था।

14 श्रीगुप्त द्वारा निर्मित–मृगशिखावन के समीप एक मंदिर।

15 सुदर्शन झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य ने एक पर्वतीय नदी के जल को रोककर करवाया था।

16 स्कंदगुप्त ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया था।

17 अशोक ने उसमें से सिंचाई के लिए नहरें निकलवाईं।

18 गुप्त सम्वत्=136=456 ई. में सुदर्शन झील का बांध पुन: टूट गया और पर्णदत्त के पुत्र चन्द्रपालित ने, जो गिरिनार का शासक था, बांध पक्का करवाया।

19 चन्द्रपालित ने वहीं पर एक चक्रभृत् अथवा विष्णु का मंदिर गुप्त संवत् 138-458 ई. में निर्मित करवाया।

20 नालदा को बनवाने में स्कंदगुप्त ने की थी

21. कुमारगुप्त प्रथम ने दशपुर में सूर्य मंदिर का निर्माण कराया था।
22 कुमारगुप्त द्वितीय ने दशपुर में सूर्य मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था।
23. चन्द्र नामक गुप्त सम्राट द्वारा निर्मित महरौली का लौह स्तंभ।
24. कुमारगुप्त प्रथम के मंदसौर अभिलेख से ज्ञात होता है कि रेशम बुनकरों की श्रेणी ने 437-38 ई. में एक भव्य सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया।
25. दशावतार मंदिर (देवगढ़, झांसी) का निर्माण गुप्तकाल में हुआ।
26. गुप्तकालीन दो शिव मंदिर प्राप्त हुए हैं–

    1. नाचनाकुठारा – बघेलखण्ड क्षेत्र में
    2. नागोदा – मध्य प्रदेश में

27. गुप्तकाल में नालंदा में प्रसिद्ध बौद्ध विहार की स्थापना हुई।
28. कुमारगुप्त के उदयगिरि (426 ई.) लेख से प्राप्त होता है कि शंकर नामक व्यक्ति ने पार्श्वनाथ की मूर्ति की स्थापना की थी।
29. कहौन लेख के अनुसार स्कधगुप्त काल में भद्र नामक व्यक्ति ने पांच जैन तीर्थंकरों की मूर्ति की स्थापना की।
30. मथुरा के लेख के अनुसार कुमारगुप्त प्रथम के शासन मे हरिस्वामिनी नामक महिला ने एक जैन मंदिर का निर्माण कराया था।
31. गुप्तकाल के मंदिर–

    1. मंदिर निर्माण चबूतरे पर
    2. चारों ओर सीढियां
    3. गर्भगृह
    4. दलान
    5. प्राचीरयुक्त प्रांगण
    6. छतें सपाट
    7. मंदिरों के द्वार एवं स्तंभ अलंकृत
    8. चौखट पर शंख एवं पद्म

32. गुप्तकालीन तिगवा (जबलपुर) विष्णु मंदिर
33. गुप्तकालीन खोह का मंदिर
34. गुप्तकालीन भीतरगांव का मंदिर
35. गुप्तकालीन सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर
36. गुप्तकालीन लाड़खान का मंदिर
37. गुप्तकालीन शिखरयुक्त प्रथम मंदिर देवगढ का दशावतार मंदिर है।
38. गुप्तकालीन एरण में वराह मंदिर
39 गुप्तकालीन सारनाथ के धामेख स्तूप
40 गुप्तकालीन मूर्ति मोटे उत्तरीय वस्त्रों से सुसज्जित हैं

41 गुप्तकालीन प्रसिद्ध मूर्तियां–

(क) मथुरा संग्रहालय की बुद्ध प्रतिमा

(ख) बरमिंघम संग्रहालय की ताम्रमूर्ति (बुद्ध)

(ग) सारनाथ की बुद्ध प्रतिमा

42 गुप्तोत्तर काल में तीन शैलियां प्रचलित थीं–

(क) नागर शैली

(ख) द्रविड शैली

(ग) वेसर शैली

43 दुर्लभवर्धन ने कश्मीर में प्रसिद्ध सूर्य मंदिर मार्तण्ड मंदिर की स्थापना की थी।

44 नागर शैली–उत्तरी भारत में हिमालय से विंध्य-प्रदेश के भूभाग में।

45 द्रविड़ शैली–कृष्णा तथा कुमारी अन्तद्वीप के मध्य (तमिलनाडु)

46 वेसर शैली–विंध्य और कृष्णा के मध्य (दक्षिणावर्त)

47 वेसर शैली में नागर एवं द्रविड़ शैली का मिश्रण है।

48 नागर शैली के मंदिर चतुष्कोण होते हैं।

49 द्रविड़ शैली के मंदिर अष्टभुजी होते हैं।

50 वेसर शैली के मंदिर अर्धगोलाकार होते हैं।

51 उत्तरी भारत के मंदिरों की दो विशेषताएं हैं–

(क) वर्गाकार

(ख) उठानी में एक-एक शिखर होता है।

52 नागर शैली–

(क) वर्गाकार

(ख) शिखर की ओर वक्राकार

53 द्रविड़ शैली–

(क) आयताकार

(ख) शिखर पिरामिड आकार

(ग) प्रदक्षिणा पथ

54. उड़ीसा में मंदिर शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं।

55. भुवनेश्वर में लगभग 100 मंदिर सातवीं शताब्दी–तेरहवीं शताब्दी के मध्य बनाये गये।

56. लिंगराज मंदिर विशुद्ध नागर शैली का सर्वोत्तम उदाहरण है।

57. लिंगराज मंदिर के गर्भगृह को देवुल कहते हैं।

58. लिंगराज मदिर के मण्डप को जगमोहन कहते हैं, जहां भक्त एकत्र होते थे।

59 लिंगराज मंदिर के शिखर की ऊंचाई 160 फुट है और शिखर पर आमलक और कलश है।

वास्तुकला का ही एक अंग होती थी।

73 कैलाश मंदिर तराशी हुई विशाल मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। इसमें त्रिमूर्ति सबसे प्रभावशाली है।

74 पल्लवकालीन वास्तुकला के श्रेष्ठ उदाहरण कांचीपुरम और महाबलीपुरम् में पाए जाते हैं।

75 मामल्लपुरम् की स्थापना नरसिंहवर्मन् ने की थी। यह मामल्ल शैली के लिए प्रसिद्ध है। इसे वर्तमान में महाबलीपुरम् के नाम से जाना जाता है।

76 मामल्ल शैली के अंतर्गत दो प्रकार के मंदिर आते हैं।

(क) मंडप

(ख) रथ

77 एकाश्मक 29 मंदिर शिलाखण्डों को काटकर बनाये गये हैं।

78 मामल्ल शैली के रथ सप्त पेगोड़ा के नाम से प्रसिद्ध हैं।

79 पल्लवनरेश राजसिंह के शासनकाल में निर्मित मंदिर राजसिंह शैली के नाम से प्रसिद्ध है। इस शैली के प्रमुख मंदिर हैं–मामल्लपुर में समुद्रतट पर स्थित–तटीय मंदिर और कांची में कैलाशनाथ तथा बैकुंठ पेरूमल का मंदिर।

80 नंदिवर्मन शैली के प्रमुख मंदिर हैं–

1. कांचीपुरम के मुक्तेश्वर मंदिर तथा मातंगेश्वर मंदिर
2. गुडीमल्लम् का परशुरामेश्वर मंदिर

81 राजराज चोल ने लगभग 1000 ई. में तंजौर में बृहदीश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

82 राजेंद्र चोल ने 1025 ई. में गंगैकोड चोलपुरम् का मंदिर बनवाया।

83 पांड्यकालीन वास्तुकला का मदिर गोपुरम् है। गोपुरम् एक प्रकार का आयाताकार भवन है जिसका शिखर ऊपर की ओर चौड़ाई में क्रमश: कम होता जाता है। इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं–

1 तिरुमलाई मंदिर
2. चिदंबरम् मंदिर
3. कुंबकोणम् मंदिर

84 अशोककालीन वास्तुकला के प्रसिद्ध नमूने–

1. स्तंभ–लोरिया नन्दगढ़
2. वास्तुकला–सारनाथ शीर्ष

85 गांधार शैली में साधारणत: नीली मिट्टी की स्लेट है।

86 पल्लवसम्राट महेन्द्र वर्मन प्रथम ने महाबलीपुरम् मंदिर का निर्माण करवाया, जिसमें 10 मंडप हैं।

87 दिल्ली में कुव्वत-उल इस्लाम नामक मस्जिद कुतुबुद्दीन ऐबक ने बनवाई

88 अजमेर में 'ढाई दिन का झोपड़ा' नामक मस्जिद कुतुबुद्दीन ऐबक ने बनवाई।

89 प्रचलित मान्यता है कि कुतुबमीनार की शुरुआत कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी और इसे इल्तुतमिश ने पूरा कराया था।

90 इल्तुतमिश ने भिलसा के मुख्य मंदिर को तथा उज्जैन के महाकाल के उस मंदिर को नष्ट कर दिया था जिसके निर्माण में तीन सौ वर्ष लगे थे। वह विक्रमादित्य तथा अन्य प्रजावत्सल की अष्टधातु–निर्मित मूर्तियों को भी अपने साथ दिल्ली ले गया था।

91. चित्तौड़ विजय के उपरांत उसका नाम अलाउद्दीन खिलजी ने खिजराबाद रखा।

92. पंबान के द्वीप पर स्थित रामेश्वरम् पहुंचकर विशाल मंदिर को ध्वस्त करके उसके अवशेष पर मस्जिद का निर्माण करके अलाउद्दीन के नाम पर उसका नाम रखा।

93. अलाउद्दीन खिलजी ने सीरी का किला और हजारखंभामहल बनवाया।

94. अलाउद्दीन खिलजी ने अलाई-दरवाजा बनवाया जो दिल्ली की कुतुबी मस्जिद का परिवर्धित रूप है।

95. गियासुद्दीन ने तुगलकाबाद नामक दुर्ग की नींव डाली।

96. मुहम्मद तुगलक अपनी राजधानी दिल्ली से देवगिरि, जिसे उसने दौलताबाद कहकर पुकारा, ले गया।

97. फीरोज तुगलक ने पांच नहरें बनवाईं।

98. फीरोज तुगलक ने 150 कुएं खुदवाए।

99. फीरोज तुगलक ने नगर स्थापित किए–

1. फीरोजाबाद
2. कोटला फीरोजशाह (दिल्ली)
3. फतेहाबाद
4. हिसार
5. जौनपुर
6. फीरोजपुर (बदायूं के समीप)

100. फीरोज तुगलक दो स्तंभ दिल्ली लाया–

1. अशोक स्तंभ–खिजराबाद से
2. अशोक स्तंभ–मेरठ से

101. फीरोज ने 1,200 बाग लगवाये।

102. दिल्ली सल्तनत की स्थापत्य कला की प्रमुखताएं हैं–

1. गुंबद
2. ऊंची मीनारें
3. मेहराब
4 भूमिगृह (तहखाने)

103 हिंडोलामहल या दरबार महल का निर्माण हुसंगशाह ने किया।
104. राणाकुंभा ने कुम्भलगढ़ का किला तथा कीर्तिस्तंभ बनवाया।
105. हुमायूं ने दिल्ली में दीनपनाह नामक दुर्ग बनवाना प्रारंभ किया था।
106. शेरशाह सूरी ने झेलम के तट पर रोहतासगढ़ नामक दुर्ग बनवाया।
107. अकबर ने आगरा, लाहौर और इलाहाबाद मे तीन विशाल किले बनवाये
108. आगरा किले का दिल्ली दरवाजा और अमरसिंह दरवाजा प्रमुख हैं।
109. अकबर के भवननिर्माण का उत्कृष्ट नमूना फतहपुरसीकरी है जो आगरा मील दूर है।
110. फतहपुरसीकरी बनवाने में 11 वर्ष लगे।
111. दिल्ली का लालकिला शाहजहां ने बनवाया था।
112. आगरा का ताजमहल शाहजहां ने बनवाया था।
113. पुलकिट किले का निर्माण--डचों ने कराया था (कोरोमण्डल तट पर)
114. चिनसूरा किला डचों ने बनाया।
115. कलकत्ता मे अंग्रेजों ने सिविल सेवा प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किया।
116. डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर की स्थापना लाला हंसराज ने की थी।
117. 1916 ई. में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

चारधाम

118. बदरीनाथ–समुद्र तल से 1,02,284 फुट।
केदार खण्ड, अध्याय 57, लेखक–व्यास जी।
– बदरीवन, कण्व ऋषि आश्रम से नन्दीगिरि पर्वत तक, भो मोक्ष देने वाला है।(10)
– इसमें गंदमादन पर्वत, बदरीवन और नरनारायण का आश्र अनेकतीर्थों से सुसज्जित कुबेरशिला है।(20)
– मंदिर का निर्माण शंकराचार्य ने करवाया।
– तप्तकुण्ड–16.6 फुट लम्बा एवं 14.6 फुट चौड़ा गर्म ज कुण्ड। जलस्रोत तली में, गधक की सुगंध आती है। मई मे त 120 डिग्री के लगभग।
– पांचबदरी–
1. विशाल बदरी (योगबदरी)
2 पाण्डुकेश्वर(भविष्य बदरी)
3. बदरीनाथ
4 वृद्धबदरी (तपोवन के निकट

5. ध्यानबदरी (अनीमठ)

– बदरीशपुरी से 18 मील ऊपर हिमालय की खोह में निर्मल जल पूरित तालाब है।

– बदरीनाथ मंदिर के अधीन मंदिर–

1. लक्ष्मीगढ
2. मातामूर्ति
3. पाण्डुकेश्वर
4. जोशीमठ (ज्योशीमठ)
5. नृसिंहजी
6. ज्योतीश्वर महादेव
7. बासूदेव मठ
8. रवेश्वर मठ
9. भविष्यबदरी
10 दाडिमी नृसिंह
11. लक्ष्मीनारायण
12. सीतारासमठ
13. वृद्धबदरी
14. लक्ष्मीनारायण (दूसरा)
15. लक्ष्मीनारायण (तीसरा)
16. लक्ष्मीनारायण (चौथा)

– निर्माण काल–संभवतः विक्रमसम्वत् 76 माना जाता है।

– शंकराचार्य के चार शिष्य थे–

1 सुरेश्वराचार्य
2. पद्माचार्य
3. तोटकाचार्य
4. हस्तामलक

118. **केदारनाथ** – समुद्र तट से 11,753 फुट।

– शाब्दिक अर्थ–दलदल या कीचड़

– भूमि जलमय है।

– शिवजी का नाम केदार है।

– बर्फ के सैलाब के कारण है।

– पंचकेदार–

1. केदारनाथ
2 तुंगनाथ

3. रुद्रनाथ
4 मदमहेश्वर
5. कल्पेश्वर

– केदार मंदिर के अधीन मंदिर

1. अगस्तमुनि
2. गुप्तकाशी
3. त्रियुगी नारायण
4. लक्ष्मीनारायण
5 गौरीदेवी
6. मदमहेश्वर
7. तुंगनाथ
8. कालीमठ
9. रुद्रनाथ
10. गोपेश्वर
11. ऊषीमठ

119. गंगोत्री – समुद्रतट से 10,020 फुट
– 6 मील नीचे जन्हु ऋषि का आश्रम है, जिसे लोग जांगला कहते हैं।
– 10-12 मील ऊपर उत्तरपूर्व दिशा में 'गोमुख' (गंगा का उद्गम स्थल)। यह गंगोत्री ग्लेशियर के नाम से प्रसिद्ध है।
– समुद्र तट से 13,570 फुट है।

120. यमुनोत्री – समुद्र तट से 10,849 फुट
– गंधक की गंध

अध्याय आठ

परिभाषाएं

1. श्रौत — उन कृत्यों एवं सस्कारों का समावेश जिसका प्रमुख संबंध वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मणों से था।
2. स्मार्त — उन विषयों का समावेश था जो विशेषत: स्मृतियों में वर्णित हैं तथा वर्णाश्रम से संबंधित हैं।
3. प्रतिलोम — यदि एक ब्राह्मण ब्रह्मज्ञान के लिए किसी क्षत्रिय के पास जाए तो यह 'प्रतिलोम' गति कही जाएगी।
4. वर्णसंकर — जब किसी वर्ण के सदस्य दूसरे वर्ण की नारी से संभोग करते हैं, ऐसी नारियों से विवाह करते हैं, जिनसे नहीं करना चाहिए (सगोत्र कन्या) तथा अपने वर्ण के कर्तव्यों का पालन नहीं करते, तब वर्णसंकर की उत्पत्ति होती है—मनु ऐसी व्यवस्था देते हैं।
   — गीता के अनुसार—"जब नारियां व्यभिचारिणी हो जाती हैं तब वर्ण संकरता उपजती है।"
5. देवब्राह्मण — जो प्रतिदिन स्नान, संध्या, जाप, होम, देवपूजन, अतिथि सत्कार एवं वैश्वदेव करता है।
6. मुनिब्राह्मण — जो वन में रहता है, कन्द-मूल-फल खाता है एवं श्राद्ध करता है।
7. द्विज ब्राह्मण — जो वेदांत पढ़ता है, अनुराग एवं आसक्तियों का परित्याग करता है।
8. क्षत्र ब्राह्मण — जो युद्ध करता है।
9. वैश्य ब्राह्मण — जो कृषि, पशुपालन एवं व्यापार करे।
10. निषाद ब्राह्मण — चोरी, चुगली करने वाला, मांस खाने वाला।
11. पशु ब्राह्मण — जो ब्रह्म के विषय में जाने बिना यज्ञ करे और जनेऊ धारण करे।
12. म्लेच्छ ब्राह्मण — कुओं, तालाबों एवं वाटिकाओं को बिना किसी आशय के नष्ट करे।

13	चाण्डाल ब्राह्मण	– मूर्ख, क्रिया-संस्कारों में शून्य।
14	शूद्र ब्राह्मण	– जो लाख, नमक कुसुंभ के समान रंग, दुग्ध, घी, मधु, मांस बेचता हो।
15	जाति ब्राह्मण	– जो केवल ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ हो।
16	ब्राह्मण	– जिसने वेदाध्ययन कर लिया हो।
17	श्रोत्रिय	– जिसने 6 अंगों के साथ किसी एक वैदिक शाखा का अध्ययन किया हो और वह ब्राह्मणों के 6 कर्तव्य करता हो।
18	अनूचाल	– वेद और वेदांगों का ज्ञाता एवं पवित्र हृदय से अग्निहोत्र करता हो।
19	भ्रूण	– जो अनुचाल होने के अतिरिक्त यज्ञ करता हो और यज्ञ के पश्चात् बचे हुए प्रसाद को ग्रहण करता हो।
20	ऋषिकल्प	– लौकिक एवं वैदिक ज्ञाता एवं मनसंयम।
21	ऋषि	– जो अविवाहित, पवित्र-हृदयी, सत्यवादी, वरदान एव शाप देने योग्य हो।
22	मुनि	– जिसके लिए मिट्टी एवं सोना बराबर मूल्य रखता हो।
23	संस्कार	– संस्कार वह है जिसके होने से कोई पदार्थ या व्यक्ति किसी कार्य के योग्य हो जाता है।
24	निर्वासित शूद्र	– वह जो गंदा रहता है।
25	अनिर्वासित शूद्र	– वह जो स्वच्छ रहता है।
26	भोज्यान्न	– जिसके द्वारा बनाया गया भोजन ब्राह्मण कर सके।
27	अभोज्यान्न	– जिसके द्वारा बनाया गया भोजन ब्राह्मण न कर सके।
28	सच्छूद्र	– अच्छे आचार-व्यवहार वाले शूद्र। मांस आदि का परित्याग।
29	असच्छूद्र	– बुरे आचार-व्यवहार वाले शूद्र।
30	प्रवृत ब्राह्मण	– जो दान लेते हैं।
31	निवृत ब्राह्मण	– जो दान नहीं लेते हैं।
32	उपकुर्वाण ब्रह्मचारी	– जो गुरु को प्रतिदान देता है।
33	नैष्ठिक ब्रह्मचारी	– जो मृत्युपर्यंत वैसे ही रहता है।
34	पतित सावित्रीक	– जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो, इस प्रकार जो पापी है और समाज से बहिष्कृत है।
35	ब्राह्म विवाह	– बहुमूल्य अलंकारों एवं परिधानों से सुसज्जित कन्या वेद पंडित को दी जाती है।
36.	दैव विवाह	– अलकृत कन्या पुरोहित को दी जाए।
37	आर्ष विवाह	एक जोड़ा पशु लेकर कन्या दी जाए

प्रजापत्यविवाह — जब पिता वर तथा कन्या को—'तुम दोनों साथ-साथ धार्मिक कृत्य करना'—कहकर तथा वर को मधुपर्क आदि से सम्मानित कर कन्या दान करे।

आसुर विवाह — जब वर कन्या पक्ष को दान दे।

गांधर्व विवाह — परस्पर गुप्त प्रेम तथा संभोग ही जिसका उद्देश्य हो, उसके उपरांत विवाह।

राक्षस विवाह — संबंधियों को मारकर रोती-बिलखती कन्या को छीनकर विवाह करना।

पैशाच विवाह — सोई हुई, उन्मत्त या अचेत कन्या से संभोग कर जब विवाह हो।

परिवेदन — जब कोई व्यक्ति अपने जेष्ठभ्राता के रहते अथवा जब कोई व्यक्ति बड़ी बहन के रहते छोटी बहन से विवाह करता है तो इसे परिवेदन कहते हैं।

पूनर्भू — वह विधवा जिसका पुन: विवाह हो।

अवरुद्धर — रखैल, जो घर में रहती है और उसके साथ कोई अन्य संभोग नहीं कर सकता।

भुजिष्या — रखैल, जो घर में नहीं रहती किंतु एक व्यक्ति की रखैल के रूप में कहीं और रहती है।

राजस्वला नारी — जो गंदी रहती हो।

इतिहास — ऐसी प्राचीन रुचिकर कथा जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की शिक्षा मिल सके—इतिहास कहलाती है।

प्रागैतिहासिक काल — वह काल जिसके लिए कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं हैं और जिसमें मानव सभ्य बन गया।

ऐतिहासिक काल — वह काल जिसके लिए लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं और जिसमें मानव का जीवन अपेक्षाकृत पूर्णतया सभ्य नहीं था।

आद्य इतिहास — वह काल जिसके लेखन कला के प्रमाण तो हैं किंतु वे या तो अपुष्ट हैं या उनकी गूढलिपि का अर्थ निकलना कठिन है।

दस्यु अव्रत — देवताओं के नियम-व्यवहारों को न मानने वाला।

दस्यु अक्रतु — यज्ञ न करने वाला।

दस्यु मृध्रवाच — जिनकी वाणी स्पष्ट एवं मधुर न हो।

दस्यु अपनास — गूंगे व चपटी नाक वाले।

कुंभीधान्य — वह ब्राह्मण जिसके पास इतना अन्न हो जो एक कुशूल

या कुंभी में अट सके—मनु के अनुसार।
- वह जिसके पास साल—भर के लिए अन्न है—कुल्लूक के अनुसार।
- जिनके पास क्रमशः 12 एवं 6 दिनो के लिए अन्न है—गोविंदराज के अनुसार।

57. कुसूलधान्य — वह ब्राह्मण जिसके पास तीन वर्षों के लिए अन्न है—कुल्लूक के अनुसार।
- जिसके पास धान एवं अन्न तीन वर्ष के लिए है—मेधातिथि के अनुसार।

58. उपसंग्रहण — अपना नाम एवं गौत्र 'मैं प्रणाम करता हूं' कहकर बोलता है।

59. अभिवादन — इसमें चरण-स्पर्श नहीं होता। अभिवादन के पूर्व प्रत्युत्थान होता है। इसमें केवल प्रणाम होता है।

60. प्रत्युत्थान — किसी के स्वागत में आसन को छोड़कर उठना।

61. प्रत्यभिवादन — प्रणाम का उत्तर दिया जाता है।

62. नमस्कार — इसमें नमः के साथ सिर झुकाना होता है।

63. समादिष्ट — गुरु के कहने पर अन्य व्यक्ति द्वारा अध्यापन-कार्य करना। ऐसे व्यक्ति को गुरु के समान सम्मान मिलता था।

64. उपकुर्वाण — जो गुरु को कुछ प्रतिदान देता था।

65. नैष्ठिक — जो मृत्युपर्यंत वैसे ही रहता है।

66. पतितसावित्रीक — जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो, जो पापी है और आर्य-समाज से बहिष्कृत है।

67. विद्यास्नातक — जिसने वेदाध्ययन समाप्त कर लिया हो, किंतु व्रत न किए हों।

68. व्रतस्नातक — जिसने व्रत कर लिए हों किंतु वेदाध्ययन समाप्त न किया हो।

69. विद्याव्रतस्नातक — जिसने व्रत एवं वेद दोनों की परिसमाप्ति कर ली हो।

70. स्नातक — समावर्त के उपरांत एवं विवाह के मध्य का समय।

71. उद्धाह — कन्या को उसके पितृग्रह से उच्चता के साथ ले जाना।

72. विवाह — विशिष्ट ढंग से कन्या को ले जाना।

73. उपनयन — सन्निकट ले जाना और अपना बना लेना।

74 सपिण्ड — प्रपितामह, पितामह, पिता एवं अपने सहोदर भाई, सवर्ण पत्नी के पुत्र पौत्र प्रपौत्र ये सभी सपिण्ड कहे जाते हैं।

75	मधुपर्क	– किसी विशिष्ट आगमन पर उसके सम्मान में जो मधु आदि प्रदान होता है उसे मधुपर्क कहते हैं।
76	क्षेत्रज	– जीवित पति द्वारा प्रार्थित स्त्री जब नियोग से पुत्र उत्पन्न करती है तो वह पुत्र उसी (पुरुष) का पुत्र होता है उसे क्षेत्रज कहते हैं।
77	क्षेत्र	– क्षेत्रज की माता को क्षेत्र कहते हैं।
78	क्षेत्री	– क्षेत्र का पति।
79	नियोगी	– पुत्रोत्पत्ति के लिए नियुक्त पुरुष बीजी।
80	सहमरण/सहगमन/ अन्वारोहण	– पति की मृत्यु पर विधवा का पति के साथ चिता पर चढ़ना और शव के साथ जलना।
81	अनुमरण	– जब पति की मृत्यु कहीं और हो जाये और विधवा बाद में जल मरे।
82	मास्तिक्कली/ विरक्कल	– सतियों एवं पुरुषों की स्मृति में निर्मित प्रस्तर-स्तंभ।
83	श्येनयाग	– जिसके द्वारा लोग अपने शत्रु पर काला जादू करके उसे मारते थे।
84	शालीन	– जो घर में रहता है, उसके पास नौकर-चाकर, पशु आदि होते हैं।
85.	यायावर	– अत्युत्तम जीविका वाला, सम्पत्ति नहीं जोड़ता।
86.	वार्तावृत्ति	– जो कृषि, पशुपालन, व्यवसाय आदि करता है।
87	घोराचारिक	– जो नियमव्रती है, यज्ञ करता है, किंतु दूसरों के यज्ञ में पुरोहिती नहीं करता।
88	अभिनिर्मुक्त/ अभिनिम्रुक्ति	– जो सूर्यास्त से पहले ही सो जाये।
89	नैमित्तिक स्नान	– किन्हीं विशिष्ट अवसरों पर या विशिष्ट पदार्थों, व्यक्तियों के स्पर्श हो जाने पर होने वाला स्नान।
90.	काम्यस्नान	– किसी तीर्थ को जाते समय या पुष्य नक्षत्र में चन्द्रोदय पर जो स्नान होता है।
91.	क्रियांगस्नान	– कूप-मंदिर, वाटिका तथा अन्य जन-कल्याण के निर्माण-कार्य के समय होने वाला स्नान।
92.	मलापकर्षक स्नान या अभ्यंग स्नान	– शरीर पर तेल अथवा आंवला लगाकर केवल शरीर को स्वच्छ करने की इच्छा से होने वाला स्नान।
93.	क्रिया स्नान	– किसी तीर्थ स्थान पर यात्रा के फल-प्राप्त्यर्थ स्नान होता है।

94 कपिल स्नान – अस्वस्थ्य का सिर छोड़कर गर्म जल से शरीर का स्वच्छ करना।

95. तर्पण – देवताओं, ऋषियों एवं पितरों को जल देना।

96. उखा – जिस पात्र में वैवाहिक अग्नि ले जाते हैं।

97. राजसूययज्ञ – यह यज्ञ फाल्गुन मास मे शुक्लपक्ष के प्रथम दिन प्रारंभ होकर एक वर्ष तक चलता है। यह केवल क्षत्रिय ही कर सकता है।

98. अश्वयज्ञ – यह यज्ञ फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष के आठवें या नौवें दिन या ज्येष्ठ मास के इन्हीं दिनों या आषाढ़ के दिनों में होता है।

99. भोग – भूमि कर का वह भाग जो राजा अपने उपभोग में लेता था।

100. प्रदक्षिणापथ – द्रविड़ शैली के मंदिरों में आधार-योजना के हिसाब से गर्भगृह के चारों ओर वर्गाकार छत से ढका हुआ बाड़ा होता है।

101. सरकारी अभिलेख – सरकारी अभिलेख या तो राजकवियों द्वारा लिखी हुई प्रशस्तियां हैं या भूमि-अनुदान-पत्र।

102. निजी अभिलेख – ये बहुधा मंदिरों में या मूर्तियों पर उत्कीर्ण हैं।

103. आहत सिक्के – जिन सिक्कों पर अनेक प्रकार के चित्र उत्कीर्ण हैं और लेख नहीं हैं।

104. अग्रहार – ऐसे गांव, जिनकी व्यवस्था के लिए राजा की ओर से कुछ गांव विद्वान शिक्षक ब्राह्मण को प्रदान कर दिए जाते थे।

अध्याय नौ

शब्दावली

1	नारद	– चुगलखोर, झगड़ा करने वाला।
2	अव्रतदस्यु	– देवताओं के नियम-व्यवहारों को न मानने वाला।
3	अक्रतुदस्यु	– यज्ञ न करने वाला।
4	मृघवाचदस्यु	– जिसकी बोली स्पष्ट एवं मधुर न हो।
5	अपनासदस्यु	– गूंगे व चपटी नाक वाले।
6	ब्रह्म	– प्रार्थना, स्तुति ।
7	वर्ण	– वंश, संस्कृति, चरित्र एवं व्यवसाय मूल पर आधारित
8	जाति	– यह जन्म एवं आनुवांशिकता पर बल देती है।
9	वैश्वदेव	– देवताओं को पकवान देना
10	कूप	– चतुर्भुजाकार या वृत्ताकार, जलाशय, व्यास–5 हाथ से 50 हाथ, सीढ़ियां नहीं।
11	वापी	– जिसके किसी भी ओर या चारों ओर सीढ़ियां हों, जलाशय, व्यास–50 हाथ–100 हाथ।
12	पुष्करिणी	– जलाशय–100–200 हाथ व्यास।
13	तड़ाग	– जलाशय–200–300 हाथ लंबा।
14	देवदासी	– मंदिरों की स्थापना तथा मूर्तिप्रतिष्ठा के साथ कन्याओं का दान भी होता था, जो देवदासी कहलाती थीं।
15	देवोत्तर	– देवताओं की सम्पत्ति।
16	वैखानस	– वानप्रस्थियो के लिए नियम ग्रंथ।
17	श्रामजक	– वैखानससूत्र जिसमें तपस्वियों के कर्तव्यों का वर्णन है।
18	पचमानक	– जो पका हुआ भोजन या फल खाते हैं–वानप्रस्थ।
19	अपचमानक	– जो अपना भोजन पकाते नहीं–वानप्रस्थ।
20	पूर्णमासी	– वह तिथि जिस दिन सूर्य एवं चन्द्र एक-दूसरे से अधिकतम दूरी पर रहते हैं।
21	अमावस्या	– वह तिथि जिस दिन सूर्य एवं चंद्र एक-दूसरे से न्यूनतम दूरी पर रहते हैं।

22. वाजपय – भोजन और पेय।
23 मैरिडच – जिला न्यायाधीश।
24. स्टैटेज़स – सैनिक गवर्नर।
25 सैट्रप – महाक्षत्रप या क्षत्रप।
26. चार सत्य – 1 दुःख
2. दु.ख का दमन
3. दुःख का कारण
4. दुःख के शमन का मार्ग
27. आष्टांगिक मार्ग – 1. सत्य दृष्टि
2. सत्य भाव
3. सत्य भाषण
4. सत्य कर्म
5. सत्य निर्वाह
6. सत्य प्रयत्न
7. सत्य विचार
8. सत्यध्यान
28 कर्षापण – मौर्य साम्राज्य के सिक्के।
29. निक्स – सोने के मौर्य साम्राज्यी सिक्के।
30. सुवरण – सोने के मौर्य साम्राज्यी सिक्के।
31. मासक – तांबे के मौर्य साम्राज्यी सिक्के।
32. काकनिक – तांबे के मौर्य साम्राज्यी सिक्के।
33. धर्मष्ठेय – विशिष्ट न्यायालय (मौर्य साम्राज्य)।
34 अनुलोम विवाह – उच्च वर्ग का वर निम्न वर्ग की कन्या ।
35. प्रतिलोम विवाह – उच्च वर्ग की कन्या निम्न वर्ग का वर।
36 आहत् सिक्के – वे सिक्के जिन पर केवल चिह्न उत्कीर्ण हैं लेख नहीं है।
37. नागर शैली – उत्तर भारत के मंदिरों की शैली।
38. द्रविड़ शैली – दक्षिण भारत के मंदिरों की शैली।
39. बेसर शैली – नागर और द्रविड़ के प्रभाव से युक्त शैली दक्षिण भारत में।
40. व्रात – शरीर–बल पर आजीविका कमाने वाला।
41. पूग – व्यवसाय नहीं, केवल धनलोलुप एव कामी।
42. कायस्थ – का = काक अर्थात् – लालच
य = यम – क्रूरता
स्थ = स्थपति – लूट

43 पुसवन सस्कार — लड़के को जन्म देना।
44. सीमातोनयन — स्त्री के केशों को ऊपर विभाजित करना।
45. उपनयन संस्कार — गुरु के समीप ले जाना।
46. पाकयज्ञ — गृह अग्नि में जो यज्ञ सम्पादित हो, पह यजमान के घर पर ही होता है।
47. गोत्र — गोशाला, समूह, दुर्ग, मनुष्यों का दल आदि।
48. प्रवर — वरण करने या आवाहन करने योग्य।
49. पंचमहायज्ञ — 1. भूतयज्ञ
2. मनुष्य यज्ञ
3. पितृयज्ञ
4 देवयज्ञ
5. ब्रह्मयज्ञ
50. स्थानापति — मंदिरों का अधीक्षक
51. विश् — 'जन–दल' (ऋग्वेद के अनुसार)
52 विश: — राष्टिणी (देश)(एतरेय ब्राह्मण के अनुसार)
53. उपनयन — पास या सन्निकट ले जाना।
54. अन्तेवासी — जो गुरु के पास रहता है।
55. मूर्वा — जिससे प्रत्यंचा बनती है।
56. मेखला — करधनी
57. ब्रह्मवादिनी — ज्ञानिनी
58. सद्योवधु — जो विवाह कर लेती है।
59. मेधा-जनन — बुद्धि की उत्पत्ति (उपनयन के चौथे दिन का संस्कार)
60. समादिष्ट — शिष्याध्यापक
61. पित्य — श्राद्ध पर प्रबंध
62. निधि — गुप्त खनिज खोजने की विद्या
63. वाकोवाक्य — कथोपकथन या हेतु विद्या
64. एकायन — राजनीति
65. देवविद्या — निरुक्त
66. ब्रह्मविद्या — छंद एवं ध्वनि विद्या
67. क्षत्रविद्या — धनुर्वेद
68. वेदजन विद्या — नाच, गान, अभ्यंजन
69 निष्ठा — अन्त या मृत्यु
70 समावर्तन — गुरुगृह से वापस आना
71 परिणय/न — अग्नि की प्रदक्षिणा करना

72	पाणिग्रहण	– कन्या का हाथ पकड़ना
73	वाग्दान	– विवाह तय करना
74	मधुपर्क	– वह कृत्य जिसमें मधु का गिरना या मोचन होता है।
75.	परिवेत्ता/ परिविविदान/ परिविन्दक	– छोटे भाई को, जो बड़े से पहले विवाहित हो जाता है।
76	परिवित्ति/ परिविन्न/परिवित्त	– छोटे भाई के विवाह के उपरांत बड़ा भाई विवाह करे।
77	अग्रे-दिधिषू परिवेदिनी	– छोटी बहन, जो बड़ी बहन से पूर्व विवाहित हो जाए।
78.	दिधिषू	– बड़ी बहन, जो छोटी बहन के विवाह के उपरांत विवाह करे।
79.	अग्रेदिधिषूपति/ दिधिषूपति	– अग्रेदिधिषू एवं दिधिषू कन्याओं के पति।
80.	परिदायी/परिदाता	– परिवेदन कन्याओं का अभिभावक या पिता।
81.	महिषी	– अभिषिक्त रानी (पत्नी)
82	वावाता	– चहेती पत्नी
83.	परिवृक्ता	– त्यागी हुई पत्नी
84.	पालागली	– निम्न जाति की पत्नी
85.	नियोग	– किसी नियुक्त पुरुष द्वारा पुत्रोत्पत्ति के लिए पत्नी या विधवा की नियुक्ति।
86.	पुनर्भू	– जिसने पुनर्विवाह किया हो।
87.	पौनर्भव	– द्वितीय विवाह या द्वितीय पति से उत्पन्न पुत्र
88.	गणिका/वैश्या	– जो स्त्रियां सभी पुरुषों की हैं।
89.	आह्निक	– प्रतिदिन के कर्म।
90.	कृष्णम् अह:[1]	– रात्रि
91	अर्जुनम् अह:[2]	– दिन
92.	कुतप	– जब सूर्य मंद होने लगता है।
93	वायस	– वस्त्र
94.	वास:	– बाहरी वस्त्र
95	नीबि	– भीतरी वस्त्र
96.	अधिवास	– घूघट या आवरण

[1] ऋग्वेद. 6/9/1

[2] वही

97. कौशेय — रेशम का बना हुआ
98. जप — संध्यापूजन का एक भाग
99. सुराम — सोम मिश्रित सुरा
100 उपाकर्म/उपाकरण — उद्घाटन करना या प्रारंभ करना
101. उत्सर्जन/उत्सर्ग — वर्ष में कुछ काल के लिए वेदाध्ययन से विराम
102. मोहन-जो-दड़ो — मृतकों का टीला
103 कालीबंगा — काली चूड़ियां
104. गोप्ना — देश का प्रशासक (गुप्तकाल)
105 भुक्ति — प्रादेशिक इकाई
106. उपरिक — भुक्ति का प्रशासक
107. विषय — भुक्ति के नीचे प्रशासनिक इकाई
108 विषयपति — विषय का प्रशासनिक अधिकारी
109. पेंठ — ग्राम इकाई (गुप्तकाल)
110. ग्राम — प्रशासन की सबसे छोटी इकाई
111. ग्रामिक — ग्राम का शासक
112. भाग — उत्पादन (कृषि) का 1/6 भाग (गुप्तकाल)
113. उद्रंग एवं उपरि कर— एक प्रकार का भूमि कर
114. हिरण्य — भूमि कर जो नकद लिया जाता है।
115. मेय — अन्न का तौल
116. क्षेत्र — खेती के लिए भूमि
117. वासु — वास करने योग्य भूमि
118. सिल — जो भूमि जोती नहीं जाती
119. अप्रहत — बिना जोती गई जंगली भूमि
120. ऋक् — छन्दोबद्ध रचना या लोक
121. उपनिषद — गोपनीय या गुरु के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना
122. सूत्र — सभी
123. आर्य — श्रेष्ठ
124. सप्तसिंधु — सात नदियों वाला प्रदेश
125. विश् — वैश्य
126. गणपति — कबीले का मुखिया
127. जेष्ठ — सभा संघ का अध्यक्ष
128. होत्री — झाड़फूंक आदि का पुरोहित
129 अक्षयनीवि — आधुनिक ट्रस्ट या न्यास
130 सार्थवाह — घुमक्कड़ व्यापारी

131. सांगात्रिक – घुमक्कड़ व्यापारी
132. चीनांशुक – चीन से आने वाला एक रेशमी वस्त्र
133. विषकन्या – एक गुप्तचर
134. कडनम – जहां सेना रखी जाती थी (चोल साम्राज्य)
135. दीवान-ए-अर्ज – सेना विभाग
136. हरम-ए-अतरफ – इल्तुतमिश की प्रांतीय सेना
137. सवार-ए-कल्ल – शाही घुड़सवार
138. मुकद्दम – गांव का मुखिया
139. इक्ता – कर के लिए विभक्त भूमि
140. अमीर-ए-दह – सल्तनत काल की छोटी सैन्य इकाई
141. अमीर-ए-तूमन – सल्तनत काल की बड़ी सैन्य इकाई
142. दीवान-ए-रसालत – विदेश संबंधी
143. दीवान-ए-कजा – इस्लामी कानूनों को लागू करने वाला
144 नायब-उल-मलिक – सल्तनत सेना अध्यक्ष
145. मुक्ता – इक्तो का अध्यक्ष
146. खालसा – सल्तनत की केंद्रीय सरकार की भूमि
147 आय्यंगर – ग्रामप्रधान (विजयनगर साम्राज्य)
148. गुमाश्ता – अंग्रेजों के बिचौलिये
149 पांच ज्ञानेंद्रियां – अहंकार से मन, राजसी अहंकार से आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा।
150. पांच कामेन्द्रियां – मुंह, हाथ, पैर, गुदा और लिंग।
151. पांच तन्मात्र – संभाषण, स्पर्श, दृश्य, स्वाद और संघूना।
152. आतस्थिवास – स्थिर रहने वाला
153. अनंतास – अनंत
154. विश्वसस्परि – संसार से ऊपर रहने वाले
155. द्यौ – आकाश
156. निशंकित – संदेह से दूर
157. निवकांक्षित – सांसारिक सुख की अभिलाषा से दूर
158. नगरों के प्रकार–
    1. पुर – जहां व्यवसायी रहते थे
    2. केवलनगर – सामान्य जनबाहुल्य नगर
    3. पट्टन – प्राचीरों एवं खाइयों से आरक्षित बन्दरगाह
    4. द्रोणमुख – व्यापार-वाणिज्य केंद्र के साथ-साथ राजनिवास
    5. कार्मुक – नदी मार्ग पर स्थित बड़ा व्यापारिक नगर

6. पद्मक – बस्तियों की बहुभु आकृति वाला नगर
7. दंडक – वृद्ध ब्राह्मणो की बस्ती
8. खेट – कामगारों, सामान्यतया शूद्रो की बस्ती
9. खर्पट – दुग्ध व्यवसाय और पशुचारण पर निर्भर क्षेत्र
10. कुब्जक – खेट और खर्वट के मध्य बसाई गई बस्तियां

अध्याय दस

सुरक्षा संबंधी शब्दावली

1.	अकृत्य	– जो व्यक्ति जासूसों के फुसलाने पर भी शत्रु पक्ष से मिलकर देशद्रोह न करे।
2.	अटवीबल	– भील सरदारों की सेना
3.	अतिनयन	– गुप्तरूप से सेना अथवा गुप्तचरों का शत्रु देश में प्रवेश, तस्करी।
4.	अतिसारण	– विदेश में प्रवेश, तस्करी
5.	अनय	– दुष्ट नीति
6.	अन्तर्धि	– जो दुर्बल राज्य बिजिगीषु तथा शत्रु के बीच में पड़ता हो।
7.	अनात्मन्	– दुष्ट प्रकृति, देशद्रोही
8.	अनासार	– शत्रु को पीछे सहायता न मिलने की स्थिति
9.	अनि:स्त्राविशत्रु	– शत्रु को बाहर न जाने देना
10.	अन्तरमात्यकोप	– राजप्रासाद के अधिकारियों का विद्रोह
11.	अन्तर्वंशिक	– राजप्रासाद सैन्याधिकारी, अधीक्षक
12.	अन्तेवासिन्	– समीप रहने वाला परिचर
13.	अन्वाधि	– जिसकी सुरक्षा में कोई वस्तु रखी जाये
14.	अन्वायति	– अतिरिक्त सुरक्षा सहायता
15.	उपचरित	– द्रोही, क्रांतिकारी
16.	अपदिष्टक	– अपराधी घोषित होना, फंसना
17.	अंगरक्षी/अंगरक्षक	– राजा का सुरक्षाधिकारी
18.	अन्तपाल	– सीमान्तरक्षक, 18 तीर्थों में से एक
19.	अनुप्रवेश	– अपराधोन्मुख अनधिकृत प्रवेश
20.	अन्त:कोप	– नगर या राजधानी में विद्रोह
21.	अन्तर्भेदिन	– शत्रुसेना का पार्श्वभेदन
22.	अन्त:प्रतिहार	– अन्त:पुर रक्षक
23.	अपसर्प	– चर, गुप्तचर
24	अपसर्पय	निगरानी रखना

25 अपसार – सुरक्षित स्थान, पीछे हटना
26 अपसारिन – पीछे आकर सुरक्षित स्थान
27 अपार्ष्णि – शत्रु का अभाव
28 अपाश्रय – सुरक्षा सहायता
29 अभिग्रह – बन्दीकरण
30 अभिज्ञानपत्र – परिचयपत्र, मुद्रांकित प्रवेश-पत्र
31 अभिहूलिक – शत्रुओं को वश में करने वाला
32 अभिशप्त – अपराधी होने के संदेह में पकड़ा गया व्यक्ति
33 अभ्यंतर – नगर में रहने वाला अधिकारी
34 अभ्यंतकोप – नगर अथवा प्रदेश स्थित अधिकारियों का विद्रोह
35 अभ्यंतरिका – राजमहल स्थित स्त्रियो के निवास की आरक्षिका, संभवतः वेश्या के लिए भी प्रयुक्त
36 अभ्यधिगतृ – अनाधिकार प्रवेश करने वाला
37 अभ्यवपद् – आत्मसमर्पण करना
38. अभ्यावपत्ति – आत्मसमर्पण
39. अल्पवाप – द्रोह प्रेरित पुरुषों का प्रतिकार अथवा दमन, अवरोध
40. अवग्रह – अवरोध, प्रतिबंध, प्रतिरोध
41. अवमर्द – दुर्ग पर अधिकार करना
42. अवश्रावण – देश निष्कासन
43. असंभाषा – वार्तालाप निषेध, अवसर निषेध
44. अहिपृष्ठ – शत्रु सेना को फसाने का उपाय
45. आक्रंद – मित्र, जो सेना के पीछे से सहायता करे
46. आक्रंदसार – शत्रु के पीछे स्थिति मित्र का मित्र
47. आटविक – जंगली जातियो का प्रधान
48 आतिवाहिक – सार्थवाह के सामान की सुरक्षा का कर
49. आपद् – षड्यंत्र
50. आप्यप्रयोग – संबंधियो द्वारा देशद्रोहियों का वध
51. आबलीयस/आबलीयसिक – आसक्त राजा के लिए सुरक्षा उपाय
52. आबाध – खतरा
53 आभ्यंतर – नगर अथवा राजधानी से संबंधित
54. आरक्ष/आरक्षिन् – आरक्षक
55 आराज्य – राज्य को सशक्त बनाना
56 आहित – बंधक रखा हुआ व्यक्ति

57. ईक्षणिक – प्रश्नोत्तर द्वारा शुभाशुभ कल बताने वाला
58. उच्छेदनीय – उन्मूलन के लिए उपयुक्त विनाशयोग्य
59. उत्कोचक – जो शक्तिपूर्वक धन वसूल करे, घूस लेने वाला
60 उत्पथिक – ऐसा गुप्तचर जो उस प्रदेश में काम कर रहा हो जहां मार्ग न हो।
61. उद्दूष्य – विद्रोह की भावना पैदा करना
62. उपग्राह – बंदी करना, प्रतिबंधित करना
63. .उपग्राहिन् – ले जाने वाला, धारण करने वाला
64. उपघात – विष आदि के प्रयोग द्वारा किसी का वध करना
65. उपचर – भोजन में विष देना
66. उपजाप – गुप्त रूप से प्रेरणा देना, प्रोत्साहन देना
67. उपधा – गुप्त परीक्षा
68. उपनिषद् – गुप्त प्रक्रिया अथवा ढंग
69 उपनिषद्योग – गुप्त मिश्रण, विषाक्त
70. उपांशुदण्ड – हत्या अथवा वध, गुप्तदण्ड
71. उभयवेतन – दो पक्षों से वेतन पाने वाला गुप्तचर
72. उपधिक – आर्थिक अपराध सबधी सूचनाए एकत्र करने वाला गुप्तचर, राजमार्गों पर और अप्रयुक्त रास्तों पर भी यह कार्य करता था।
73. उरस्य – सेना का मध्य भाग
74 एकचर – एकाकी कार्य करना, एकाकी कार्य करने वाला गुप्तचर
75. औपनिषदिक – गुप्त, गुप्तदान
76. औपस्थायिक – परिचर, अनुचर
77. कक्ष – युद्धोन्मुख सेना का भाग
78. कष्टक – राजविरोधी एव समाज का विद्रोही
79. कापटिक – गुप्तचर जो वेदों का अध्ययन करने का ढोंग कर रहा हो
80. कुपित – विद्रोह
81. कुमाराध्यक्ष – राजपुत्रों की देखरेख करने वाला अधिकारी
82. कुमारीपुर – नगर का विशेषद्वार
83 कूटसाक्षी – झूठा गवाह
84. कोप – विद्रोह, आक्रमण
85. कोपक – विद्रोह को प्रोत्साहन देना
86. खड्गग्राह्य – खड्गधारी

87. खड्गग्राहिण — राजा की सुरक्षा के लिए शस्त्रधारी
88. खड्गसिक/खड्गिन — शस्त्रधारी
89. गणिका — वारांगना, गुप्तचारिका
90. गामागामिक/गामागामिन — नगर में आवागमन नियंत्रक अधिकारी
91 गुप्ति[1] — सुरक्षा के उपाय
92. गुल्म — पुलिसथाना
93. गुल्मदेय — पुलिस सुरक्षा के लिए दिया जाने वाला कर
94 गुल्मपति — थानाध्यक्ष, गुल्म का अधिकारी
95. गुह्यसधर्मन् — रहस्य से संबंधित
96. गूढ़/गूढ़पुरुष/गूढ़ता — गुप्त रूप से रहना, गुप्त ढंग से व्यवहार करना, छिपाना
97. गूढ़ाजीव/जीविन् — जो गुप्त रूप से धन पैदा करके निर्वाह करे
98. गूढ़चारिन् — गुप्तचर
99. गूढ़भाषित — गुप्त सूचना, गुप्त रूप से कही गई बात
100. गोप/गोप्ता — चौकीदार, गुप्त अभिलेखों में प्रांत में नियुक्त एक प्रमुख सुरक्षाधिकारी, वैदिक एवं संस्कृत साहित्य में राजा के लिए विशेषण, जो बाद में शासन का एक अधिकारी बन गया।
101. गौल्मिक/गुल्मपति — नगर पुलिस का अधिकारी, राजप्रासाद का रक्षक
102. गृहपतिक — गृहस्थ की भांति रहता हुआ गुप्तचर
103. गृहपातिक व्यंजन — किसान के रूप में रहने वाला गुप्तचर
104. चमूखला — सेना में अवांछनीय तत्त्व
105. चर/चार — गुप्त रूप से भ्रमण करने वाला गुप्तचर, सूचना देने वाला
106. चरक — अनुचर
107. चौर/रज्जू — चोरों से सबंधित आय, दस्यु परिग्रहण
108. चोर/रज्जूक — दस्यु परिग्रहण संबंधी अधिकारी
109. जांगुलिविद — विषविद्या में निपुण, अश्वादि पशुओं का वैद्य, विषप्रतिकारक
110. आमरिक — विद्रोह करने वाला
111. डिम्ब — प्रजा का विप्लव
112. तंत्रयुक्ति — समस्या को सुलझाने का ढंग
113. ताडन — दण्ड
114. तापस — संचार वर्ग का गुप्तचर

---

[1] अर्थशास्त्र, आचार्य विष्णुगुप्त, 2/16/18, 2/35/12, 3/20/14

115 तापस व्यंजन — मुण्डी अथवा जटिल तपस्वी वेशधारी गुप्तचर
116. तीक्ष्ण — एक विशेष गुप्तचर
117. तूष्णीदण्ड — गुप्तदण्ड अथवा शांतदण्ड, वध
118 दण्डकर्म — अपराधी को दिये जाने वाले विभिन्न दण्ड
119. दण्डखेदिन् — विशेष दण्ड से दुखी
120. दण्डप्रणीत — जिसे अर्थदंड दिया गया हो
121. दण्डप्रतिकारिणी — दण्ड के बदले में काम करने वाली बाध्य स्त्री
122. दण्डोपनायी — अपनी सैन्य शक्ति के प्रभाव से अन्य राजा को अपने वश में करने वाला
123. दण्डोपनत् — सेना के साथ आत्मसमर्पण करने वाला
124. दण्डोपनयिन् — शत्रु को परास्त करने वाला
125. दण्डबल व्यवहार — सैनिक कार्यवाही
126. दम्य — प्रशिक्षणरत
127. दण्डकर्मिक — गुप्त दण्ड देना
128. दुहपरोधिन् — जिस पर घेरा न डाला जा सके
129. दूषीविष — एक विशेष प्रकार का विष
130. दूष्य — धोखा देने वाला, गुप्तकार्य के लिए उपयुक्त
131. देवपथ — प्रशस्त मार्ग
132 दौर्गकर्मिक — दुर्ग रक्षार्थ प्रयुक्त अधिकारी
133 दैवारिक — द्वार रक्षक
134. दैधीभाव — एक राजा से सुलह तथा दूसरे से युद्ध करने वाला
135. द्वैधीभाविक — दो राजाओं से अलग-अलग व्यवहार रखने वाला
136 द्वाराधिप — द्वारपति, द्वारनाथ
137. द्वारपति — मार्गाधिकारी और कहीं-कहीं सेवा अधिकारी, उस भांति जिस तरह द्वारनाथ, द्वाराधिप, द्वारपाल आदि
138. नगरपति — नगर अधिकारी
139. नगरमहन्तक — नगर प्रधान
140. नगररक्षक — पुलिस अधीक्षक
141. नगराधिकृत — नगर अधिकारी
142. नागरक/नागरिक — नगर अधिकारी, पुलिस अधीक्षक
143. पथिक/उत्पथिक — राजमार्गों पर भ्रमण करके सूचना एकत्र करने वाला गुप्तचर
144. परमिश्रा — शत्रु से मिल जाने वाला
145 परिकर्मिक परिचर

146. पव्याध्यक्ष – सेना विभाग में पैदल सैनिकों का कार्य देखने वाला प्रधान राजपुरुष
147. पक्ष – युद्ध स्थल का पार्श्वभाग
148 पदातिकर्म – युद्ध आदि के अवसरों पर पैदल सैनिकों का क्रियाकलाप
149 परिव्राजिका – भिक्षुकी का रूप धारण करके काम करने वाली महिला गुप्तचर
150. पादगोप – पदाति, सुरक्षा सैनिक
151. पार्ष्णि – शत्रु के पीछे
152. पार्ष्णिग्राह – पीछे का शत्रु
153. पार्ष्णिग्राह्यसार – पीछे स्थित शत्रु का मित्र
154. पुरुष – राजपुरुष, गुप्तचर, निम्नस्तर का राजपुरुष
155. पुष्करिणीद्वार – एक प्रकार का नगरद्वार
156. प्रकोपक – विद्रोह के लिए भड़काना
157. प्रणिधि – कार्य नियुक्त गुप्तचर
158. प्रतिहाररक्षी – द्वार-स्थित-चौकीदार, अंतरंग प्रकोष्ठ का चौकीदार, रानी की अंगरक्षिका
159. प्रतिहारप्रस्थ/पृष्ठ – द्वार–रक्षकों के लिए एकत्रित किया गया धन
160. प्रत्यंत स्कंध – सीमा पर नियुक्त सैनिक दस्ता
161. प्रत्यासह – जवाबी आक्रमण
162 प्रदीपयान – रात के समय मशाल लेकर चढ़ाई करना
163. प्रद्वार – राजद्वार, सामने का दरवाजा
164. प्रधावनिका – प्राचीन और परिरखा के बीच का रास्ता
165. प्रसार – आगे जाने वाली सुरक्षा टुकडी
166. भिक्षुकी – साधु अथवा भीख मांगने वाली स्त्री के रूप में काम करने वाली गुप्तचारिका
167. मध्यभेदिन – शत्रु सेना के मध्य का विनाश करने योग्य
168. मुरजक – छत अथवा प्राचीर का लगा हुआ ढोलकनुमा पत्थर, जो सुरक्षा का काम करता था।
169. यौगपुरुष – गुप्तचर, गुप्तकार्यों मे नियुक्ति
170. योगवृत्त – गुप्तव्यवहार
171. योगसुरा – विषायुक्त सुरा
172. रस – विष
173. रसद – विष देने वाला गुप्तचर
174. रक्ष/रक्षा/रक्षण – सुरक्षा करना

175 रसविषय — विषाक्त
176 रक्षाविधान — सुरक्षा के उपाय
177. रात्रिदोष — जो अपराध रात्रि में किया गया हो
178 लब्धप्रशमन — जीते हुए राज्य की सुरक्षा
179. वैदहक व्यंजन — व्यापारी के वेश में रहने वाला गुप्तचर
180. वैधरण — सुरक्षा के लिए कर, क्षतिपूर्णकर
181. शून्यपाल — राजा के युद्धभूमि मे चले जाने पर सूनी राजधानी का रक्षक
182. संस्था — विशेष वर्ग के गुप्तचर
183. संचरलक/संचरिन् — भ्रमणार्थी गुप्तचर, सूचना परिवहन
184 संधिच्छेदिका — घर में सेंध लगाने वाली स्त्री
185. सत्र/सत्री/सत्रिन्— छुपने का स्थान
186. सत्राजीविन् — छुपकर आक्रमण करने का स्थान
187. स्पश् — गुप्तचर
188 सर्वत्रग — राजा का वह आदेश-पत्र जिसमें पथिकों की रक्षा के लिए अधिकारियों पर कार्यभार बढाया गया हो
189. शैय्यापाल/ शैय्याग्राहक/ वासागारिक/ वितानाधिप — राजा के निजी प्रकोष्ठ का सुरक्षाधिकारी
190. सेप्तिक — सुषुप्त सेना के ऊपर आक्रमण
191. सौमिक — सीमांत सुरक्षा सेना
192. स्कंधावार — सैनिक शिविर

अस्त्र एवं शस्त्र

पौराणिक काल

193 अंकुश — दो मुंह वाला भाला
194 अंगुलित्राण — बाण संधान के समय इसे अंगुलियों में धारण किया जाता था।
195. अजलिक — बाण (कई नोंक वाला)
196. अंतर्भेदी — बाण, तीखी नोक वाला, जो शरीर को भेद देता था।
197 अय कणयां एक ऐसा यंत्र जिससे गोलियां चलाई जाती थीं।

198. अयोगड़ – लोहे की गोली
199. अर्धचद्र – अर्धचंद्र आकार का बाण-मुख
200 अशीन – विशिष्ट बाण
201. अश्मगदा – एक किस्म की तलवार, जो बाण कोश में रखी जाती थी।
202. आग्नेयास्त्र – एक दिव्यास्त्र, जिससे आग लग जाती थी।
203. इषीकास्त्र – यह सरकण्डे का बनता था।
204 इषु – दूर तक मार करने वाला बाण
205. एकघातिनी – एक विशिष्ट शक्ति
206. कणय – लौहनिर्मित हल्का भाला। इसे धनुष द्वारा भी चलाया जाता था।
207. कचग्रहक्षेप – यह एक ऐसा हथियार था जिससे शत्रु के सिर के बालों से पकड़कर जोर से पटकी दी जा सकती थी।
208. कुपण – लौहनिर्मित भाला, जिसे केवल फेंककर चलाया जाता था
209 कुन्त – बहुत हल्का भाला
210. क्षरण – तेज धार वाला बाण
211 गदा – चार हाथ लंबा, भारी सिरे वाला छोटे-छोटे तीरयुक्त
212. गोशीर्ष – लकड़ी के बेंट वाला एक सुंदर बरछा। आकार तिकोना।
213. चक्राश्म – लकडी का यंत्र, जिससे दूर-दूर तक पत्थर फेंके जाते थे।
214. जिहम्यग – एक ऐसा बाण जिसकी कहीं पे निगाहें, कहीं पे निशाना।
215. तलत्र – दस्ताना
216. तलवार – इसे असि भी कहते हैं।
217. तोमर – लकड़ी की बेंट वाला तीन हाथ लंबा लौहनिर्मित, मोटे सिरे वाला हथियार। सिरे पर गुच्छों के आकार में जंजीरें होती थीं।
218. त्रिशूल – तीन फलों वाला भाला
219 नाराच – इसके पांच पंख होते थे। यह ठोस लोहे का होता था
220. नालीक – छोटी-सी नली में रखकर चलाया जाने वाला बाण
221. निस्त्रिंश – एक छोटी तलवार
222. पट्टिश – बडे आकार का भाला। इसे दुधारा होना बताया जाता है।
223. परशु – एक प्रकार की कुल्हाड़ी
224. परिघ – गदा का एक रूप
225. पाश – एक हाथ चौडा[1], इससे किसी को काटा, बांधा जा सकता था।

---

[1] अग्निपुराण

226. प्रस्वाप – इस अस्त्र से एक प्रकार की गैस निकलती थी, जिसके प्रभाव से सैनिक सो जाते थे।

227 प्रास – सात हाथ लंबी बास की छड पर लगा लोहे की नोक वाला बरछा।

228. भिन्दिपाल – एक टेढा-मेढ़ा डंड, सिर झुका हुआ और इसे तीन बार खास प्रकार से घुमाकर शत्रु की टांगों पर मारा जाता था।

229. मुग्दर – हथौड़े जैसा भयावह वज़न का एक अस्त्र जिसे फेककर और किसी विशिष्ट यंत्र द्वारा तेजी से चलाया जाता था।

230. यष्टि – भारी सिरे वाला मोटा डंडा।

231 लगुड़ – दांत जैसी शक्ल वाला दो हाथ का लंबा डंडा।

232. वरुथ – शत्रु से बचने के लिए इससे सारा रथ ढका जा सकता था।

233. शक्ति – दो हाथ लंबा, तीखी धार, फेंककर या विशिष्ट यंत्र द्वारा प्रक्षेपण, सामान्यतः तिरछा मारा जाता था। इसकी मार से शत्रु का शरीर क्षत-विक्षत हो जाता था। यह लोहे की घण्टीयुक्त होता था।[1]

234. शतघ्नी – लौहनिर्मित मुग्दर जैसी, चार हाथ लंबी, इसे अक्सर किले के परकोटों पर स्थापित किया जाता था। एक बार चलने पर सौ से अधिक व्यक्तियो का संहार कर सकता था।

235. शूल – बरछी का एक प्रकार

236. हल – इसे बलराम का अस्त्र कहा गया है। इसे शक्तिशाली हाथ ही उठा सकते थे। इसकी मार से बचना असंभव था।

237. स्थूणा – घनी गांठयुक्त एक सीधा छह फुट लंबा

दिव्यास्त्र

238. अग्निबाण – इससे आग लग जाती थी।

239. आथर्वण अस्त्र – यह परशुराम को प्राप्त था।

240. कोबेर अस्त्र – कुबेर का अस्त्र। यह एक साथ सैकड़ों लोगों का संहार कर सकता था।

241 पर्जन्यास्त्र – यह वर्षा कर सकता था।

242. पर्वतास्त्र – इसके चलाये जाने से यह युद्धभूमि में पहाड़ जैसा अवरोध खड़ा कर सकता था।

---

[1] महाभारत

243 वायव्यास्त्र — इसके प्रयोग से तेज-आंधी चलने लगती थी।
244 पाशुपत अस्त्र — शिवजी का मंत्रयुक्त अस्त्र
245 सम्मोहन अस्त्र — इससे शत्रु सेना को सम्मोहित किया जाता था।
246 इन्द्रास्त्र — यह एक प्रकार का वज्र होता था।

पाषाणकाल अस्त्र

इस युग में हथियारों के लिए निम्न पत्थरों का प्रयोग होता था–

247. स्फटिक — बिल्लौरी
248. पारदर्शी स्फटिक — जो रंगहीन होता था
249 रवेदार स्फटिक — बिल्लौरी
250. सुलेमानी पत्थर — पत्थर
251. मणि — मणियों वाला या रत्नयुक्त पत्थर

सिंधु सभ्यताकालीन शस्त्रास्त्र

252. पत्ती के आकार वाले चौड़े धारदार हथियार — इनका आकार चौडा एवं लंबा होता था। ऐसे चाकू भी प्राप्त हुए हैं जिनके एक सिरे पर छेद है और दूसरे सिरे पर भी छेद है। यह दोतरफा धार वाले प्रतीत होते हैं।
253. पत्ती के मुड़े आकार वाले धारदार हथियार — इसका एक सिरा मुडा हुआ होता था, शेष धारयुक्त था। इनमें जो हथियार पाये गए हैं वे सभी टूटे हुए हैं।
254. तिकोने और मुड़े कोने वाले हथियार — इनका ऊपरी भाग मोटा होता था जबकि एक हिस्सा नुकीला और तेज धारवाला।
255. संकरे व सीधे हथियार — एक ओर मोटाई लिए हुए ये एकदम संकरे एक नोक वाले होते थे।
256. दोहरे मुडे छुरे — तेज धारवाले छुरे
257. छुरे और भाले का सिर — छुरेनुमा भाला
258. संकरी, दोधारी बरछी — ऊपर के सिरे से नीचे की ओर संकरी और नुकीली होती चली गई। इनमें दोधारी बरछियां भी हैं।

259. चौड़े छुरे – चौड़े सिर से आगे की ओर धार वाले होते हुए लंबे छुरे

260 कुल्हाड़ियां – वर्तमान में प्रचलित कुल्हाडियों के सदृश ही।

261. चौड़े फल वाली कुल्हाड़ी – इसका फल चौड़ा एवं नुकीला होता था। लकड़ी का बेंटा लगाकर इसके अनेक उपयोग थे।

262. कुदाली – वर्तमान कुदाली के सदृश ही।

263 ढालें और शिरस्त्राण – हड़प्पा में पीतल की विविध प्रकार की ढालें और शिरस्त्राण से मिलती-जुलती चौड़ी और मुड़ी हुई पत्तियां मिली हैं।

वैदिककालीन शस्त्रास्त्र

264. अरमुख – दांतेदार मुंहवाला तीर

265. क्षुरप – तीखी धारवाली पत्ती के मुंह वाला तीर

266. सूचीमुख – सूई की नोंकवाला तिकोना तीर

267. भल्ल – दो मुहानों पर भाले की नोक वाला तीर

268. अर्धचंद्र – आधे चंद्रमा की तरह दो तीखी नोकदार पत्तियों वाला तीर

269. गोपुच्छ – गाय की पूंछ की तरह तीखी बहुधारों वाला गोलाकार तीर

270. वत्सदंत – बैल के दांतों जैसा तीर

271 द्विभल्ल – दो ओर से नोकदार तीर

272. कर्णिक – फूल के उद्‌गम स्थान जैसा तीर

273. कक्तुन्द – अट्टहास करता हुआ तीर

274. संधान – धनुर्वेद में संधान की विशिष्ट स्थितियां और क्रियाएं स्पष्ट हैं। दूसरी ओर विशिष्ट संधान के साथ शरीर की विभिन्न मुद्राओं और स्थितियों को लेकर भी निर्देश किए गए हैं। विभिन्न मुद्राएं हैं–

1. विशम्पद
2 प्रत्याबिध
3 वैशाख
4. सम्पाद
5 अबिध
6. ददुक्रम
7. पद्‌मासन
8. गरुड़कर्म

275. धनुर्वेद में तलवार – 1. निस्त्रिंश – घातक प्रहार
2 विध्वंस उरावली आकृति

	3. विजय	– युद्ध में विजयिनी
	4 तीक्ष्णधार	– तीखी धार
	5. श्रीगर्भ	– समृद्धि का प्रतीक
	6. दुरासद	– दूरगामी मारक क्षमता
	7. धर्ममूल	– धर्मरक्षार्थ धारण की जाती थी
	8. खंग	– शक्तिशाली प्रहार
276 धनुष की निर्माण-सामग्री	– 1. रत्तम	– बांस
	2. ताल	– खजूर
	3. दर	– लकड़ी
	4. शृंग	– सींग
	5. धातु	– धातु
	6. स्नायु	– डोरी

ईसा–पूर्व के अस्त्रास्त्र

धनुष के प्रकार–

277. शङ्खुण – लकड़ी से बनाया जाता था।

278. कमुर्क – ताल (खजूर) से बनाया जाता था। इसका प्रयोग सामान्यत: सारथी करते थे।

279. चाप और कोदंड – चाप नामक लकड़ी से बना होता था।

280. शृंग – इसका निर्माण शृंग (सींग) से होता था।

281. बाण – विशिष्ट तीर को बाण कहा जाता था।

282. सायक – शिवजी का तीर। कहा जाता है कि जब शिवजी अपने धनु-विशेष पिनाक का उपयोग करते थे, तब उससे सायक ही चलाया करते थे।

283. अशुग्र – भयावह तीर। वायु वेग से जाकर यह हाथी का मस्तक भेदता हुआ पार निकल जाता था।

284. नाराच – भयानक तीर

भालों के प्रकार–

285. कुंट – यह बहुत पतला और चिकना होता था। इसके नुकीले, तीखे मुंह पर पीछे की ओर एक पत्ते जैसा चौड़ा आकार होता था।

286. प्रस — नुकीला मुंह तथा कुंट की भांति पतला, दुधारी।

287. मल्ल — इसका डंडा बहुत भारी, फल चौड़ा-नुकीला और दुधारी

288. शूल — कंटे की तरह गोला और चौकोरपन इसकी प्रमुख विशेषता है।

मुगलकालीन शस्त्रास्त्र

289 तीर–कमान — धनुषबाण

290. फरसे, भाले, अंकुश —
1. तरंगलैह — औसतन 4 फुट के इस फरसे में अर्धचंद्राकार फल होता था
2. जगनोल — चौड़े फल वाला फरसा
3. सादा — सादा किस्म का फरसा, इसका फल गोलाई लिए हुए था।
4. नेज़ा — भाला
5. बल्लम — भाला
6. बरछा — भाला
7. साक — भाला
8. भाला — भाला

291. तलवार —
1 मोतिया — इसके फल पर छेद होते थे।
2. तलवार-ए-अकबरी — इसका फल बहुत लोचदार, पतला और तेजधार वाला होता था।
3. सकेला — तलवार-ए-अकबरी। इसकी मूठ अलग प्रकार की होती है।
4. शमशीर — एक तलवार। इसका फल थोड़ा मुड़ा हुआ होता है।
5. ताजशाही — तिहरी धारदार तलवार
6. सुल्तानशाही — दोहरी धारदार और नोक वाले हिस्से की ओर लगी तलवार
7. अलेमानी — इकबरी धारदार तलवार
8. तेगा — चौड़े मोहाने वाली तलवार
9. जुल्फकार — आरे जैसे दांतेदार नोक वाली दुधारी तलवार

292. खंजर — छुरे का एक प्रकार

293. कटार — छुरे का एक प्रकार

294. जामाधर — ऐसी कटारें जो इकहरी, दोहरी, तिहरी धार वाली हो सकती थी। अन्य प्रकार हैं–

1. गुप्ती — सीधी, पतली और नुकीली या मुडी हुई।
2. खंजर — टेढ़ा, दोहरी धार वाले, इकहरी धारदार, दातेदार
3. फूलकटार — इसका अपभ्रंश फुलैरी कटार, मूठ वाला हिस्सा फूल की तरह बना होता है। दोधारी होती थी।

295. बारूदी हथियार — (क) तोप

(ख) बंदूक–

1. चकमकी
2. तोड़ेदार
3. तुफंग-ए-फिरंगी
4. जम्बर्क
5. धमाका
6. बरा
7. साखीतुफग
8. गजनाल

296. कवच — 1. जिहर-बख्तर
2. कलाईबंद
3. सीने व पीठ पर कवच
4. जमा-ए-फतह
5. जैबह
6. अंगरखा
7. कमाल

मराठाकालीन शस्त्रास्त्र

297. तलवार — 1. खांडा — फल चौड़ा, सीधा एवं दुधारी, निचला हिस्सा केले की तरह होता है।

2. पट्टा — सीधी, पतली एवं दुधारी तलवार। इसमें हत्थे के अतिरिक्त पंजे पर एक किस्म का दस्ताना भी जड़ा रहता है।

298. तीर-कमान — धनुष-बाण

299. भाले — 1. एक भाले की नोंक तिहरी धारयुक्त
2. नोक पंचकोनी, क्रमश. पीछे की ओर चौड़ा
3. नोंक तिकोनी और लंबी

300. बिछुआ — एक सीधा, किंतु विशिष्ट प्रकार का छुरा जो हत्थे की ओर संकरा होता गया।

301. भिड़चिर — इसे मारू भी कहते हैं। यह हिरन, बारहसिंगे और भैंसे के सींग से बनता था। किनारे तेज धारदार

302. मारुदो — भिड़चिर के समान

303. खड्ग — इसका फल एक ओर निकला हुआ होता था और एक ओर डंडे की सीध में ही सिधाई में फल चला जाता था। नोक एक ओर से ढाल वाली और दूसरी ओर से सीधी ही होती थी। इसकी अनेक किस्में थीं।

304. बाघनख — 1. दस्ताने में सलीके से तराशे गए शेर के नाखून। इन्हे इस प्रकार से जड़ा जाता था ताकि उगलियों का दबाव पड़ सके।
2. एक डंडी पर शेर के तीन नाखून (मुड़े हुए) लगे रहते थे। नाखून लंबे होते थे। डंडी के एक सिरे पर डोरी लगी रहती थी जिसे सैनिक घुमाते थे।
3. डंडी चौड़ी होती थी और इसमें तीन से अधिक शेर के नाखून होते थे। डंडे के दोनों किनारों पर दो छल्ले लगे रहते थे जिसमें अंगूठा और तर्जनी फंस जाया करती थी।

305. गुर्री — इसका पिछला हिस्सा चमड़े या डोर वाला होता था। एक छोटी किस्म का भाला और फरसा दोनो एकसाथ होता था।

306. फरसा — यह विशेष मराठा फरसा कुल्हाड़ी जैसा होता था। इसके फल की चौड़ाई कुल्हाड़ी से चारगुना अधिक होती है।

307. किर्च — बहुत हद तक सीधी तलवार, दो धार, हत्थे की ओर जाता हुआ फल हल्की चौड़ाई भी लिए हुए होता था।

308. कट्टा — एक किस्म की कटार, जो बहुत छोटी, मुड़ी हुई तलवार जैसी होती थी।

309. बरछा — विशिष्ट किस्म का भाला।'

राजपूताना अस्त्रशस्त्र

310. तीर-कमान — धनुष-बाण। इसके अनेक प्रकार थे।
311. गुलतीर — यह तीर न होकर वस्तुस्थिति में नोक के स्थान पर एक किस्म का पत्थर जैसा हिस्सा होता था।
312. बिछुआ — मराठा बिछुआ की भांति, अंतर मात्र सजावट का था
313. मारुढलवा — मराठा भिड़चिर जैसा है
314. गजधाव — अंकुश का एक नाम
315. पंजा — एक किस्म का दस्ताना
316. फरसा — समूचा लोहे का बना होता था। अन्य फरसों की भांति।
317. नेणा — फरसे का प्रकार
318. भाला — अन्य भालों की भांति, केवल लंबाई में अंतर
319. कुलंग — 1. धार वाले भाले की नोक को कुल्हाड़ी की तरह हत्थे के ऊपरी हिस्से पर जड़े हुए।
 2. गुप्तीदार कुलंग, जिसमें गुप्ती छिपी रहती थी।
320. टाबर — कुल्हाड़ी
321. परशु — एक प्रकार का फरसा
322. कटार — सभी प्रकार की कटार

सिखों के शस्त्रास्त्र

323. तीर-कमान — धनुष-बाण
324. तलवार — 1. हन्ता — एक किस्म की तलवार, जिसका फल चौड़ा होता था।
 2. खंग — यह तलवार म्यान के बिना धारण की जाती थी।
 3. खांडा — खांडे के समान चौड़े फल वाली तलवार
 4. तेग — एक किस्म की तलवार
 5. खड्ग — खांडे के समान चौड़े फल वाली तलवार
 6. कृपाण — छोटी तलवार
 7. किर्च — सीधी, पतली और तीखी तलवार
 8. पट्टा — सादा, मुड़ी हुई और सामान्यत: उपयोग में आने वाली तलवार।

325. चक्र — 1. सादा चक्र–गोलाई में लोहे से बना हुआ एक ऐसा छल्ला जिसका व्यास 6.7 इंच का हुआ करता था। इसका बाहरी हिस्सा तीखी धार वाला होता था।
2. चक्र कयवदार–इसकी धार पर तीखे, नुकीले दांत हुआ करते थे।

326. बारूदी अस्त्र — 1. तोपखाना-ए-खास — इस तोपखाने में विशालाकार तोपें होती थीं। इनके साथ बंदूक वाले सैनिक होते थे।
2. तोपखाना खुर्द — साधारण हल्की तोपें हल्की बंदूक टुकड़ी।
3. तोपखाना अस्पी — इसके अंतर्गत बंदूकबाजों की टुकड़ी होती थी।
4. तोपखाना कलां — विशालाकार तोप का विभाग
5. तोपखाना जिन्सी — मिला-जुला तोपखाना
6 तोपखाना गंवई — बैलगाड़ी वाला तोपखाना
7. तोपखाना शुलारी — ऊंटों पर सवार बंदूकबाजों की टुकडी
8. तोपखाना हलाघ — दूरगामी मारक क्षमता वाली टुकड़ी
9. गबराह — अपने समय की खतरनाक तोप

327. छोटे बारूदी शस्त्र — 1. तमंचा — पिस्तौल
2. रोबच्चा — छोटे मुंह वाली चौड़ी बंदूक
3. शेरदहां — एक छोटी तोप
4. फतेहजंग — एक खास किस्म की छोटी तोप
5. तोप भंगिया — इसे जमजमा भी कहते हैं (बड़ी तोप)
6. लैलामंजनू — एक विशिष्ट छोटी तोप
7. हथनाल — बंदूक
8. गजनाल — बंदूक

संदर्भ ग्रंथ

1. ऋग्वेद
2. सामवेद
3. यजुर्वेद
4. अथर्ववेद
5. रामायण
6. महाभारत
7 ब्रह्मपुराण
8. पद्मपुराण
9. विष्णुपुराण
10. वायुपुराण
11. भागवतपुराण
12. नारदीय पुराण
13. मार्कण्डेयपुराण
14. आग्नेयपुराण
15. भविष्यपुराण
16. ब्रह्मवैवर्तपुराण
17. लिंगपुराण
18. वराहपुराण
19. स्कंधपुराण
20. वामनपुराण
21 कूर्मपुराण
22. गरुड़पुराण
23. मत्स्यपुराण
24. ब्रह्माण्डपुराण
25. मनु स्मृति
26. काव्यायन स्मृति
27. गौतम स्मृति
28. देवल स्मृति
29. नारद स्मृति
30. पराशर स्मृति
31. बृहस्पति स्मृति
32. याज्ञवल्क्य स्मृति
33. व्यास स्मृति
34. शंख स्मृति
35 ऐतरेय ब्राह्मण
36. तैत्तिरीय ब्राह्मण
37. शतपथ ब्राह्मण
38. आपस्तम्ब गृह्यसूत्र
39. आश्वलायन गृह्यसूत्र
40. गोभिल गृह्यसूत्र
41. पारस्कर गृह्यसूत्र
42. अमरकोश
43. संस्कार रत्नमाला
44 अर्थशास्त्र
45. कामसूत्र
46. अष्टाध्यायी

संदर्भ पुस्तकें

1.	सत्यकेतु विद्यालंकार	मौर्य साम्राज्य का इतिहास
2.	सत्यकेतु विद्यालंकार	प्राचीन भारत की शासन–संस्थाएं और राजनीतिक विचार
3.	बी.एन. लूनिया	प्राचीन भारतीय संस्कृति
4.	बी.एन लूनिया	भारतीय इतिहास तथा संस्कृति का विकास
5.	वासुदेव उपाध्याय	गुप्त साम्राज्य का इतिहास
6.	वासुदेव उपाध्याय	प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मंदिर
7.	वासुदेव उपाध्याय	भारतीय सिक्के
8.	वासुदेव उपाध्याय	प्राचीन भारत अभिलेखो का अध्ययन
9.	भगवतशरण उपाध्याय	गुप्तों का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास
10.	डॉ. पांडुरंगवामन काणे	धर्मशास्त्र का इतिहास (खण्ड एक से पांच)
11.	आर.एस. त्रिपाठी	कन्नौज का इतिहास
12.	डॉ. जयशकर मिश्र	प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास
13	बलदेव उपाध्याय	भारतीय दर्शन
14.	शैलेन्द्र शर्मा	प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म एवं दर्शन
15.	विद्याधर महाजन	प्राचीन भारत का इतिहास
16.	डॉ. रोमिला थापर	प्राचीन भारत का इतिहास
17.	आर के. मुखर्जी	हर्ष
18.	गौरीशंकर चटर्जी	हर्षवर्धन
19	वासुदेव शंरण अग्रवाल	पाणिनिकालीन भारत
20.	आचार्य बृहस्पति	मुसलमान और भारतीय संगीत
21.	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	हिंदी साहित्य का इतिहास
22.	विशुद्धानंद पाठक	उत्तरी भारत का राजनीतिक इतिहास
23.	मुहम्मद मलिक	वैष्णव भक्ति आंदोलन का अध्ययन
24.	इरफान हबीब	मध्यकालीन भारत (अनेक खण्ड)
25.	मोतीचंद्र	सार्थवाह

देवीदत्त शुक्ल	प्राचीन भारत में जनतंत्र
आचार्य दीपंकर	कौटिल्यकालीन भारत
भगवती प्रसाद पांथरी	अशोक
भगवती प्रसाद पांथरी	मौर्य साम्राज्य का सांस्कृतिक इतिहास
रामप्रकाश ओझा	उत्तरी भारतीय अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन (ई.पू. 232 से 161 ई.)
चंद्रभान पाण्डेय	आंध्र सातवाहन साम्राज्य का इतिहास
प्रशात कुमार जायसवाल	शककालीन भारत
वासुदेव विष्णु मिराशी	सातवाहनों और पश्चिम क्षत्रपों का इतिहास और अभिलेख
परमेश्वरी लाल गुप्त	गुप्त साम्राज्य
शिवनंदन मिश्र	गुप्तकालीन अभिलेखों से ज्ञात तत्कालीन सामाजिक एवं आर्थिक दशा
यदुनंदन कपूर	हर्ष
वासुदेव विष्णु मिराशी	वाकाटक राजवंश का इतिहास तथा अभिलेख
बलराम श्रीवास्तव	पल्लव इतिहास और उसकी आधार सामग्री
शिवदत्त ज्ञानी	भारतीय संस्कृति
हरिदत्त वेदालंकार	भारत का सांस्कृतिक इतिहास
डॉ रमाशंकर त्रिपाठी	प्राचीन भारत का इतिहास
डॉ ईश्वरी प्रसाद	भारत का इतिहास (भाग एक एवं दो)
विमलचंद पाण्डेय	प्राचीन भारत का इतिहास (250 ई.–1200 ई.)
एल.पी. शर्मा	आधुनिक भारत का इतिहास
डॉ सत्यदेव त्रिवेदी	प्राचीन भारत में गुप्तचर सेवा
डॉ आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव	मध्यकालीन भारत
पं हरिकृष्ण रतूड़ी	गढ़वाल का इतिहास
भजन सिंह	आर्यों का आदि निवास मध्य हिमालय
डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय	अनुष्टुप

Ref. Book 's

1.	Aggarwal, V.S.	Indian Art, Vol. I
2	Aggarwal, D.P.	Essays in Indian Protohistory
3	Aggarwal, D.P.	Archaeology of India
4.	Altekar, A.S.	State and Government in Ancient India
5.	Altekar, A.S.	The Rashtrakutas and their times
6.	Ahamed, M.B.	The Administration of Justice in Medieval India
7	Basham, A.L.	The Wonder that was India
8	Basham, A.L.	A Cultural History of India
9	Bhattacharya, D.K.	Old stone age tools and their techniques
10.	Banerjee, J.M.	A History of Firoz Shah Tughlaq
11.	Bhandarkar, R.G.	Vaisriavism, Saivism and other Minor seets
12.	Bhattacharya, N.N.	Ancient India Rituals and their social content
13.	Bhattacharya, N.N.	Jain Philosophy : Historical out line
14.	Ghosh, A.	The city in early Historical India
15.	Habib Mohammad	Sultan Mohmud of Ghazni
16.	Jha, D.N.	Ancient India : An Introductory outline
17.	Kasambi, D.D.	An Introduction to the study of Indian History
18.	Kasambi, D.D.	Myth and Reality
19.	Kasambi, D.D.	The culture and civilization of Ancient India
20.	Kasamhi, D.D.	Indian Numismatics
21.	Keith, A.B.	History of Sanskrit Literature
22	Lal K.S	History of the Khaljis

Majumdar, R.C.	The classical accounts of India
Majumdar, R.C.	Corporate life in Ancient India
Pathak, J.S.	Ancient Historians of India
Pandey, A.B.	The first Afghan Empire in India
Prasad, Ishwari	History of qaraumah Turks in India
Prasad, Ishwari	Life and time of Humayun
Raychaudhure, H.C.	Political History of Ancient India
Sastri, K.A. Nilakanta	The Cholas
Sastri, K.A. Nilakanta	The History of South India
Sastri, K.A. Nilakanta	Development of Religion in South India
Sastri, K.A. Nilakanta	The age of the Nandas and Mauryas
Sastri, K.A. Nilakanta	A comprehensive History of India, Vol. II
Sharma, D.	Early Chauhan Dynasites
Sharma, R.S.	Indian Feudalism
Sharma, R.S.	Social change in early Medieva India (A.D. 300-1200)
Sharma, R.S. and Jha, V.N.	Indian Society : Historical Probings
Sharma, R.S.	Aspects of Political, Ideas and Institutions in Ancient India
Sharma, R.S.	Shudras in Ancient India
Sharma, R.S.	Perspective in Social and Economic History of Early India
Sharma, R.S.	Material Culture and Social Formation in Ancient India
Sharma, R.S.	Material Background of the origin of Buddhism
Sharma, R.S.	Ancient India
Srivastav, A.K.	Khalji Sultans in Rajasthan
Smit, V.A.	Early History of India
Thapar, Romila	Ancient Indian Social History
Thapar, Romila	Ashok and the Decline of the Mauryas